मेटिश्रो फालकोन

लेखक—प्रास्पर मैरीमी

पोर्टो वेचियो से निकल कर और उत्तर पश्चिम की ओर मुड़ कर जब आप द्वीप के भीतर जाने लगेंगे, तो आप को एक स्थान ऐसा मिलेगा, जहाँ पृथ्वी सुन्दर, नुकीली और उभरी हुई दिखलाई पड़ेगी। मोड़दार मार्गों पर तीन घंटे चलने के बाद आप को बड़ी-बड़ी चट्टानें रास्ता रोके हुये मिलेंगी। कहीं-कहीं घाटियों द्वारा, आप ये मार्ग कटे और विभाजित भी पायँगे। इस प्रकार के मार्ग को तय करने पर, आप एक ऐसे विशाल और विस्तृत देश की सीमा पर पहुँचेंगे, जहाँ छोटे-छोटे वृक्ष आप की दृष्टि को आकृष्ट कर लेंगे। यह देश माक्विस के नाम से पुकारा जाता है। माक्विस कारसिका-निवासी गड़रियों का अथवा पुलिस द्वारा सताये हुये किसी भी व्यक्ति का निवास-स्थान है। आपको यह बात जान लेनी चाहिये कि कारसिका-निवासी किसान, खेतों पर खाद डालने की तकलीफ़ से बचने के लिये, जंगल के एक हिस्से को जला देते हैं। यदि आग आवश्यक स्थान से अधिक दूर तक फैल जाती है, तो इस बात का उन्हें कुछ अफ़सोस ज़रूर होता है; परन्तु कुछ भी हुआ करे, उन्हें इस ज़मीन पर खेती करने से, जो उस पर लगे हुये वृक्षों की राख से अधिक उत्पादक हो गई है, अच्छी फ़सल पाने का इतमीनान रहता है। अन्न एकत्र कर लेने के बाद, वे उसके पौधों अथवा घास को वहीं पड़ा रहने देते हैं। इसका कारण केवल यही है कि वे उनके जमा करने की तकलीफ़ को गवारा नहीं करना चाहते। पौधों की जड़ें अगामी साल की शीत ऋतु तक अधिक

गई। वह खड़ा हो गया और जिस ओर मैदान से आवाज़ आई थी, उसी ओर मुड़ कर देखने लगा। एक के बाद एक कई गोलियों की आवाज़ हुई। कभी देर से, कभी जल्द और निकटाति-निकट आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। अन्त में उसे मैदान के उस रास्ते पर एक आदमी दिखलाई पड़ा, जो मेटिओ के मकान की तरफ़ ही आता था। उसके सिर पर, पहाड़ पर रहने वाले लोगों के समान एक नोकदार टोपी थी। उसकी लम्बी डाढ़ी दूर ही से दिखाई पड़ती थी। उसके कपड़े फटे हुये थे। वह बड़ी कठिनाई से बन्दूक के सहारे चल रहा था। उसकी जाँघ पर अभी-अभी एक गोली लगी थी।

वह मनुष्य बाग़ी था। जिस समय रात को बारूद लाने के लिये वह शहर जा रहा था, उस समय उसकी कारसिका की एक फ़ौज की छोटी टुकड़ी के साथ मुठभेड़ हो गई। आत्म-रक्षा की प्रबल चेष्टा करने के बाद, वह सफलता-पूर्वक पीछे हटा। उसका ज़ोरों के साथ पीछा किया गया। प्रत्येक चट्टान से उस पर गोली चलाई जाती थी; परन्तु वह सैनिकों से अधिक आगे न बढ़ पाया। उसके ज़ख्म ने, पकड़े जाने के पूर्व, उसका माक्विस पहुँचना असम्भव कर दिया।

वह फारचुनेटो के पास आया और बोला—"तुम मेटिओ फालकोन के लड़के हो न?"

"हाँ।"

"मैं जियानैटो सैनपायरो हूँ। पीली वर्दी वाले मेरा पीछा कर रहे हैं। मुझे छिपा लो, क्योंकि अब मैं आगे नहीं जा सकता।"

"अगर मैं बिना पिताजी की आज्ञा के तुम को छिपा लूँ, तो वे मुझे क्या कहेंगे?"

"वे यही कहेंगे कि तुमने अच्छा किया।"

"कौन जाने?"

"मुझे जल्द छिपाओ; वे लोग आ रहे हैं।"

गई। वह खड़ा हो गया और जिस ओर मैदान से आवाज़ आई थी, उसी ओर मुड़ कर देखने लगा। एक के बाद एक कई गोलियों की आवाज़ हुई। कभी देर से, कभी जल्द और निकटातिनिकट आवाज सुनाई पड़ रही थी। अन्त में उसे मैदान के उस रास्ते पर एक आदमी दिखलाई पड़ा, जो मेटिओ के मकान की तरफ़ ही आता था। उसके सिर पर, पहाड़ पर रहने वाले लोगों के समान एक नोकदार टोपी थी। उसकी लम्बी डाढ़ी दूर ही से दिखाई पड़ती थी। उसके कपड़े फटे हुये थे। वह बड़ी कठिनाई से बन्दूक के सहारे चल रहा था। उसकी जाँघ पर अभी-अभी एक गोली लगी थी।

वह मनुष्य बाग़ी था। जिस समय रात को बारूद लाने के लिये वह शहर जा रहा था, उस समय उसकी कारसिका की एक फौज़ की छोटी टुकड़ी के साथ मुठभेड़ हो गई। आत्म-रक्षा की प्रबल चेष्टा करने के बाद, वह सफलता-पूर्वक पीछे हटा। उसका जोरों के साथ पीछा किया गया। प्रत्येक चट्टान से उस पर गोली चलाई जाती थी; परन्तु वह सैनिकों से अधिक आगे न बढ़ पाया। उसके ज़ख्म ने, पकड़े जाने के पूर्व, उसका माक्विस पहुँचना असम्भव कर दिया।

वह फारचुनेटो के पास आया और बोला—"तुम मेटिओ फालकोन के लड़के हो न?"

"हाँ।"

"मैं जियानैटो सैनपायरो हूँ। पीली वर्दी वाले मेरा पीछा कर रहे हैं। मुझे छिपा लो, क्योंकि अब मैं आगे नहीं जा सकता।"

"अगर मैं बिना पिताजी की आज्ञा के तुम को छिपा लूँ, तो वे मुझे क्या कहेंगे?"

"वे यही कहेंगे कि तुमने अच्छा किया।"

"कौन जाने?"

"मुझे जल्द छिपाओ; वे लोग आ रहे हैं।"

हो जावे कि काफ़ी समय से इस घास को किसी ने स्पर्श तक नहीं किया है। इसके बाद उसको मकान के पास, मार्ग पर खून के दाग़ दिखलाई पड़े। उसने बड़ी सावधानी से उन्हें धूल डालकर ढँक दिया। इतना कर लेने के बाद वह बिल्कुल निश्चिन्त भाव से बैठ कर फिर धूप तापने लगा।

कुछ मिनट के बाद, छः मनुष्य भूरे रंग की वर्दी पहिने हुये, जिन पर पीले कालर लगे हुये थे, मेटिओ के मकान के सामने आ गये। एक सहायक मेजर इन लोगों पर शासन कर रहा था। सहायक मेजर, मेटिओ का दूर का रिश्तेदार भी था। यह बात प्रसिद्ध है कि कारसिका में दूर तक की रिश्तेदारी भी मानी जाती है। उसका नाम टिओडोरो गम्बा था। वह उत्साही पुरुष था। डाकू लोग उससे बहुत डरते थे। उसने बहुत से डाकुओं को सर किया था।

"सलाम, छोटे भाई," फारचुनेटो से मिल कर उसने कहा—"तुम तो अब काफ़ी बड़े हो गये हो! क्या तुमने यहाँ से अभी किसी आदमी को जाते हुये देखा है?"

"हाँ, भाईजी, अभी तक तो मैं आपके बराबर बड़ा नहीं हुआ," बालक ने सरलतापूर्वक मुस्कराते हुये जवाब दिया।

"समय आने पर तुम भी मेरे समान बड़े हो जाओगे; लेकिन मुझे यह तो बतलाओ कि तुमने यहाँ से किसी आदमी को जाते हुये नहीं देखा क्या?"

"क्या मैंने किसी आदमी को जाते हुये देखा है?"

"हाँ, एक आदमी लम्बी टोपी पहिने हुए था, जिसकी सदरी पर लाल पीले बेल बूटे बने हुये थे।"

"एक आदमी लम्बी टोपी पहिने हुए था और जिसकी सदरी पर लाल पीले बेल बूटे बने हुये थे।"

"हाँ, जल्द बतलाओ, लेकिन मेरे सवाल को दोहराओ मत।"

हो जावे कि काफ़ी समय से इस घास को किसी ने स्पर्श तक नहीं किया है। इसके बाद उसको मकान के पास, मार्ग पर खून के दाग़ दिखलाई पड़े। उसने बड़ी सावधानी से उन्हें धूल डालकर ढँक दिया। इतना कर लेने के बाद वह बिल्कुल निश्चिन्त भाव से बैठ कर फिर धूप तापने लगा।

कुछ मिनट के बाद, छः मनुष्य भूरे रंग की वर्दी पहिने हुये, जिन पर पीले कालर लगे हुये थे, मेटिओ के मकान के सामने आ गये। एक सहायक मेजर इन लोगों पर शासन कर रहा था। सहायक मेजर, मेटिओ का दूर का रिश्तेदार भी था। यह बात प्रसिद्ध है कि कारसिका में दूर तक की रिश्तेदारी भी मानी जाती है। उसका नाम टिओडोरो गम्बा था। वह उत्साही पुरुष था। डाकू लोग उससे बहुत डरते थे। उसने बहुत से डाकुओं को सर किया था।

"सलाम, छोटे भाई," फारचुनेटो से मिल कर उसने कहा—"तुम तो अब काफ़ी बड़े हो गये हो! क्या तुमने यहाँ से अभी किसी आदमी को जाते हुये देखा है?"

"हाँ, भाईजी, अभी तक तो मैं आपके बराबर बड़ा नहीं हुआ," बालक ने सरलतापूर्वक मुस्कराते हुये जवाब दिया।

"समय आने पर तुम भी मेरे समान बड़े हो जाओगे; लेकिन मुझे यह तो बतलाओ कि तुमने यहाँ से किसी आदमी को जाते हुये नहीं देखा क्या?"

"क्या मैंने किसी आदमी को जाते हुये देखा है?"

"हाँ, एक आदमी लम्बी टोपी पहिने हुए था, जिसकी सदरी पर लाल पीले बेल बूटे बने हुये थे।"

"एक आदमी लम्बी टोपी पहिने हुए था और जिसकी सदरी पर लाल पीले बेल बूटे बने हुये थे।"

"हाँ, जल्द बतलाओ, लेकिन मेरे सवाल को दोहराओ मत।"

"बदमाश !" उसका कान पकड़ कर सहायक मेजर गम्बा ने कहा, "क्या तुम जानते हो कि अगर मैं चाहूँ, तो तुम्हारी इन बातचीत के तर्ज़ों-तरीक़े को बदल सकता हूँ ? अगर मैं बन्दूक के कुन्दे के बीस आघात तुम पर लगाऊँ, तो तुम सब सही बात अभी बतला दोगे।"

फारचुनेटो मुस्कराता रहा।

"मैं नेटिओ फालकोन का पुत्र हूँ" उसने ज़ोर देकर कहा।

"क्या तुम इस बात को जानते हो, कमसिन बदमाश कि मैं तुम्हें कोर्टे अथवा बस्तिआ को ले जा सकता हूँ ? वहाँ, तुम्हारे पैरों पर बेड़ियाँ पहिना कर, तुमको तहख़ाने के अन्दर घास पर सोने के लिये मैं मज़बूर कर सकता हूँ। अगर तुम मुझको यह न बतलाओगे कि जियानैटो सान पायरो कहाँ गया, तो मैं तुम्हारा सिर कटवा डालूँगा।"

इस हास्यास्पद धमकी को सुन कर वह हँस पड़ा। वह फिर कहने लगा—"मैं नेटिओ फालकोन का पुत्र हूँ।"

"मेजर," एक सैनिक ने ज़ोर से कहा, "हमको नेटिओ से झगड़ा मोल न लेना चाहिये।" यह स्पष्ट दिखलाई पड़ रहा था कि गम्बा घबड़ाया हुआ था। वह अपने उन सैनिकों से धीमे स्वर में कहने लगा जो कि मकान के अन्दर चले गये थे। वहाँ अधिक समय न लगा, क्योंकि कारसिका निवासी की झोपड़ी केवल एक चौरस कमरे जैसी ही होती है। मकान के अन्दर एक टेबिल, कुछ बेंचें, सन्दूकें, घरेलू बरतन और शिकार के शस्त्र-यही उनका सामान रहता है। इसी समय नन्हें फारचुनेटो ने अपनी बिल्ली को थप-थपाया। उसे सैनिकों और अपने भाई की घबराहट से द्वेषपूर्ण आनन्द प्राप्त हो रहा था।

एक सैनिक घास के ढेर के पास आया। उसने बिल्ली को देखा और घास पर लापरवाही से बन्दूक को पटक दिया। वह अपने कंधे हिलाने लगा। उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि वे लोग उपहास-जनक

वह लगभग दस रुपये की थी। उसने इस बात को बड़ी बारीकी से ताड़ लिया कि उसे देख कर नन्हें फारचुनेटो की आँखें चमकने लगीं। घड़ी की चेन को पकड़ कर वह उस घड़ी को हिलाने लगा और बोला —"देखो, बदमाश ! जिस समय यह घड़ी तुम्हारे गले पर पड़ी हुई लटकेगी, उस समय तुमको सचमुच बड़ी खुशी होगी। तुम मोर के समान खूबसूरत बन कर पोर्टो वेचियो की सड़कों पर अकड़ कर घूमोगे। उस समय लोग तुमसे पूछेंगे—'इस वक्त क्या बजा है ?' और तुम उन्हें यह जवाब दोगे, 'मेरी घड़ी को देखो'।"

"जब मैं बड़ा हो जाऊँगा, तब मेरे चाचा, जो एक बड़े अफ़सर हैं, मुझे एक घड़ी देंगे।"

"हाँ, लेकिन तुम्हारे चाचा के लड़के के पास तो एक घड़ी है... सच पूछो तो वह घड़ी भी इसके समान सुन्दर नहीं है...इतने पर भी वह तुमसे बहुत छोटा है।"

बालक ने लम्बी साँस ली।

"अच्छा बतलाओ, छोटे भाई, क्या तुमको यह घड़ी पसन्द है ?"

फारचुनेटो कनखियों से घड़ी की ओर इस प्रकार देखने लगा, जिस प्रकार बिल्ली को समूचा मुर्गी का बच्चा दिखलाये जाने पर, वह उसे सतृष्ण नेत्रों से देखने लगती है। लेकिन बिल्ली की हिम्मत उस पर पंजा मारने की नहीं होती, क्योंकि वह यह समझती है कि उसके साथ मज़ाक किया जा रहा है और वह थोड़ी-थोड़ी देर में निराश-सी होकर अपनी आँखें उधर से इसलिये हटा लेती है कि कहीं वह इस लालच में फँस न जावे। इतना करने पर भी वह बराबर अपने ओठ चाटती रहती है और अपने मालिक से यह कहना चाहती है—'यह कैसा निर्दय मज़ाक है !'

ऐसा प्रतीत होता था कि मेजर गम्बा उसको सचमुच घड़ी देना चाहता है। फारचुनेटो ने उसे लेने के लिये अपना हाथ नहीं बढ़ाया;

प्रयास कर रहे हैं। घास के अन्दर कुछ हिला-डुला नहीं। लड़के
मुख से ज़रा भी सन्देह के भाव प्रदर्शित नहीं हुये।

सहायक मेजर और उसके सैनिक अपने भाग्य को कोसने लगे
वे लोग मैदान की ओर ध्यान-पूर्वक देखने लगे। उनकी भाव-भंगी
ऐसा प्रतीत होता था कि वे लोग जिधर से आये हैं, उसी ओर ल
जाना चाहते हैं। सैनिकों के सरदार को जब इस बात का विश्वास
गया कि फालकोन के पुत्र पर धमकियों का कुछ असर न पड़ेगा, त
उसने उसके साथ प्रेम और लालच का व्यवहार कर, एक अन्ति
प्रयत्न करने का निश्चय किया।

"नन्हें भाई," उसने कहा, "तुम बड़े सतर्क धूर्त जान पड़ते है
तुम बड़ी लम्बी दौड़ लगाते हो; परन्तु तुम मेरे साथ बड़े जोखिम
खेल खेल रहे हो। अगर मुझे अपने भाई मेटिओ को कष्ट देने
भय न होता, तो इस बात का विश्वास रखो कि शैतान, मैं तुम
पकड़ कर अपने साथ ले जाता।"

"क्या खूब!"

"परन्तु जब मेरे भाई लौटेंगे, तब उन्हें मैं यह तमाम कि
सुनाऊँगा। वे तुम्हें इस झूठ बोलने के लिये इतने कोड़े लगायेंगे
तुम्हारे शरीर से खून की धार बह निकलेगी।"

"तुम यह कैसे कह सकते हो?"

"तुम खुद देख लेना...लेकिन सुनो...भले लड़के बन जाओ,
तुमको मैं कुछ दूँगा।"

"भाई, मेरी भी एक बात सुनो। मैं तुमको एक सलाह देता
और वह यह कि अगर तुम यहाँ अधिक देरी करोगे, तो जिया
मालिस्म पहुँच जायगा। यहाँ उसका पता लगाने के लिये फिर तु
अधिक होशियार आदमी की जरूरत पड़ेगी।"

सहायक मेजर ने अपनी जेब से एक चाँदी की घड़ी निकाल

वह लगभग दस रुपये की थी। उसने इस बात को बड़ी बारीकी से ताड़ लिया कि उसे देख कर नन्हें फारचुनेटो की आँखें चमकने लगीं। घड़ी की चेन को पकड़ कर वह उस घड़ी को हिलाने लगा और बोला —"देखो, बदमाश! जिस समय यह घड़ी तुम्हारे गले पर पड़ी हुई लटकेगी, उस समय तुमको सचमुच बड़ी खुशी होगी। तुम मोर के समान खूबसूरत बन कर पोर्टो वेचियो की सड़कों पर अकड़ कर घूमोगे। उस समय लोग तुमसे पूछेंगे—'इस वक्त क्या बजा है?' और तुम उन्हें यह जवाब दोगे, 'मेरी घड़ी को देखो'।"

"जब मैं बड़ा हो जाऊँगा, तब मेरे चाचा, जो एक बड़े अफ़सर हैं, मुझे एक घड़ी देंगे।"

"हाँ, लेकिन तुम्हारे चाचा के लड़के के पास तो एक घड़ी है... सच पूछो तो वह घड़ी भी इसके समान सुन्दर नहीं है...इतने पर भी वह तुमसे बहुत छोटा है।"

बालक ने लम्बी साँस ली।

"अच्छा बतलाओ, छोटे भाई, क्या तुमको यह घड़ी पसन्द है?"

फारचुनेटो कनखियों से घड़ी की ओर इस प्रकार देखने लगा, जिस प्रकार बिल्ली को समूचा मुर्गी का बच्चा दिखलाये जाने पर, वह उसे सतृष्ण नेत्रों से देखने लगती है। लेकिन बिल्ली की हिम्मत उस पर पंजा मारने की नहीं होती, क्योंकि वह यह समझती है कि उसके साथ मज़ाक किया जा रहा है और वह थोड़ी-थोड़ी देर में निराश-सी होकर अपनी आँखें उधर से इसलिये हटा लेती है कि कहीं वह इस लालच में फँस न जावे। इतना करने पर भी वह बराबर अपने ओंठ चाटती रहती है और अपने मालिक से यह कहना चाहती है—'यह कैसा निर्दय मज़ाक है!'

ऐसा प्रतीत होता था कि गेजर गम्बा उसको सचमुच घड़ी देना चाहता है। फारचुनेटो ने उसे लेने के लिये अपना हाथ नहीं बढ़ाया;

परन्तु वह कठोर मुस्कराहट के साथ कहने लगा—"तुम मेरे साथ मज़ाक क्यों कर रहे हो ?"

"भगवान् कसम ! मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ। मुझे सिर्फ़ इतना बतला दो कि जियानैटो कहाँ है, और यह घड़ी तुम्हारी हो गई।"

फारचुनेटो उसकी नज़र बचा कर संदिग्ध भाव से मुस्कराया। इसके बाद अपनी काली आँखें मेजर की आँखों से मिलाते हुये वह इस बात को जानने की कोशिश करने लगा कि उसके शब्दों की सत्यता की झलक उनमें है अथवा नहीं।

"क्या मैं अपने इन फ़ब्बों से हाथ धो लूँगा," मेजर ने ज़ोर से चिल्ला कर कहा, "यदि मैं वादा करने के बाद भी तुमको घड़ी न दूँ ! मेरे ये सब साथी गवाह हैं और मैं किसी बात को, एक बार कह कर, कभी मेट नहीं सकता।"

ऐसा कहता हुआ वह घड़ी को बालक के अधिकाधिक निकट करने लगा। यहाँ तक कि उसने बच्चे के पीले कपोलों को स्पर्श तक कर लिया। बालक के मुख पर लालच का भाव साफ़ झलक रहा था। अतिथि के प्रति आदर भाव से उसकी आत्मा को आनन्द-सा प्रतीत होने लगा। उसका वक्षस्थल जोर से साँस लेने के कारण धक्-धक करने लगा। उसका गला जैसे घुटने लगा। इस समय घड़ी घूम रही थी। उसकी चेन में शिकन आ गई थी। वह कभी-कभी उसकी नाक की नोक को स्पर्श कर जाती थी। निदान् , धीरे-धीरे उसका दाहिना हाथ घड़ी की तरफ़ उठा। उसने अपनी अँगुलियों के अग्रिम भाग से उसे छू लिया। उसका पूरा वज़न उसके हाथ पर आ गया। मेजर चेन के छोर को पकड़े ही रहा। उसका चेहरा नीला पड़ गया...घड़ी के बाहरी भाग पर हाल ही में पालिश चढ़ाया गया था...वह सूरज की रोशनी में अग्नि के समान चमक रहा था। लालच बहुत निकट था।

तनी खुशी हुई है कि मैं तुमको तीन मील तक अपनी पीठ पर ले
ाकर भी नहीं थक सकता। किसी भी तरह, दोस्त, हम लोग तुम्हारे
ेवे, डालियों और तुम्हारे लबादे से एक डोली तैयार करेंगे। इसके
ाद आगे चल कर केमपोली अस्तबल में हम लोगों को घोड़े भी मिल
ायँगे।"

जिस समय सैनिक काम में लगे हुये थे अर्थात् जब कुछ शाहबलूत के वृक्षों की डालियों से एक प्रकार की डोली बना रहे थे और कुछ ज्यानेटो के ज़ख्म को मरहम-पट्टी लगा रहे थे, उसी समय मेटिओ ालकोन और उसकी स्त्री सहसा माक्विस जानेवाले मार्ग के मोड़ पर ेखलाई दिये। स्त्री सामने थी। वह शाहबलूत के फलों से भरे हुये ाहर के बोझ से बहुत झुकी हुई थी। उसका पति केवल एक बन्दूक ाथ में लिये हुये और दूसरी ओर पीठ पर लटकाये हुये चला आ रहा था। अपने शस्त्रों के अलावा किसी अन्य चीज के बोझ को ले जाना, ज़्ज़त के खिलाफ़ समझा जाता था।

सैनिकों को देख कर मेटिओ के हृदय में यह ख्याल हुआ कि वे ोग उसे गिरफ़्तार करने के लिये आये हैं; परन्तु इस विचार का क्या ारण हो सकता है? क्या उस समय मेटिओ का अधिकारियों से कोई िरोध था? बिल्कुल नहीं। उसका काफ़ी मान था। उसको लोग 'भला आदमी' समझते थे; परन्तु वह कारसिका-निवासी और पहाड़ी था। ऐसे बहुत कारसिका-निवासी पहाड़ी हैं, जिनकी स्मृति में कोई न कोई अपराध, गोली का निशाना, कटार का आघात अथवा अन्य कोई ग़ैरक़ानूनी कार्रवाई न भूल जाती हो। मेटिओ की आत्मा अधिकांश अन्यान्य लोगों की अपेक्षा अधिक निर्मल थी। दस वर्ष से उसने किसी व्यक्ति पर बन्दूक नहीं तानी थी; परन्तु इतने पर भी वह चौकन्ना था। आवश्यकता पड़ने पर आत्म-रक्षा के लिये वह बिल्कुल तैयार हो जाता।

"प्यारी," उसने जियूसेपा से कहा, "अपना गट्ठर उतार कर रख दो और तैयार हो जाओ।"

जियूसेपा ने तत्काल उसकी आज्ञा का पालन किया। उसने अपनी पीठ से बन्दूक उतार कर उसे दे दी, क्योंकि इससे उसको असुविधा हो सकती थी। उसके हाथ में जो बन्दूक थी, उसका उसने घोड़ा चढ़ाया। वह धीरे-धीरे अपने घर की ओर बढ़ा। वह मार्ग के किनारे-किनारे वृक्षों के बगल से होता हुआ चल रहा था। आक्रमण का तिलमात्र भी संकेत पाकर वह किसी भी बड़े पेड़ की जड़ की आड़ में खड़ा होने के लिये बिल्कुल तैयार था। उस स्थान से वह अपने का बचा कर गोली चला सकता था। उसकी स्त्री उसके पीछे-पीछे चल रही थी। वह उसकी फाज़िल बन्दूक और गोलियों की सन्दूकची को रखे हुये थी। युद्ध के समय अपने पति की बन्दूक को भरना ही एक भली पत्नी का परम पावन कर्त्तव्य है।

मेजर, दूसरी ओर, मेटिओ को इस तरीक़े पर आते हुये देख कर बहुत परेशान था। वह गिन-गिन कर क़दम रख रहा था; उसकी बन्दूक बिल्कुल तैयार थी और उसकी अँगुली घोड़े पर चढ़ी हुई थी।

'यदि संयोगवश,' उसने सोचा, 'जियानेटो का रिश्तेदार अथवा मित्र निकला, और उसके दिल में उसको बचाने की सूझी, तो उसकी दोनों बन्दूकों की दो गोलियाँ हम दो को उसी प्रकार लगेंगी, जिस प्रकार कि डाक से भेजा हुआ पत्र अपने पते पर पहुँच जाता है. और कहीं, रिश्तेदारी होने पर भी उसने मुझ पर निशाना लगाया तो...!'

ऐसी आपत्ति के समय में मेजर ने एक बड़ा साहसपूर्ण संकल्प किया। उसने खुद आगे बढ़ कर मेटिओ को यह सब मामला और अपना परिचय देने का निश्चय किया; परन्तु मेटिओ और उसके बीच का थोड़ा-सा फासला, उसको बहुत लम्बा-सा जान पड़ रहा था।

"वन्दे ! पुराने साथी," वह ज़ोर से चिल्लाया, "मिजाज़ तो अच्छा है न, तुम्हारा ? मैं तुम्हारा भाई गम्बा हूँ ।"

मेटिओ, बिना एक शब्द का भी जवाब दिये रुक गया और जैसे-जैसे दूसरा आदमी बोलता था, वैसे-वैसे वह बन्दूक की नली को ऊपर उठाने लगा। जिस समय मेजर उसके पास आया, उस समय बन्दूक आसमान की ओर तनी हुई थी।

"वन्दे, भाई," मेजर ने हाथ फैला कर अभिवादन किया।

"बहुत दिनों के बाद आज मैं तुम्हें देख रहा हूँ ।"

"वन्दे, भाई ।"

"मैं यहाँ से जाते हुये आपसे और पेपा बहिन से मिलने आया था। हम लोगों ने आज बड़ी लम्बी सफ़र की है; परन्तु हम लोग थकने की शिकायत नहीं कर सकते, क्योंकि आज हमने एक बड़े मशहूर बागी को पकड़ा है। हम लोगों ने अभी-अभी जिआनेटो सान पीयरो को गिरफ़्तार किया है।"

"ईश्वर को धन्यवाद है," जियूसेपा ने कहा, "उसने गत सप्ताह हमारी दूध देने वाली बकरी को लूट लिया था।"

इन शब्दों को सुन कर गम्बा बहुत प्रसन्न हुआ।

"ग़रीब शैतान," मेटिओ ने कहा, "वह भूखा होगा।"

"इस दुष्ट ने शेर के समान मुकाबिला किया," मेजर ने कुछ आश्चर्य के साथ कहा—"उसने हमारे एक सैनिक को मार डाला। उसको इतने पर भी सन्तोष नहीं हुआ। उसने कारपोरल चारडन का हाथ भी तोड़ डाला; परन्तु इससे कोई अधिक हानि नहीं हुई। वह तो फ़रासीसी था...इसके बाद उसने अपने को इतनी होशियारी के साथ छिपाया था कि शैतान भी उसका पता नहीं लगा सकता था। बिना मेरे छोटे भाई फारचुनेटो की सहायता पाये, मैं भी उसे कभी नहीं पा सकता था।"

"फारचुनेटो !" मेटिओ ने ज़ोर से कहा ।

"हाँ, फारचुनेटो !" जीयूसेपा ने दोहराया ।

"हाँ, जियानैटो उस घास के ढेर के अन्दर छिप गया था; परन्तु मेरे छोटे भाई ने मुझको उसकी चाल बतला दी । मैं उसके चाचा (एडमिरल) से यह बात बतलाऊँगा और वे उसके इस कष्ट के लिये उसे एक सुन्दर उपहार भेजेंगे । इस सम्बन्ध की मैं अपनी जो रिपोर्ट पब्लिक प्रासीक्यूटर के पास भेजूँगा, उसमें आपका और उसका—दोनों के नाम का उल्लेख करूँगा ।"

"उसे दफ़ना दो !" मेटिओ ने बहुत धीरे से कहा ।

वे लोग सैनिकों के समीप आ गये । जियानैटो अपनी डोली पर बैठा दिया गया था । वे लोग रवाना होने के लिये तैयार थे । जिस समय उसने मेटिओ को गम्पा के साथ देखा, वह घृणायुक्त भाव से मुस्कराया । इसके बाद मकान के दरवाज़े की ओर मुड़ कर उसने ड्योढ़ी पर थूक दिया और कहा—"विश्वासघाती का मकान ।"

मरने के लिये तय्यार व्यक्ति के अतिरिक्त कोई दूसरा आदमी मेटिओ को विश्वासघाती नहीं कह सकता था । जिस आदमी की ज़बान से यह शब्द निकल जावे, समझ लो कि उसके वक्षःस्थल पर नुकीली कटार भोंक दी गई । इस काम के लिये एक क्षण की भी देर न होगी । इस प्रकार अपमान करने वाले से तुरन्त बदला ले लिया जाता; परन्तु उसने यह सुन कर, घबड़ाये हुये आदमी के समान अपना हाथ अपने मस्तक पर रखा ।

अपने पिता को आया हुआ देख कर फारचुनेटो घर के अन्दर चला गया था । वह एक प्याला दूध लेकर तुरन्त लौट आया । नीची आँखें किये हुये उसने यह प्याला जियानैटो की ओर बढ़ाया ।

"अलग करो !" बिजली की कड़क के समान गरज़ कर डाकू ने कहा ।

इसके बाद एक सैनिक की तरफ़ मुड़ कर कहा—"आओ मित्र, कुछ पिया जावे" उसने कहा।

सैनिक अपनी कुप्पी में पानी भर कर लाया। डाकू ने उसी आदमी का दिया हुआ पानी पी लिया, जिसके साथ वह अभी गोलियों के घात-प्रत्याघात का खेल खेल चुका था। इसके बाद उसने कहा कि उसके हाथ बजाय पीठ के पीछे बाँधने के, सामने वक्षःस्थल पर बाँध दिये जायँ।

उसने कहा—"मैं अपनी सुविधा के अनुसार लेटना चाहता हूँ।"

उन लोगों ने उसे सन्तुष्ट करने का भर सक प्रयत्न किया। इसके बाद मेजर ने रवाना होने का संकेत किया। चलते समय उसने मेटिओ से कहा—"वन्दे।" उसने कोई जवाब न दिया। वह मैदान की तरफ़ बड़ी तेज़ी से चला गया।

दस मिनट गुज़र जाने के बाद मेटिओ ने अपनी ज़बान खोली। बालक घबड़ाया हुआ कभी माँ की ओर और कभी पिता की ओर देख रहा था, जो बन्दूक पर झुका हुआ बहुत कुपित-सा प्रतीत हो रहा था।

"तुमने बहुत अच्छा काम किया," अन्त में मेटिओ ने शान्त भाव में कहा; परन्तु जो लोग उससे परिचित थे, उनके लिये उसका यह शान्त भाव बहुत भयंकर था।

"पिता जी," नज़दीक आकर बालक ने कहा। उसकी आँखों में आँसू भरे हुये थे और वह उसके पैरों पर गिरना चाहता था।

परन्तु मेटिओ ने उसकी ओर देखते हुये कहा—"मेरे सामने से हट जाओ।"

बालक झिझका और निरुद्देश्य भाव से सिसकता हुआ वह अपने पिता से कुछ दूर खड़ा रहा।

जियूसेपा वहाँ आई। उसने घड़ी की चेन अभी-अभी देखी थी। उसका एक छोर फारचुनेटो के कमीज़ के बाहर लटक रहा था।

"तुम को यह घड़ी किसने दी ?" उसने घुड़क कर पूछा।

"मेरे भाई मेजर ने।"

फालकोन ने घड़ी छीन ली। उसने उसको ज़ोर से पत्थर पर पटक दिया। वह चूर-चूर हो गई।

"स्त्री," उसने कहा, "क्या यह लड़का मेरा है ?"

जियोसेपा के भूरे कपोल, ईंट के समान लाल हो गये।

"तुम क्या कह रहे हो, मेटिओ ! क्या तुम जानते हो कि तुम किसके साथ बातचीत कर रहे हो ?"

"हमारे वंश में यही लड़का पहला विश्वासघाती निकला।"

फारचुनेटो का रोना-खिसकना और अधिक बढ़ गया। फालकोन बन-बिलाव की-सी दृष्टि से उसकी ओर ताकता रहा। निदान् , उसने बन्दूक के कुन्दे को ज़मीन पर पटक दिया, फिर उसे कंधे पर रख कर वह माक्विस के रास्ते की तरफ़ चल पड़ा। उसने ज़ोर से चिल्लाकर फारचुनेटो को उसके पीछे आने के लिये कहा।

बालक ने उसकी आज्ञा का पालन किया।

जियूसेपा मेटिओ के पीछे दौड़ी और उसने उसका हाथ पकड़ लिया।

"वह तुम्हारा पुत्र है," उसने काँपते हुए स्वर में उससे कहा। ऐसा कहती हुई वह अपनी काली आँखें अपने पति की आँखों से मिला कर यह जानने की चेष्टा करने लगी कि उसके मन में कौन-से विचार उत्पन्न हो रहे हैं।

"मुझे छोड़ दो," मेटिओ ने जवाब दिया—"मैं उसका पिता हूँ।"

जियूसेपा ने बालक का चुम्बन लिया और रोती हुई, झोपड़ी के अन्दर चली गई। वह घुटने टेक कर 'वरजिन' (कुँआरी कन्या)

की मूर्त्ति के सामने खड़ी होकर बड़ी भक्ति के साथ प्रार्थना करने लगी। इसी बीच में फालकोन रास्ते पर लगभग दो सौ गज़ तक चला गया। वह उस समय तक नहीं रुका, जब तक कि वह एक छोटी घाटी के पास नहीं पहुँच गया। उसने जमीन को अपनी बन्दूक के कुन्दे से टटोला। उसे जमीन नरम और जल्द खुद जाने वाली जान पड़ी। यह स्थान उसके कार्य के लिये उपयुक्त जान पड़ा।

"फारचुनेटो, उस बड़ी चट्टान के ऊपर चढ़ जाओ।"

बालक ने, जैसा कहा गया, वैसा ही किया। इसके बाद वह घुटने टेक कर खड़ा हो गया।

"अपनी प्रार्थना कह लो।"

"पिता, मेरे पिता, मुझे मत मारो।"

"अपनी प्रार्थना कह लो!" मेटिम्रो ने तीव्र स्वर में दोबारा कहा।

बालक सिसकता हुआ लड़खड़ाती ज़बान में पेटर और क्रेडो की प्रार्थना पढ़ने लगा। प्रत्येक प्रार्थना के बाद पिता तीव्र स्वर में 'आमीन' कह देता था।

"क्या तुम्हें इतनी ही प्रार्थनायें आती हैं?"

"पिता, मुझे आवे मेरिया की भी प्रार्थना मालूम है। मुझे बुआ ने लिटनी (ईसाइयों की एक साधारण प्रार्थना) भी सिखलाई थी; वह भी मुझे याद है।"

"वह बड़ी लम्बी है, ख़ैर कोई हर्ज़ नहीं, उसे भी कह लो।"

बालक ने लिटनी प्रार्थना भी धीरे-धीरे पढ़ डाली।

"तुमने पढ़ डाली?"

"हे पिता, दया करो! मुझे क्षमा करो! मैं ऐसा फिर कभी न करूँगा। मैं अपने भाई कारपोरल से प्रार्थना करूँगा कि वे जियानेटो को क्षमा कर दें!"

वह अभी भी बोल रहा था। मेटियो ने अपनी बन्दूक का घोड़ा चढ़ाया और निशाना तान कर कहने लगा :—

"ईश्वर तुम्हें क्षमा करे।"

बालक ने उठ कर अपने पिता के पैरों से लिपट जाने का बहुत जबरदस्त प्रयत्न करना चाहा; परन्तु उसे समय न मिल पाया। मेटिओ ने गोली दाग दी और फारचुनेटो मर कर ज़मीन पर गिर पड़ा।

शव की तरफ बिना देखे ही, मेटिओ ने अपने घर का रास्ता पकड़ा। वह पुत्र की क़बर खोदने के लिये कुदाली लेने जा रहा था। कुछ क़दम जाने पर उसे जियूसेपा मिली। बन्दूक की आवाज़ सुन कर वह घबड़ा कर दौड़ती हुई चली आ रही थी।

"तुमने क्या कर डाला!" उसने चिल्ला कर कहा।

"न्याय।"

"वह कहाँ है?"

"घाटी में। मैं उसे दफ़नाने जा रहा हूँ। वह ईसाई की भाँति मरा है। मैं उसके लिये एक प्रार्थना करूँगा। हमारे दामाद टियोडोरो बियांची को खबर दे दो कि वह यहाँ आकर हमारे साथ रहे।"

दर्पण

लेखक—लियो लेसपेस

पहला पत्र

प्यारी आनाई, तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें पत्र लिखूँ। मैं एक ग़रीब और अन्धी हूँ, जिसका हाथ अंधकार में बहुत धीरे-धीरे चलता है। क्या तुम मेरे उन पत्रों की उदासी को देख कर, जो अन्धकार में लिखे जाते हैं, भयभीत नहीं होतीं? अन्धे के विचारों के अंधकार को देख कर क्या तुमको ज़रा भी डर नहीं लगता?

प्यारी आनाई, तुम सुखी हो। तुम देख सकती हो। देखना! ओफ़, देखना! नीले आकाश, सूर्य और भिन्न-भिन्न रंगों को पहिचानना—इनमें कितना आनन्द है! सच है, किसी समय मुझे भी यह आनन्द प्राप्त था; परन्तु जिस समय मैं अन्धी हुई, उस समय मुश्किल से मेरी उम्र दस साल की रही होगी। इस समय मेरी उम्र पचीस वर्ष की है। पन्द्रह वर्षों का यह दीर्घकाल तभी से बोझल हो गया, जिस समय मेरे आस-पास रात जैसा कुछ अन्धकार उमड़ उठा! मेरी प्यारी सहेली, मैं प्रकृति के आश्चर्यों को स्मरण करने का प्रयत्न करती हूँ; परन्तु सब बेकार है। मैं उसके समस्त रंगों को भूल गई हूँ। मैं गुलाब की सुगंध को सूँघती हूँ; उसके आकार का स्पर्श द्वारा अनुमान भी करती हूँ; परन्तु उसके प्रशंसनीय रंग को, जिसके साथ सब सुन्दर स्त्रियों की तुलना की जाती है, मैं भूल गई हूँ अथवा यों कह लीजिए कि मैं इसका वर्णन नहीं कर सकती। कभी-कभी इस अंधकार के मोटे पर्दे के अन्दर आश्चर्यजनक उज्ज्वल दृश्य भी दिखलाई पड़ते हैं।

डाक्टरों का कथन है कि रक्त के तीव्र प्रवाह से ऐसा होता है और इससे नीरोग होने की आशा की जा सकती है। लेकिन यह निराशा-सी दीखती है! जिस किसी ने पन्द्रह वर्ष तक उस प्रकाश को खो रक्खा हो, जिससे सारा संसार जगमग-जगमग प्रतीत होता है, उसे तो यही समझना चाहिये कि वह उसे दूसरे जीवन के अतिरिक्त और कभी प्राप्त नहीं हो सकता।

एक दिन मुझे एक अजीब सनसनी का अनुभव हुआ। अपने कमरे के अन्दर टटोलते हुये मेरा हाथ—ओफ़! तुम अनुमान भी न कर सकोगी, एक दर्पण पर पड़ा। मैं उसके सामने बैठ गई। मैंने विलासिनी स्त्री के समान अपने केश सँवारे। ओफ्! मैं अपने में क्या देखना चाहती थी? मैं यह जानना चाहती थी कि मैं खूबसूरत हूँ अथवा नहीं; मेरा चमड़ा जितना सफेद है, उतना ही नरम भी है अथवा नहीं, और मेरी विशाल भौंहों के नीचे मेरी सुन्दर आँखें हैं अथवा नहीं? ओफ़्! हम लोगों से पाठशाला में बहुधा यह कहा जाता था कि उन छोटी लड़कियों के दर्पण में शैतान प्रकट हो जाता है, जो अधिक समय तक उनमें अपना मुँह देखा करती हैं। मैं तो केवल यही कह सकती हूँ कि अगर वह मेरे दर्पण में आ जावे, तो वह बड़ी खूबसूरती से पकड़ा गया समझना चाहिये। लेकिन मेरे प्रभु, शैतान को पकड़ कर भी तो मैं उसे देख न पाऊँगी!

तुमने अपने कृपा-पत्र में, जो कि मुझे अभी पढ़ कर सुनाया गया है, मुझसे यह पूछा है कि क्या यह बात सच है कि महाजन के दिवाला निकल जाने से मेरे माता-पिता भी बरबाद हो गये हैं? मैंने इस सम्बन्ध में कुछ नहीं सुना। नहीं, वे अभी भी धनवान् हैं। मुझे सब तरह के आनन्द की सामग्री दी जाती है। जहाँ कहीं भी मेरा हाथ ठहरता है, मुझे रेशम और मखमल, पुष्प और बहुमूल्य वस्तुएँ ही मिलती हैं। हमारी टेबिल सब तरह के भोजनों से भरी रहती है और

प्रतिदिन मुझे भिन्न-भिन्न स्वाद के भोजन खाने को मिलते हैं। इसलिये आनाई, तुमको समझ जाना चाहिये कि मेरे प्यारे घर के लोग बड़े मज़े में हैं।

मेरी प्यारी, चूँकि अब तुम साम्राज्यवादी इंगलैंड से लौट आई हो और तुम्हें इस ग़रीब अन्धी लड़की पर दया है, इसलिये मुझे पत्र लिखने की कृपा रखना।

दूसरा पत्र

आनाई, तुमको इस बात का कोई ख्याल ही नहीं हो सकता कि मैं तुमसे क्या कहने जा रही हूँ। ओफ्! तुम यह जान कर कि मैं पागल हो गई हूँ, हँसोगी। तुमको यह विश्वास हो जायगा कि दृष्टि के साथ ही साथ मैं अपनी बुद्धि भी खो बैठी हूँ। मेरा एक प्रेमी है!

हाँ, प्यारी, मेरे समान नेत्रहीन बालिका का, अमीर स्त्री इनेस के प्रेमी के समान, प्रार्थना करने वाला और द्रवित होने वाला एक प्रेमी है। इसके बाद, अब क्या कहा जावे। प्रेम, जो अन्धों के समान ही अन्धा है, मुझे अपने वर्ग का समझ कर, सचमुच मुझे अपनाने और अनुगृहीत करने के लिये मेरे पास आया है।

वह हम लोगों में कैसे घुस पड़ा, यह मैं नहीं जानती। मुझको यह बात भी समझ में नहीं आ रही है कि वह यहाँ आकर क्या करेगा। जो कुछ भी मैं तुम्हें बतला सकती हूँ, वह यही कि उस दिन वह भोजन करते समय मेरे बायीं ओर आकर बैठ गया और वह मेरी ओर बड़ी सावधानी से देखने लगा।

"यह पहला मौक़ा है," मैंने कहा, "जब कि मुझे आप से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।"

"सचमुच," उसने जवाब दिया, "परन्तु मैं आप के माता-पिता को जानता हूँ।"

"आप का स्वागत है," मैंने जवाब दिया, "क्योंकि आप उनका—मेरे भले देवदूतों का—आदर करना जानते हैं।"

"केवल वे लोग ही नहीं हैं" उसने धीरे से कहा, "जिनके प्रति मैं प्रेम रखता हूँ।"

"ओफ़!" मैंने लापरवाही से जवाब दिया, "तब उनके अलावा आप यहाँ और किस पर प्रेम करते हैं?"

"तुम पर," उसने कहा।

"मुझ पर? तुम्हारा क्या मतलब?"

"यही कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।"

"मुझे? क्या तुम मुझे सचमुच प्यार करते हो?"

"सचमुच! मैं तुम्हारे प्रेम में पागल हूँ।"

इन उद्‌गारों को सुन कर मैं शरमा गई और मैंने अपना दुपट्टा कन्धों के ऊपर डाल लिया। वह चुपचाप बैठा रहा।

"इसमें सन्देह नहीं कि तुमने अपने प्रेम की घोषणा अचानक कर दी।"

"ओफ़! यह मेरी भाव-भंगी, चितवन, तथा सारे कृत्यों में देखा जा सकता है।"

"वह भले ही देखा जा सके, परन्तु मैं अन्धी जो हूँ। अन्धी लड़की के साथ अन्यान्य लड़कियों के सदृश प्रेम-प्रदर्शन नहीं किया जाता।"

"मुझे दृष्टि के अभाव की तनिक भी चिन्ता नहीं है।"

उसने आनन्द-पूर्वक निष्कपट भाव से कहा—"यदि तुम्हारी आँखें देख नहीं सकतीं, तो इससे मेरा कोई हर्ज नहीं है। क्या तुम्हारा रूप लुभावना नहीं है? क्या तुम्हारे पैर अप्सराओं के पैरों के समान छोटे नहीं हैं? क्या तुम्हारी चाल मतवाली नहीं है? क्या तुम्हारी अलकें लम्बी और रेशम के समान मुलायम नहीं हैं? क्या तुम्हारा

प्रतिदिन मुझे भिन्न-भिन्न स्वाद के भोजन खाने को मिलते हैं। इसलिये आनाई, तुमको समझ जाना चाहिये कि मेरे प्यारे घर के लोग बड़े मजे में हैं।

मेरी प्यारी, चूँकि अब तुम साम्राज्यवादी इंगलैंड से लौट आई हो और तुम्हें इस गरीब अन्धी लड़की पर दया है, इसलिये मुझे पत्र लिखने की कृपा रखना।

दूसरा पत्र

आनाई, तुमको इस बात का कोई ख्याल ही नहीं हो सकता कि मैं तुमसे क्या कहने जा रही हूँ। ओफ्! तुम यह जान कर कि मैं पागल हो गई हूँ, हँसोगी। तुमको यह विश्वास हो जायगा कि दृष्टि के साथ ही साथ मैं अपनी बुद्धि भी खो बैठी हूँ। मेरा एक प्रेमी है!

हाँ, प्यारी, मेरे समान नेत्रहीन बालिका का, अमीर स्त्री डनीस के प्रेमी के समान, प्रार्थना करने वाला और द्रवित होने वाला एक प्रेमी है। इसके बाद, अब क्या कहा जावे। प्रेम, जो अन्धों के समान ही अन्धा है, मुझे अपने वर्ग का समझ कर, सचमुच मुझे अपनाने और अनुगृहीत करने के लिये मेरे पास आया है।

वह हम लोगों में कैसे घुस पड़ा, यह मैं नहीं जानती। मुझको यह बात भी समझ में नहीं आ रही है कि वह यहाँ आकर क्या करेगा। जो कुछ भी मैं तुम्हें बतला सकती हूँ, वह यही कि उस दिन वह भोजन करते समय मेरे बायीं ओर आकर बैठ गया और वह मेरी ओर बड़ी सावधानी से देखने लगा।

"यह पहला मौका है," मैंने कहा, "जब कि मुझे आप से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।"

"सचमुच," उसने जवाब दिया, "परन्तु मैं आप के माता-पिता को जानता हूँ।"

हूँ, रूपवती हूँ ! मैं तो यह भी नहीं समझ पाती कि मैं उसे किस प्रकार थोड़ा-थोड़ा प्यार करने लगी हूँ। वह मुझे मेरा श्रीमान् दर्पण-सा प्रतीत होने लगा है !

तीसरा पत्र

ओफ़, प्यारी आनाई, तुम्हें क्या समाचार सुनाऊँ ! इस जीवन में न जाने कितनी अचिन्तनीय और दुःखद घटनायें घटा करती हैं। जिस समय मैं अपनी बीती तुमको बतला रही हूँ, उस समय मेरी अंधी आँखों से आँसू बरस रहे हैं।

उस अजनबी से, जिसे मैं अपना दर्पण कहती हूँ, बातचीत होने के कई दिन बाद, मैं अपनी माँ के हाथ के सहारे बग़ीचे में घूम रही थी। इसी समय अचानक उसके बुलाने की ज़ोर से आवाज़ आयी। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि दासी ने, माँ से जल्द मिलने के लिये, अपने स्वर में कुछ क्षुब्धता प्रदर्शित की है।

"क्या बात है, माँ !" मैंने उससे घबड़ा कर पूछा। मैं स्वयं अपने घबड़ाने का कारण न समझ पाई।

"कुछ नहीं, प्यारी, निस्सन्देह कोई मुलाकाती आया होगा। अपनी परिस्थिति के अनुसार हमें समाज के प्रति भी तो कर्त्तव्य-पालन करना पड़ता है।"

"ऐसी हालत में," आलिंगन करते हुए मैंने उससे कहा, "मैं तुम्हें अधिक समय तक न रोकूँगी। जाओ और गोल कमरे में आगत-स्वागत करो।"

उसके बरफ़ के समान दो अधरों ने मेरे मस्तक का चुम्बन लिया। इसके बाद मुझे उसके पद-शब्द दूर पत्थर की सड़क पर सुनाई दिये।

वह ज्योंही मुझे छोड़ कर गई, त्योंही मुझे दो पड़ोसियों—दो कारीगरों—की बातचीत सुनाई पड़ी। वे आपस में बातचीत कर रहे थे

चमड़ा गिलहरी के समान कोमल नहीं है ? क्या तुम्हारा रंग सुहावना नहीं है और क्या तुम्हारे हाथ का रंग कमल के रंग जैसा नहीं है ?"

रूपराशि की यह प्रशंसा समाप्त होने के पहिले ही मेरे कानों में उसके शब्द गूँजने लगे थे। इस प्रकार उसके कथनानुसार मैं खूबसूरत थी। मेरे पैर अप्सरा के पैरों के समान थे। मेरा चमड़ा बरफ़ जैसा था। मेरा रंग गुलाब जैसा था। और मेरे केश सुन्दर और रेशमी थे। ओफ़्, आनाई, प्यारी आनाई, अन्यान्य बालाओं के लिये जो उनके गुणों का वर्णन करता है, वह उनका प्रेमी कहा जा सकता है; परन्तु एक अन्धी बालिका के लिये वह प्रेमी से कहीं बहुत अधिक है। वह दर्पण है।

मैंने फिर से पूछा—"क्या मैं तुम्हारे कथनानुसार सचमुच सुन्दर हूँ ?"

"मैं वास्तविकता से अभी बहुत दूर हूँ।"

"तुम मुझसे क्या चाहते हो ?"

"मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी स्त्री बनना स्वीकार करो।"

मैं इस बात को सुन कर हँस पड़ी।

"क्या तुम सच कह रहे हो ?" मैंने ज़ोर से पूछा—"नेत्रहीन और नेत्रवान की, अथवा दिन और रात की शादी कैसी ? तब तो मुझे पहिन कर विवाह के समय नारंगी के पुष्पों को धारण करना पड़ेगा। नहीं, नहीं; मेरे माता-पिता धनवान् हैं। एकाकी जीवन का मुझे कोई भय नहीं। मैं अकेली रह कर जीवन व्यतीत करूँगी और डायना देवी की उपासना करूँगी। लोग ऐसा कहते हैं कि उसकी उपासना निष्फल नहीं जाती !"

वह बिना एक भी शब्द कहे हुये चला गया। इसकी मुझे तनिक भी चिन्ता नहीं। उसने मुझे इस बात की शिक्षा दी है कि मैं सुन्दरी

हूँ, रूपवती हूँ ! मैं तो यह भी नहीं समझ पाती कि मैं उसे किस प्रकार थोड़ा-थोड़ा प्यार करने लगी हूँ। वह मुझे मेरा श्रीमान् दर्पण-सा प्रतीत होने लगा है !

तीसरा पत्र

ओफ़, प्यारी आनाई, तुम्हें क्या समाचार सुनाऊँ ! इस जीवन में न जाने कितनी अचिन्तनीय और दुःखद घटनायें घटा करती हैं। जिस समय मैं अपनी बीती तुमको बतला रही हूँ, उस समय मेरी अंधी आँखों से आँसू बरस रहे हैं।

उस अजनबी से, जिसे मैं अपना दर्पण कहती हूँ, बातचीत होने के कई दिन बाद, मैं अपनी माँ के हाथ के सहारे बग़ीचे में घूम रही थी। इसी समय अचानक उसके बुलाने की ज़ोर से आवाज़ आयी। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि दासी ने, माँ से जल्द मिलने के लिये, अपने स्वर में कुछ क्षुब्धता प्रदर्शित की है।

"क्या बात है, माँ ?" मैंने उससे घबड़ा कर पूछा। मैं स्वयं अपने घबड़ाने का कारण न समझ पाई।

"कुछ नहीं, प्यारी, निस्सन्देह कोई मुलाकाती आया होगा। अपनी परिस्थिति के अनुसार हमें समाज के प्रति भी तो कर्तव्य-पालन करना पड़ता है।"

"ऐसी हालत में," आलिंगन करते हुए मैंने उससे कहा, "मैं तुम्हें अधिक समय तक न रोकूँगी। जाओ और गोल कमरे में आगत-स्वागत करो।"

उसके बरफ के समान दो अधरों ने मेरे मस्तक का चुम्बन लिया। इसके बाद मुझे उसके पद-शब्द दूर पत्थर की सड़क पर सुनाई दिये।

वह ज्योंही मुझे छोड़ कर गई, त्योंही मुझे दो पड़ोसियों—दो कारीगरों—की बातचीत सुनाई पड़ी। वे आपस में बातचीत कर रहे थे

और यह समझ रहे थे कि वे अकेले हैं। तुम जानती हो आनाँ जिस समय ईश्वर हमें किसी इन्द्री से हीन कर देता है, तब वह, हमें सान्त्वना देने के विचार से, हमारी अन्य इन्द्रियों को अपेक्षाकृत अधिक तीक्ष्ण भी बना देता है। अन्धे आदमी की श्रवण-शक्ति उस आदमी की अपेक्षा, जो बहुत दूरी तक नज़र दौड़ा सकता है, अधिक तेज़ रहती है। मैंने उनकी बातचीत का एक-एक शब्द सुना, यद्यपि वे धीरे धीरे ही वार्त्तालाप कर रहे थे। उन लोगों ने जो कुछ भी कहा था, वह यह है :—

"ग़रीबी! कितनी खराब है! आढ़तिया फिर आ गया!"

"लड़की को ज़रा भी शक नहीं है। उसको यह समझ में नहीं आता कि वे लोग उसके नेत्रहीन होने का लाभ उठा कर उसे सुखी बनाने की चेष्टा किया करते हैं।"

"तुम्हारे कहने का मतलब क्या है?"

"इसमें कोई शक नहीं है। वह जिन चीज़ों को स्पर्श करती है, वे सब महोगनी लकड़ी अथवा मखमल के रहते हैं। मखमल केवल पुराना और भद्दा हो गया है और महोगनी का रंग उड़ गया है। टेबिल पर बैठ कर वह अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन खाती है। उसको अज्ञानवश स्वप्न में भी इस बात का पता नहीं चलता कि घर की ग़रीबी उससे छिपा कर रखी गई है। उसके साथ ही बैठ कर भोजन करने वाले उसके माता-पिता की तश्तरियों में, सूखी रोटी के सिवाय कुछ भी नहीं रहता, इस बात को वह बेचारी क्या जाने?"

ओह, आनाई, क्या तुम मेरी वेदना को समझ सकती हो! वे लोग मुझे सुखी बनाने के लिये कितना कष्ट उठा रहे हैं। उन्होंने अन्धकार में रहने पर भी, मुझे कितना अधिक सुखी बनाया है! ओह! कितनी आश्चर्यजनक अनुरक्ति है! अधिक से अधिक कृत

हृदय भी, इस अनन्त ऋण से, संसार की सारी सम्पत्ति देकर भी, उऋण नहीं हो सकता।

चौथा पत्र

मैंने यह बात किसी से भी नहीं बतलाई कि मुझे इस गंभीर रहस्य का पता चल गया है। मेरी माँ को यह जान कर बहुत दुःख होगा कि ग़रीबी को छिपाने के, उसके सारे प्रयत्न निरर्थक सिद्ध हुए और मुझे यथार्थ बात मालूम हो गई। मुझे अभी भी अपने घर की समृद्धि-शाली अवस्था पर दृढ़ विश्वास है; परन्तु मैंने उससे बचने का संकल्प कर लिया है।

परन्तु प्रेमी का नाम श्रीयुत डे सावेस है। वह मुझसे मुलाक़ात करने के लिये आया। ईश्वर मुझे क्षमा करे, मैंने उसके साथ विला-सिनी स्त्री के समान व्यवहार किया।

मैंने उससे कहा—"क्या तुम अभी भी मुझे उसी प्रकार प्यार करते हो ?"

"हाँ," उसने कहा—"मैं तुम्हें इसलिये प्रेम करता हूँ कि तुम खूबसूरत हो। तुममें ऐसी मोहक सुन्दरता है जो पावन और विनम्र है।"

"और मेरा रूप ?"

"इतना सुन्दर और सुडौल है जैसे अंगूर की बेल।"

"अहा! और मेरा मस्तक ?"

"गज-दन्त के समान विशाल और चिकना तथा जाज्वल्यमान है।"

"सचमुच ?" और मैं हँसने लगी।

"तुम इतना क्यों हँस रही हो ?"

"इस विचार से कि तुम मेरे दर्पण हो। मैं अपने को तुम्हारे शब्दों में प्रतिबिम्बित देखती हूँ।"

"प्यारी, मैं चाहता हूँ कि ऐसा ही सदा होता रहे।"

"क्या तुम्हें मंजूर है कि—?"

"मैं तुम्हारा विश्वसनीय दर्पण बनूँ, जिस पर तुम्हारे गुण प्रतिबिम्बित हुआ करें। मेरी पत्नी बन जाने की स्वीकृति दे दो। मेरे पास कुछ धन है। तुम्हें किसी चीज़ की कमी न होगी। मैं यथाशक्ति तुम्हें सुखी बनाने का प्रयत्न करता रहूँगा।"

इन शब्दों को सुन कर मुझे अपने माँ-बाप की ग़रीबी का ख्याल हो आया। मेरी शादी हो जाने से उनके सिर से एक ज़बरदस्त जिम्मेदारी का बोझ हट जायगा।

"यदि मैं तुमसे शादी करने के लिये अपनी स्वीकृति दे दूँ," मैंने उत्तर दिया, "तब तुम्हारे मानव-आत्म-प्रेम पर आघात पहुँचेगा। मैंने तुमको अभी तक देखा नहीं है।"

"अफसोस!" उसने ज़ोर से कहा, "मुझे तुमको एक बात साफ़ रूप में बतला देनी है।"

"बतलाओ," मैंने कहा।

"मैं प्रकृति का कुरूप बालक हूँ। न तो मुझमें रूप की माधुरी है और न व्यवहार की कुशलता है। मेरे दुर्भाग्य को ताज पहिनाने के लिये, माता का टीका लगाने पर भी न रुकने वाली चेचक की बीमारी ने, मेरे मुख पर बड़ी निर्दयता के साथ अमिट निशान लगा दिये हैं। इसलिये अच्छी लड़की के साथ विवाह करते हुये मैं अपने को स्वार्थी और निलज्ज सिद्ध कर रहा हूँ।"

मैंने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया।

"मैं नहीं जानती कि तुम अपने साथ अधिक निर्दयता का व्यवहार कर रहे हो; परन्तु मुझे इस बात का विश्वास है कि तुम भले और

सच्चे आदमी हो, इसलिये मैं जैसी हूँ, उसी प्रकार मुझे ग्रहण करो। किसी भी कारण से तुम्हारी ओर से मेरे विचार नहीं बदल सकते। तुम्हारा प्रेम मेरे जीवन के मरुस्थल में हरित-भूमि का काम करेगा।"

प्यारी आनाई, मैं इस बात को नहीं जानती कि मैं उचित अथवा अनुचित कैसा काम कर रही हूँ; परन्तु मैं यह काम अपने माँ-बाप की सहायता के लिये कर रही हूँ। ऐसा प्रतीत होता है कि टटोलते-टटोलते मैंने ठीक रास्ता पा लिया है।

पाँचवाँ पत्र

मैं तुम्हारे उस पत्र के लिये धन्यवाद देती हूँ, जो तुम्हारी कृपा-पूर्ण मित्रता, अभिनंदन और बधाई-सूचक भावों से परिपूर्ण है।

हाँ, मेरी शादी हुये दो महीने हो चुके और इस समय में अपने को सब से सुखी स्त्री समझती हूँ। मुझे किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है। मेरे पति मुझ पर प्रेम करते हैं और मेरे माता-पिता भी मुझे आदर की दृष्टि से देखते हैं। माता-पिता मेरे साथ ही हैं। मुझे अपनी दृष्टि-दोष का दुःख नहीं है, क्योंकि एडमण्ड हम दोनों के देखने का काम कर लेता है।

जिस दिन मेरा विवाह हुआ, मेरे दर्पण ने—मैं उसे इसी नाम से सम्बोधित करती हूँ—मेरे विवाहोत्सव का भी मुझे सन्तोषजनक रीति से दिग्दर्शन करा दिया था। मुझे इस बात का आनन्द है कि मेरा घूँघट बहुत अच्छा बनाया गया था और नारंगियों के पुष्पों का माला एक ही ओर झुकी हुई नहीं थी। इससे अधिक वेनिस का दर्पण कर ही क्या सकता था!

शाम के वक्त हम लोग साथ साथ बाहर जाकर बगीचे में घूमते हैं। भीनी-भीनी सुगन्ध प्रसारित करने वाले पुष्पों से; कानों में अनायास

आ जमानेवाले गीतों के स्रष्टा पंछियों से और स्वाद तथा कोमल स्पर्श से सुख पहुँचाने वाले फलों का वर्णन कर, वह मुझे इन सब वस्तुओं से परिचित किया करता है। मैं इन सब की प्रशंसा करती हूँ। कभी-कभी हम लोग थियेटर देखने जाया करते हैं। वहाँ भी वह अपनी कुशाग्र बुद्धि के सहारे मुझे वह सब बातें बतला देता है, जिन्हें मेरी बन्द आँखें देख नहीं सकतीं। उफ्! उसके कुरूप होने से मेरा बिगड़ता ही क्या है! मुझे सुन्दरता और रूपहीनता का कुछ भी ज्ञान नहीं है; परन्तु मैं इस बात को जानती हूँ कि दया और प्रेम क्या है।

अच्छा, तो प्यारी आनाइ, वन्दे, मेरे सुख में तुम भी आनन्द मनाओ।

छठवाँ पत्र

आनाइ, अब मैं माँ हूँ—एक नन्हीं बालिका की माँ हूँ। मैं उस बालिका को देख नहीं सकती! सब लोग कहते हैं कि वह बड़ी सुन्दर है। उन लोगों का अनुमान है कि वह छोटेपन में मेरी साक्षात् प्रतिमा है; परन्तु मैं उसकी प्रशंसा नहीं कर सकती! ओह! मातृ-प्रेम कितना महान् होता है! निस्तब्ध नील गगन की ओर, पुष्पों के सौन्दर्य की ओर, अपने पति के स्वरूप की ओर, अपनी माता की ओर, और उन लोगों की ओर जो मुझे प्यार करते हैं, न देख सकने का मैंने दुःख सहन किया है। इस दुःख को सहन करते समय मैंने एक शब्द भी नहीं कहा; परंतु ऐसा प्रतीत होता है कि अपनी बच्ची को न देखने का दुःख, मैं चुपचाप सहन न कर सकूँगी। उफ़! [illegible] नहीं हुई काली पट्टी, यदि एक क्षण के लिये हट [illegible]—[illegible] एक क्षण के लिये हट जाये और यदि मैं [illegible] [illegible] अपनी और केवल एक बार देख सकूँ,

तो मैं अपना शेष जीवन, बहुत सुखी और गौरवान्वित होकर बिता सकूँगी।

इस समय एडमण्ड मेरा दर्पण नहीं बन सकता। जिस समय वह बतलाता है कि मेरी ख़ूबसूरत बच्ची के सुन्दर घुँघराले केश हैं, विशाल चित्ताकर्षक नेत्र हैं और सिन्दूरवर्ण की-सी मुस्कान है, उस समय मुझे वह सब निरर्थक-सा प्रतीत होता है। उससे मुझे लाभ ही क्या! जिस समय मेरी नन्हीं बालिका मेरी ओर हाथ फैलाती है, उस समय दुःख है कि मैं उसे देख नहीं पाती।

सातवाँ पत्र

मेरा पति एक स्वर्गीय दूत है, फ़रिश्ता है। क्या तुम जानती हो कि वह क्या कर रहा है! गत वर्ष बिना मुझको बतलाये हुये उसने मेरा इलाज़ कराया। वह चाहता है कि मुझे फिर से दिखने लगे। मेरा इलाज करने वाला डाक्टर कौन है! स्वयं वही है। उसने मेरे लिये वह पेशा अख्तियार किया है, जिसके लिये उसकी आत्मा झिझका करती है।

"मेरे जीवन की ज्योति!" उसने मुझसे कल कहा—"क्या तुम जानती हो कि मैं किस बात की आशा कर रहा हूं!"

"क्या वह सम्भव है!"

"हाँ, जिन औषधियो को बना कर मैंने तुमको, इस बहाने शरीर पर उनका मालिश करने के लिए कहा था कि उससे तुम्हारे शरीर की सुन्दरता बढ़ेगी, वह सब वास्तव में एक अत्यन्त आवश्यक चीर-फाड़ की तैयारी थी।"

"कैसी चीर-फाड़!"

"मोतिया-बिन्दु को अच्छा करने के लिये!"

"ऐसा करते समय क्या तुम्हारा हाथ न काँपेगा!"

"कभी नहीं, मेरा हाथ दृढ़ रहेगा, क्योंकि मेरे हृदय में आसक्ति जो बनी रहेगी।"

"ओफ़्!" मैंने उसको आलिंगन करते हुए कहा, "तुम मनुष्य नहीं हो, तुम एक दयालु फ़रिश्ता हो।"

"आह!" उसने कहा, "प्रियतमे, एक बार मेरा और चुम्बन लो। मुझे अपने आखिरी कुछ क्षण विचार में व्यतीत करने दो!"

"तुम्हारे कहने का क्या अर्थ है प्यारे?"

"मेरा मतलब यह है कि ईश्वर की कृपा से तुमको बहुत जल्द नयन-ज्योति फिर से प्राप्त होगी।"

"और फिर—?"

"फिर तुम मुझे जैसा कि मैं नाटा, क्षुद्र और कुरूप हूँ—वैसा देखोगी!"

इन शब्दों को सुन कर मुझे अन्धकार में बिजली के प्रकाश का-सा अनुभव हुआ। वह मेरी कल्पना थी; जो मशाल के समान प्रज्वलित हो उठी थी।

"प्रियतम एडमण्ड" मैंने उठ कर कहा, "यदि तुम्हें मेरे प्रेम पर विश्वास नहीं है, यदि तुम समझते हो कि तुम्हारा चाहे जैसा भी रूप हो, मैं तुम्हारी अनुगत दासी नहीं हूँ, तो तुम मुझे इसी शून्याकार में, इसी अनन्त कुहू निशा में पड़ी रहने दो।"

उसने कुछ उत्तर नहीं दिया; परन्तु मेरा हाथ दबा दिया।

मेरी माँ ने मुझको बतलाया कि चीर-फाड़ एक महीने में होगी।

मैंने अपने पति के स्वरूप का वर्णन जो पूछ कर मालूम किया था, उस पर विचार किया। माँ ने मुझसे कहा था कि उसके मुँह पर चेचक के दाग हैं। पिता जी का कहना है कि उनके केश विरले हैं। हमारी दासी [illegible] का कहना है कि वह वृद्ध है!

मुँह पर चेचक के दाग होना तो दैवी दुर्घटना का कारण है।

गंजा होना असाधारण दिमाग़ी ताकत का चिन्ह है। लेवेटर का ऐसा ही कथन है। परन्तु वृद्ध होना, दुःख की बात है। यदि दुर्भाग्यवश कहीं प्रकृति के दौरान में, वह मुझ से पहिले मर गया, तब तो मुझे उसे प्रेम करने का बहुत कम समय मिलेगा।

सच बात तो यह है, आनाई कि अगर तुम्हें परियों की पुस्तक की उन कहानियों का ख्याल हो, जिन्हें हम दोनों ने पढ़ा था, तो तुम्हें इस बात को स्वीकार करना होगा कि मैं "सुन्दरता और पशु" नामक पुस्तक में वर्णन की गई एक मनोरंजक परिस्थिति में फँसी हुई हूँ। उस कहानी में और मुझ में केवल इतना अन्तर है कि मुझ में रूप बदलने की आश्चर्यजनक शक्ति नहीं है, जो उसमें थी। कुछ समय के लिये ईश्वर से मेरे लिये प्रार्थना करो, क्योंकि कौन जानता है कि ईश्वर की कृपा से मुझमें शीघ्र तुम्हारे बहुमूल्य पत्रों को पढ़ने की शक्ति भी आ जावे !

अन्तिम पत्र

ओफ़, मेरी सहेली जब तक तुमने इस पत्र का प्रारम्भिक भाग नहीं पढ़ लिया है, तब तक तुम इसके अन्त की ओर मत निहारो। मेरे दुःखों, परिवर्त्तनों और आनन्द में से स्वाभाविक घटना-क्रम के अनुसार ही तुम भी अपना हिस्सा लो।

एक पखवाड़ा हुआ, मेरी आँखो में नश्तर लगाया गया। एक काँपता हुआ हाथ मेरी आँखो पर रखा गया। मैं दो बार ज़ोर से चिल्लाई। इसके बाद मुझे दिन, प्रकाश, रंग और सूर्य दिखलाई पड़ने लगे। इसके बाद तुरन्त ही मेरे जलते हुये मस्तक की पट्टी बदली गई। मैं अच्छी हो गई। केवल थोड़ा धैर्य और तनिक से साहस की आवश्यकता पड़ी। एडमण्ड ने मुझे जीवन की सम्पत्ता पुनः प्रदान की।

परन्तु मुझे एक बात तो अवश्य स्वीकार करनी पड़ेगी कि मुझ से एक बड़ी बेवकूफी हुई। मैंने अपने डाक्टर की आज्ञा भंग की। उसको इस बात का पता नहीं चला। इसके अलावा मेरे उस उतावलेपन से अब कोई भय भी नहीं है। वे लोग मेरी नन्हीं-सी बालिका को मेरे पास चुम्बन लेने के लिये लाये। निसेटी उसे अपनी गोद में लिये हुये थी। बालिका ने अपने धीमे स्वर में कहा "अम्माँ!" यह सुन कर मैं अपने को बिलकुल न सम्भाल सकी। मैंने पट्टी फाड़ डाली।

"मेरी बिटिया! अहा! हा! वह कितनी सुन्दर है।" मैं चिल्ला उठी—"मैं उसे देख रही हूँ! अहा! हा! मैं उसे देख रही हूँ।"

निसेटी ने तुरन्त पट्टी बाँध दी; परन्तु इस अन्धकार में भी मैं अकेली नहीं हूँ। इस नन्हें मुख ने मेरी स्मृति को लौटा दिया। उसी क्षण से मेरी अँधेरी रात में प्रकाश जगमगा उठा।

कल मेरी माँ मुझे पोशाक पहिनाने आई। वह बड़ी देर तक मेरा शृंगार करती रही। मैंने सुन्दर रेशमी पोशाक और लेस का कालर पहिना। मेरे केश, मेरी स्टुआर्ट के समान गूँथे गये। जब मेरा पूरा शृंगार हो गया, तब मेरी माँ ने मुझ से कहा—"पट्टी हटा लो।"

मैंने आज्ञा का पालन किया। उस समय कमरे में यद्यपि धुँधला-सा प्रकाश था; परन्तु मुझको ऐसा प्रतीत हुआ कि मैंने ऐसी सुन्दरता और कला नहीं देखी थी। मैंने अपनी माँ का, पिता का और बच्ची का आलिंगन किया।

मेरे पिता ने कहा—"तुमने अपने अतिरिक्त सब को देख लिया।"

"और मेरा पति," मैं चिल्ला उठी, "मेरा पति कहाँ है?"

"वह छिपा हुआ है," मेरी माँ ने कहा।

उस समय मुझे उसकी [illegible], उसकी पोशाक, उसके खिले बाल और उसके [illegible] के दाग स्मरण हो आये।

"ग़रीब, प्यारा एडमण्ड" मैंने कहा, "उसको मेरे पास आना चाहिये। वह अडोनिस से भी अधिक सुन्दर है।"

"जब तक हम तुम्हारे पति और स्वामी का रास्ता देखें," माँ ने उत्तर दिया, "तब तक अपनी खूबसूरती देख कर उसकी प्रशंसा करो। दर्पण में निहारो। अगर तुम अपना समय व्यतीत करना चाहती हो, तो बिना किसी अड़चन के बहुत समय तक दर्पण में अपनी सूरत देख कर उसकी प्रशंसा करो।"

मैंने आज्ञा-पालन किया। मुझ में कुछ तो अभिमान के और कुछ आश्चर्य के भाव उत्पन्न हुये। यदि मैं कुरूपा हुई तो? यदि मेरी सादगी, गरीबी के समान मुझ से छिपाई गई हो तो? वे लोग मुझे दीवाल के दर्पण के पास ले गये। मैंने आनन्द भरा एक चीत्कार किया। मैं अपने निर्बल शरीर में, गुलाब के समान रंग में, कुछ चौंधियाई हुई दो जाज्वल्यमान नीलम की-सी आँखों में, बड़ी चित्ता-कर्षक-सी प्रतीत होती थी। इतने पर भी मैं निश्चिन्तता के साथ दर्पण में अपने को नहीं देख सकी, क्योंकि दर्पण बिना रुके हुये बराबर काँप रहा था। दर्पण की चमकीले सतह पर मेरी छाया आनन्द से नाचती हुई प्रतीत होती थी।

मैं दर्पण के पीछे उसके काँपने का कारण जानने के लिये झाँकने लगी।

एक नवयुवक बाहर निकल आया। सुन्दर युवक था। उसकी विशाल काली आँखें और चित्ताकर्षक स्वरूप था। उसके कोट पर लीजन आफ़ आनर का फुन्दा लगा हुआ था। मैं यह देख कर शर्मा गई कि अजनबी आदमी के सामने मैं कितनी बेवकूफी का काम रही हूँ।

"जरा इधर देखो," उसका कोई ख्याल न करते हुये मेरी माता ने मुझसे कहा, "तुम सफेद गुलाब के समान कितनी सुन्दर हो।"

"अम्माँ!" मैं चिल्ला उठी।

झील का अलिन्द

लेखक—थियोफ़ाइल गाटियर

केन्टन प्रान्त में, शहर से कुछ कोस की दूरी पर, दो धनाढ्य चीनवासी पास ही पास रहते थे। दोनों कोई काम-धन्धा न करते थे। एक का नाम था टाऊँ और दूसरे का काऊँ। काऊँ एक उच्च वैज्ञानिक पद पर आसीन रह चुका था। वह जेस्पर चेम्बर का सदस्य था। काऊँ ने जीवन की निम्न श्रेणी में रह कर भी काफ़ी धन तथा मान-मर्यादा अर्जित कर ली थी।

ये दोनों चीनवासी दूर के रिश्तेदार और प्रेमी मित्र थे। बचपन में अपने पुराने सहपाठियों को एकत्र करने में उन्हें बहुत आनन्द आता था। शरद ऋतु में सन्ध्या समय, वे अपनी कूँचियों को काली स्याही में डुबो कर फूलदार काग़ज़ के मोम-कप्पड़ पर, चलाया करते थे। शराब के छोटे-छोटे प्याले पीते समय वे पुष्पों की सुन्दरता पर कविता भी रचा करते थे। दोनो के स्वभाव में पहिले तो कोई विषमता नहीं पाई जाती थी; परन्तु आयु बढ़ने के साथ ही साथ उनके स्वभाव भी एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न होते गये। इस प्रकार, एक बादाम के वृक्ष की शाखा दो उपशाखाओं में विभाजित हो गई, यद्यपि वे मूलतः एक ही थीं। ऊपर जाकर वृक्ष की चोटी पर वे इस प्रकार बिल्कुल अलग-अलग हो गईं कि जहाँ एक, तमाम बग़ीचे में अपनी दुर्गन्ध बिखेरती, वहीं दूसरी, दीवाल के बाहर अपने पुष्पों का पराग बरसाती थी।

साल ब साल टाऊँ के स्वभाव में गम्भीरता आने लगी। उसकी तोंद शान से फूल उठी। उसकी ठुड्डी, तेहरी मोड़ खाकर बड़ी शान

"केवल इन भुजाओं की ओर देखो," ऐसा कहते हुये ज़रा-सी पसोपेश किये बिना, उसने मेरी आस्तीन कुहनी के ऊपर चढ़ा दी।

"परन्तु अम्माँ," मैंने कहा, "तुम इस अजनबी आदमी के सामने यह क्या कर रही हो?"

"अजनबी? यह एक दर्पण है।"

मेरे कहने का मतलब दर्पण का नहीं है; परन्तु उस युवक सज्जन का है, जो सुखान्त नाटक के प्रेमी के समान उसके पीछे खड़ा था।

"मूर्ख कहीं की!" मेरे पिता ने कहा, "तुम्हें इतना न शरमाना चाहिये। यह तुम्हारा पति है।"

"एडमण्ड!" मैं चिल्ला उठी और उसकी ओर आलिङ्गन करने के लिये बढ़ी।

इसके बाद मैं फिर पीछे हटी। वह कितना खूबसूरत है! मैं बहुत खुश हुई! अन्धी होते हुये भी मैंने विश्वास से प्रेम किया था। जिस बात से इस समय मेरा हृदय धड़क रहा था, वह प्रेम नहीं था। वास्तव में वह तो उस कुलीन मानव की कुलीनता से फूल रहा था। उसने सब को यह आज्ञा दे रखी थी कि वह उसे कुरूप कहे। इसका उद्देश्य केवल मुझे मेरी नेत्रहीनता में सन्तोष कराना था।

एडमण्ड मेरे घुटनों पर गिर पड़ा। अम्माँ ने मुझे अपने आँसू पोंछते हुये उसकी गोद में बिठा दिया।

"तुम कितनी सुन्दर हो" मेरे पति ने आनन्द में मग्न होकर मुझसे कहा।

"नारसिस!" मैंने शरम से गरदन झुकाते हुये उसको जवाब दिया।

"नहीं, जिस समय मैं अकेला तुम्हारा दर्पण था, मैं तुमसे सदा यही कहा करता था — और देखो! यहाँ उपस्थित जितने मेरे साथी हैं तुमसे झूठ कहते हैं, इनमें से भी सही नहीं है। ये कह रहे हैं कि मैं सही हूँ।"

झील का अलिन्द

लेखक—थियोफ़ाइल गाटियर

केन्टन प्रान्त में, शहर से कुछ कोस की दूरी पर, दो धनाढ्य चीनवासी पास ही पास रहते थे। दोनों कोई काम-धन्धा न करते थे। एक का नाम था टाऊँ और दूसरे का काऊँ। काऊँ एक उच्च वैज्ञानिक पद पर आसीन रह चुका था। वह जैस्पर चेम्बर का सदस्य था। काऊँ ने जीवन की निम्न श्रेणी में रह कर भी काफ़ी धन तथा मान-मर्यादा अर्जित कर ली थी।

ये दोनों चीनवासी दूर के रिश्तेदार और प्रेमी मित्र थे। बचपन में अपने पुराने सहपाठियों को एकत्र करने में उन्हें बहुत आनन्द आता था। शरद ऋतु में सन्ध्या समय, वे अपनी कूँचियों को काली स्याही में डुबो कर फूलदार काग़ज़ के मोम-कप्पड़ पर, चलाया करते थे। शराब के छोटे-छोटे प्याले पीते समय वे पुष्पों की सुन्दरता पर कविता भी रचा करते थे। दोनों के स्वभाव में पहिले तो कोई विषमता नहीं पाई जाती थी; परन्तु आयु बढ़ने के साथ ही साथ उनके स्वभाव भी एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न होते गये। इस प्रकार, एक बादाम के वृक्ष की शाखा दो उपशाखाओं में विभाजित हो गई, यद्यपि वे मूलतः एक ही थीं। ऊपर जाकर वृक्ष की चोटी पर वे इस प्रकार बिल्कुल अलग-अलग हो गईं कि जहाँ एक, तमाम बगीचे में अपनी दुर्गन्ध बिखेरती, वहीं दूसरी, दीवाल के बाहर अपने पुष्पों का पराग बरसाती थी।

साल ब साल टाऊँ के स्वभाव में गम्भीरता आने लगी। उसकी तोंद शान से फूल उठी। उसकी ठुड्डी, तेहरी झोल खाकर बड़ी शान

वह बग़ीचा दे देना कितना कठिन काम है, जिसको आपने स्वयं लगाया हो; जहाँ आपने लचकदार वृक्षों, आडू के वृक्षों, और बेर के वृक्षों का बीजारोपण किया हो और जहाँ पर प्रति बसन्त ऋतु में आपने शाहदाना के पुष्पों को मुकुलित और प्रस्फुटित होते हुए देखा हो। इनमें से प्रत्येक वस्तु मनुष्य के हृदय में रेशम के सूत्र से भी अधिक सुन्दर और महीन बन कर स्थापित हो जाती है और उसे मोहाभिभूत किया करती हैं और तब एक लोहे की साँकल के समान इसका तोड़ना कठिन हो जाता है।

जिस समय टाऊँ और काऊँ में मित्रता थी, उस समय उन दोनों ने एक छोटी झील के किनारे, जो दोनों की जायदादों के लिये शामिल-शरीक समझी जाती थी, अपने-अपने बग़ीचे में एक-एक ऐसी इमारत बनवायी थी जिसके आलिन्द पर से प्रेम-पूर्ण सम्भाषण करते समय, कुकुरमुत्ता के आकार के चीनी हुक्के से जली हुई अफ़ीम के गुल गिराने में उन्हें अपार आनन्द आता था। परन्तु झगड़ा होने के बाद उन्होंने एक दीवाल बनवा ली थी, जिससे झील दो बराबर-बराबर हिस्सों में विभाजित हो गई थी। चूँकि झील अधिक गहरी थी, अतः तख्तों के सहारे एक दीवाल इस प्रकार खड़ी की गई थी कि नीचे की तरफ़ जल-सतह पर वह एक महराब-जैसी बन गई थी। इन महराबों के नीचे अलिन्द की लम्बी काँपती हुई परछाईं को अपने आँचल में समेटे हुये पानी बहता रहता था।

ये इमारतें तिमंज़ला थीं। इनके छत पीछे की ओर थे। छप्पर मुड़े हुये और लकड़ी के जूते की नोक के आकार के समान कोणों पर झुके हुये थे। इन पर, तालाब की मछलियों के पेट पर आच्छादित चोइंटा के समान गोल और चमकीले खपरैल छाये हुये थे। प्रत्येक ढालू स्थान पर अजगर तथा लता-पुञ्ज के आकार के उभरे हुये चित्र बने थे। लाल वारनिश से रंगे हुये खम्भों का सम्बन्ध खम्भों और

चौरस रेशम, जिन पर सुन्दर फूल और बेल-बूटों की चित्रकारी थी, प्रत्येक कमरे के कोनों में और टेबिलों पर रखे हुये थे। वे दर्पण के समान प्रतिबिम्बित हो रहे थे। वहाँ दंत-खुदनी, पंखे, आबनूस के हुक्के, संगसिमाक के पत्थर, ब्रुश तथा लिखने की सारी सामग्री मौजूद थी। कृत्रिम चट्टानें, जिनकी दराज़ो में लचीली शाखाओं के वृक्ष तथा अखरोट के वृक्षों की जड़ें घुस गई थीं,—मानो ये वृक्ष इस मनोमोहक कारीगरी के लिये ही खड़े किये गये थे।

लचीले वृक्षों के सोने के समान रेशे और चाँदी के समान गुच्छे ऊँची चट्टानों से जल की सतह तक फैले हुए बड़े मनोमोहक प्रतीत होते थे। इनके साथ ही साथ गुम्बज के उज्ज्वल रंग, रंग-बिरंगे लता-पुंज के बीच चमक रहे थे।

निर्मल जल के भीतर, सुनहले पर्त्त की नीली मछलियाँ गिरोहचन्दी के साथ क्रीड़ा कर रही थीं। सुन्दर बदकों के झुंड के झुंड जिनकी गरदन हरित मणि के समान थी, सभी दिशाओं में विहार कर रहे थे। विशाल कमल के बड़े-बड़े पत्ते निर्बलता-पूर्वक, इस छोटी-सी झील के हीरा-जैसे पारदर्शक पानी के नीचे फैले हुए थे। ज़मीन के अन्दर के सोते से इनका पोषण होता था। मध्यवर्ती भाग को छोड़ कर जिसके पेंदे में चाँदी के समान असाधारण सुन्दर रेत भरी हुई थी, और जहाँ निकलते हुए सोतों के उभार से, किसी भी प्रकार के उद्भिज पौधों की जड़ ही न जम सकती थी, झील का सारा शेष भाग, अत्यन्त सुहावने हरे मखमली कालीन से आच्छादित था, जो साल के बारहों महीने बराबर लहलहाया करता था।

दोनों पड़ोसियों की पारस्परिक शत्रुता के कारण यदि इस झील के बीच में भद्दी दीवाल न खड़ी कर दी गई होती, तो समस्त स्वर्गीय संसार में, जो विश्व के तीन चौथाई से अधिक भाग में फैला हुआ

है, इससे अधिक सुन्दर और आनन्द-प्रद बगीचा निस्सन्देह कहीं भी न मिलता।

प्रत्येक मकान-मालिक अपने पड़ोसी की थोड़ी-बहुत ज़मीन दबा कर ही अपनी स्थावर सम्पत्ति को बढ़ा लिया करता है; परन्तु यह काम आदमी को देख कर ही करना पड़ता है। किसी भी बुद्धिमान आदमी को जो कि अपने जीवन के अन्त काल को, प्राकृतिक सौन्दर्योपासना तथा काव्य के आनन्द में व्यतीत कर रहा हो, इससे बढ़ कर शान्ति-प्रद और पावन स्थान अन्यत्र कहीं नहीं मिल सकता था। इसलिये इन लोगों ने ऐसा कोई काम नहीं किया।

टाऊँ और काऊँ अपने झगड़े के फल स्वरूप केवल एक दीवार का दृश्य ही देख सकते थे। इन लोगों ने एक दूसरे को, अतिन्द्य के आनन्दप्रद दृश्य को निहारने से, वंचित कर दिया था। परन्तु उनको यह जान कर सन्तोष था कि उन्होंने एक दूसरे को हानि पहुँचा दी है।

इस प्रकार की परिस्थिति कई वर्षों तक बनी रही। एक दूसरे के मकानों को जाने वाले मार्गों पर बिच्छू के पेड़ तथा अन्य छोटे-छोटे पेड़ उग आये थे। कँटीली झाड़ियों की शाखायें एक-दूसरे में उलझ रही थीं। ऐसा प्रतीत होता था कि वे इनके सभी रास्ते बन्द कर देना चाहती थीं। जान पड़ता था कि पौधे भी उस झगड़े से भली-भाँति परिचित थे, जिसके कारण ये दोनों पुराने मित्र आज एक दूसरे के विरोधी हो गये थे और वे भी इनके झगड़े में शरीक होकर इन्हें अधिक से अधिक दूर कर देने की चेष्टा कर रहे थे।

इसी समय टाऊँ और काऊँ दोनों की स्त्रियों ने एक-एक सन्तान प्रसव की। श्रीमती टाऊँ एक सुन्दर कन्या की माता बनीं और श्रीमती काऊँ को ईश्वर ने सुन्दरतम पुत्र की माता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस आनन्दप्रद घटना से दोनों मकानों में बड़ा उल्लास हुआ।

दोनों ने एक-दूसरे का कुछ भी ख़्याल नहीं किया। यद्यपि इन दोनों की ज़ायदाद एक-दूसरे से मिली हुई थी, तथापि ये दोनों चीन-निवासी एक-दूसरे से इतने दूर रहते थे, मानो उन्हे पीली नदी अथवा बड़ी दीवाल ने पृथक कर दिया हो।

लड़के का नाम चिन-सिंग अर्थात् मोती और लड़की का नाम जूकियाँ अर्थात् सूर्यकान्त था। उनकी सर्वाङ्ग सुन्दरता को देखते हुये उनके नामों का यह चुनाव सार्थक और उचित ही था। ज्योंही वे दोनों चलने के योग्य हुये, उस दीवाल के कारण जिसने झील को काट कर दो हिस्सों में विभाजित कर दिया था, उनको बाहरी चित्ताकर्षक दृश्य न दीख सका। वे अपने-अपने माता-पिता से पूछते कि इस आड़ के पीछे जो जल-सतह के मध्य में अजीब ढंग से खड़ी कर दी गई है, क्या है और यह ऊँचा वृक्ष किसका है जिसकी चोटियाँ यहाँ से दिखलाई पड़ रही हैं। उन्हें यह बतला दिया जाता कि यह मकान एक अनोखे, झक्की और घमण्डी आदमी का है, जो बिल्कुल मिलनसार नहीं है और ऐसे दुष्ट पड़ोसी से अलग रहने के लिये ही यह दीवाल खड़ी की गई है।

बच्चों के लिये यह क़ैफ़ियत काफ़ी थी। वे दीवाल देखने के आदी हो गये और उनको उसमें अब ज़रा भी दिलचस्पी न रह गई। जूकियाँ सुन्दरता तथा प्रवीणता में दिन-दिन बढ़ने लगी। स्त्रियोचित सभी कामों में वह बहुत प्रवीण हो गई। दस्तकारी का काम वह इतनी होशियारी से करती कि उसका कोई मुक़ाबिला न कर पाता। उसने अतलस पर जो तितलियाँ बनाई थीं, वे सजीव और उड़ती हुई-सी प्रतीत होती थीं। केनवास पर उसके द्वारा बनाये गये पक्षियों को देखकर आप यह बात शपथ-पूर्वक कह उठते कि आपने उन पक्षियों का गाना भी सुन लिया है। वह जिन पुष्पों को काढ़ती थी, उन पुष्पों की सुगंध को सूँघने के लिये कई दर्शकों की नाक चित्र-यवनिका पर

के बाद स्त्रियाँ मिष्ठान्न और संतरे भर दिया करती थीं। किसी भी अन्य नवयुवक की इतनी दावतें, प्रतीक्षा और मान नहीं किया गया था, जितना कि इसका किया गया; परन्तु ऐसा प्रतीत होता था कि उसके हृदय में प्रेम के कोई अंकुर फूट नहीं पाये हैं। इसका कारण हृदय-हीनता न थी। उसके हज़ारों व्यवहारों से साफ़ ज़ाहिर होता था कि चिन-सिंग का हृदय अत्यन्त कोमल है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता था कि उसे पूर्व-जन्म की अपनी किसी प्रियतमा का स्मरण हो आया हो और वह उसे अपने इस जीवन में भी फिर से पाने का प्रयत्न कर रहा हो। उसके साथ विवाह करने के लिये आई हुई युवतियों के सौन्दर्य का अनेक प्रकार से वर्णन किया जाता था, कोई लचीले वृक्ष के पत्तों के आकार की भौंहें बतलाती, कोई अदृष्ट पैरों की प्रशंसा करती और कोई परदार सर्प की कमर से अपनी कमर की तुलना करती; परन्तु यह सब आत्म-प्रशंसा उसके सामने बेकार जाती। वह अनमनी मुद्रा से सुनता रहता। ऐसा जान पड़ता कि वह किसी दूसरी ही बात पर विचार कर रहा है।

इधर जू-कियाँ भी विवाह के सम्बन्ध में काफ़ी खिंची रहती थी। उसके साथ विवाह करने वाले जितने लोग आये, उसने उन सब को निराश लौटा दिया। कभी उसने अशिष्टता से अभिवादन किया, तो कभी उसने अपनी पोशाक ही सावधानी से नहीं पहिनी। एक के लिखने का तरीक़ा भद्दा और साधारण था, तो दूसरा कविता की पुस्तक से अनभिज्ञ था अथवा उसने पद में ग़लती कर दी थी। सारांश यह कि उन सब में कोई न कोई ऐब ज़रूर निकल आता था। जू-कियाँ उनके ऐसे मजाकिया चित्र खींचा करती थी कि उन्हें देख कर उनके माता-पिता हँस पड़ते थे। ऐसे विवाह के इच्छुकों को, जो समझते थे कि अब हम पूर्वीय अलिन्द की ड्योढ़ी पर पहुँच गये हैं, वहीं नम्रता के साथ बाहर जाने का दरवाज़ा बतला दिया जाता था।

से झुक जाया करती थी। लड़कियों की बुद्धिमानी की यहीं तक इति-
नहीं था। उसको एक [illegible] और सदाचार के पाँचों नियम कु-
याद थे। किसी ने रेशमी कागजों पर इससे अधिक सफ़ाई और
सुन्दरता के साथ किसी को, किसी ने चित्र बनाते हुये नहीं देखा था
अक्षर सुन्दर थे। उसकी कलाई की अपेक्षा तेज नहीं चल सकते थे
जिस समय कागज अथवा कपड़े पर वह अपने ब्रश से काली स्या-
लगाती थी, तब [illegible] का आभास होने लगता था। कविता की सब
शैलियाँ उसे मालूम थीं। एक युवती बाला को स्वभावतः जिन-जिन
विषयों का विचार उत्पन्न हो सकता है, वह उन सभी विषयों पर उन
भावों को लेकर कविता रचा करती थी। अबाबील के प्रत्यागमन
शरद् ऋतु के जलाशय, ओस और गुलबहार जैसे विषयों पर वह कवि-
लिखा करती थी। बहुत से शिक्षित पुरुष जो अपने को ऐसे
बातों पर बोलने का अधिकारी समझते हैं, उनमें भी इस लड़की
समता की योग्यता नहीं पाई जाती थी।

चिन-सिंग ने भी अध्ययन द्वारा अपनी काफ़ी उन्नति की थी।
प्रत्येक परीक्षा के उत्तीर्ण विद्यार्थियों की सूची में उसका नाम सब
पहला रहता था। यद्यपि वह अल्पवयस्क था, फिर भी वह कालेज
प्रतिनिधि के योग्य हो गया था। प्रत्येक माता का यही विचार होता
यह बालक, जो विज्ञान में इतना अधिक दक्ष है, वही सब से उत्त-
दामाद बनने के योग्य है। सब लोग यही सोचा करते कि वह सर्वो-
[illegible] प्राप्त करने में समर्थ होगा। चिन-सिंग शादी के दलालों से प्र-
सदा से [illegible] देता कि अभी बहुत जल्दी है और वह अभी अ-
समय तक अपनी स्वतंत्रता सुरक्षित रखना चाहता था। उसने एक
बाद एक, हान-लिंग, [illegible], ओमा, पोको तथा अन्यान्य
सुन्दर युवतियों को इस सम्बन्ध में अपनी अस्वीकृति दे दी। [illegible]
[illegible] के बीच में, जिनकी गाड़ी में, [illegible] का

के बाद स्त्रियाँ मिष्ठान्न और संतरे भर दिया करती थीं। किसी भी अन्य नवयुवक की इतनी दावतें, प्रतीक्षा और मान नहीं किया गया था, जितना कि इसका किया गया; परन्तु ऐसा प्रतीत होता था कि उसके हृदय में प्रेम के कोई अंकुर फूट नहीं पाये हैं। इसका कारण हृदय-हीनता न थी। उसके हज़ारों व्यवहारों से साफ़ ज़ाहिर होता था कि चिन-सिंग का हृदय अत्यन्त कोमल है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता था कि उसे पूर्व-जन्म की अपनी किसी प्रियतमा का स्मरण हो आया हो और वह उसे अपने इस जीवन में भी फिर से पाने का प्रयत्न कर रहा हो। उसके साथ विवाह करने के लिये आई हुई युवतियों के सौन्दर्य का अनेक प्रकार से वर्णन किया जाता था, कोई लचीले वृक्ष के पत्तों के आकार की भौंहें बतलाती, कोई अदृष्ट पैरों की प्रशंसा करती और कोई परदार सर्प की कमर से अपनी कमर की तुलना करती; परन्तु यह सब आत्म-प्रशंसा उसके सामने बेकार जाती। वह अनमनी मुद्रा से सुनता रहता। ऐसा जान पड़ता कि वह किसी दूसरी ही बात पर विचार कर रहा है।

इधर जू-कियाँ भी विवाह के सम्बन्ध में काफ़ी खिंची रहती थी। उसके साथ विवाह करने वाले जितने लोग आये, उसने उन सब को निराश लौटा दिया। कभी उसने अशिष्टता से अभिवादन किया, तो कभी उसने अपनी पोशाक ही सावधानी से नहीं पहिनी। एक के लिखने का तरीक़ा भद्दा और साधारण था, तो दूसरा कविता की पुस्तक से अनभिज्ञ था अथवा उसने पद में ग़लती कर दी थी। सारांश यह कि उन सब में कोई न कोई ऐब ज़रूर निकल आता था। जू-कियाँ उनके ऐसे मज़ाकिया चित्र खींचा करती थी कि उन्हें देख कर उसके माता-पिता हँस पड़ते थे। ऐसे विवाह के इच्छुकों को, जो समझते थे कि अब हम पूर्वीय अलिन्द की ड्योढ़ी पर पहुँच गये हैं, बड़ी नम्रता के साथ बाहर जाने का दरवाज़ा बतला दिया जाता था।

सोचा कि शायद यह विरोध उनके पूर्व संकल्प के कारण ही हो रहा हो; परन्तु चिन-सिंग ने किसी कन्या के साथ प्रेम नहीं किया था और जू-कियाँ के कमरे के बाहर, जाली के ऊपर और नीचे कोई नवयुवक कभी गया और आया नहीं था। इस सम्बन्ध में दोनों परिवारों के कुछ समय के अवलोकन के पश्चात् दोनों और इसके विपरीत विश्वास हो गया था। श्रीमती टाऊँ और श्रीमती काऊँ को पक्का विश्वास था कि स्वप्नों के संकेत के अनुसार उनके बच्चों का निश्चय ही भविष्य में कोई अभूतपूर्व स्वर्ण-संयोग प्राप्त होगा।

दोनो महिलायें अलग-अलग फ़ो के मन्दिर में बौद्ध भिक्षु के पास सलाह लेने के लिये गईं। मन्दिर की इमारत भव्य थी। उसके छत पर खुदाव था। स्थान-स्थान पर गोल खिड़कियाँ लगी हुई थीं, जिन पर सोना और वारनिश चमक रहा था। पूजा की तख्तियों पर पलास्तर किया हुआ था। जगह-जगह पर मस्तूल शोभा दे रहे थे। इन पर रेशम के झंडे लटक रहे थे, जिन पर अजगर और दैत्यों के चित्र बने हुये थे और जिन पर बहुत मोटे और पुराने वृक्षों की छाया प्रतिबिम्बित हो रही थी। कलई चढ़े हुये काग़ज़ों और सुगन्धित वस्तुओं को मूर्त्ति के सामने जलाने के बाद, भिक्षु ने श्रीमती टाऊँ से कहा कि सूर्यकान्त और मोती का मेल अवश्य हो जाना चाहिये और उसने श्रीमती काऊँ से यह बतलाया कि मोती का सूर्यकान्त से मेल अवश्य हो जाना चाहिये, और इस मेल के होते ही उनकी सारी आपत्तियाँ दूर हो जावेंगी। इस गूढ़ उत्तर से दोनों महिलाओं को सन्तोष न हुआ। वे दोनों अलग-अलग मार्ग से अपने-अपने घर चली गईं। इन लोगों ने मन्दिर में भी एक-दूसरे को नहीं देखा। उनकी चिन्ता अब पहिले से और भी अधिक बढ़ गई।

एक दिन ऐसा हुआ कि जू-कियाँ अलिन्द पर ठीक उस समय झुकी हुई बैठी थी, जिस समय कि चिन-सिंग भी दीवाल की ओट

निदान दोनों बच्चों के माता-पिता अपने-अपने बच्चों द्वारा, विवाह की इच्छा से आये हुए पात्रों को, लगातार नामंजूर करते हुए देख कर घबड़ा उठे। श्रीमती टार्क और श्रीमती काँऊ के मन में विवाह के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार के सन्देह न थे। वे इस विषय में दिन में जो कुछ भी सोचती थीं, उन्हीं का रात में स्वप्न देखा करती थीं। एक स्वप्न का उन पर सब से अधिक प्रभाव पड़ा। श्रीमती काँऊ ने स्वप्न में अपने पुत्र के वक्षःस्थल पर एक सूर्यकान्त मणि को देखा। वह इतने आश्चर्य-जनक तरीक़े से पालिश की गई थी कि वह मणि के समान चमकती थी। श्रीमती टार्क का यह स्वप्न दिखाई पड़ा कि उनकी कन्या ने फ़ारिस देश के सर्वोत्कृष्ट और बेशक़ीमती मोतियों की माला को अपने गले में पहिन लिया है। इन दोनों स्वप्नों का क्या अर्थ था? क्या श्रीमती काउँ के स्वप्न से यह भासित होता था कि चिन-लिंग को इम्पीरियल एकेडमी द्वारा मान प्राप्त होगा? क्या श्रीमती टार्क के स्वप्न का यह अर्थ था कि लड़कियों को बगीचे के अन्दर अथवा चूल्हे की ईंटों के नीचे कोई खज़ाना मिलेगा? इस प्रकार के अर्थ अस्वाभाविक न थे। बहुत से आदमी यही सोच कर सन्तुष्ट हो जाते; परन्तु इन भद्र महिलाओं ने अपने-अपने स्वप्नों में वे संकेत देखे थे, जो अति उच्च विवाहों के समय हुआ करते हैं। उनके बच्चों की, इसी प्रकार की ताजमहल सी शादी, बहुत जल्द होने जा रही थी। दुर्भाग्यवश चिन-लिंग और लड़कियाँ अपने निश्चय पर अधिकाधिक डटे रहे। इसका परिणाम यह हुआ कि इस सम्बन्ध की सभी भविष्य वाणियाँ असत्य सिद्ध होने लगीं।

यद्यपि काउँ और टार्क को कोई स्वप्न न दिखलाई पड़े थे; पर वे भी बच्चों की ज़िद को देख कर चकित हो गये थे।

साधारणतया विवाह एक ऐसा संस्कार होता है, जिसमें [illegible] इतना [illegible] विशेष प्रदर्शित नहीं करते। उन [illegible]

सोचा कि शायद यह विरोध उनके पूर्व संकल्प के कारण ही हो रहा हो; परन्तु चिन-सिंग ने किसी कन्या के साथ प्रेम नहीं किया था और जू-कियाँ के कमरे के बाहर, जाली के ऊपर और नीचे कोई नवयुवक कभी गया और आया नहीं था। इस सम्बन्ध में दोनों परिवारों के कुछ समय के अवलोकन के पश्चात् दोनों ओर इसके विपरीत विश्वास हो गया था। श्रीमती टाऊँ और श्रीमती काऊँ को पक्का विश्वास था कि स्वप्नों के संकेत के अनुसार उनके बच्चों का निश्चय ही भविष्य में कोई अभूतपूर्व स्वर्ण-संयोग प्राप्त होगा।

दोनो महिलायें अलग-अलग फ़ो के मन्दिर में बौद्ध भिक्षु के पास सलाह लेने के लिये गईं। मन्दिर की इमारत भव्य थी। उसके छत पर खुदाव था। स्थान-स्थान पर गोल खिड़कियाँ लगी हुई थीं, जिन पर सोना और वारनिश चमक रहा था। पूजा की तख्तियों पर पलास्तर किया हुआ था। जगह-जगह पर मस्तूल शोभा दे रहे थे। इन पर रेशम के झंडे लटक रहे थे, जिन पर अजगर और दैत्यों के चित्र बने हुये थे और जिन पर बहुत मोटे और पुराने वृक्षों की छाया प्रतिबिम्बित हो रही थी। कलई चढ़े हुये काग़ज़ों और सुगन्धित वस्तुओं को मूर्त्ति के सामने जलाने के बाद, भिक्षु ने श्रीमती टाऊँ से कहा कि सूर्यकान्त और मोती का मेल अवश्य हो जाना चाहिये और उसने श्रीमती काऊँ से यह बतलाया कि मोती का सूर्यकान्त से मेल अवश्य हो जाना चाहिये, और इस मेल के होते ही उनकी सारी आपत्तियाँ दूर हो जावेंगी। इस गूढ़ उत्तर से दोनो महिलाओं को सन्तोष न हुआ। वे दोनों अलग-अलग मार्ग से अपने-अपने घर चली गईं। इन लोगों ने मन्दिर में भी एक-दूसरे को नहीं देखा। उनकी चिन्ता अब पहिले से और भी अधिक बढ़ गई।

एक दिन ऐसा हुआ कि जू-कियाँ अलिन्द पर ठीक उस समय झुकी हुई बैठी थी, जिस समय कि चिन-सिंग भी दीवाल की ओट

में झुका हुआ था। समय सुहावना था। आकाश पर बादल का एक भी टुकड़ा नहीं था। वृक्ष के पत्तों को हिलाने लायक भी हवा नहीं चल रही थी। झील की सतह दर्पण से भी अधिक सम थी। जिस समय क्रीड़ा करती हुई कोई मछली छलाँग मारती, तो जल में गोलाकार-सा बन कर शीघ्र ही अदृष्ट हो जाता था। तट पर लगे हुए वृक्षों की छाया जल पर इतनी साफ़ पड़ रही थी कि असली और प्रतिबिम्ब को पहिचानने में हिचकिचाहट-सी जान पड़ती थी। ऐसा जान पड़ता था कि जल के अन्दर एक जंगल लगा हुआ है और उसके वृक्षों की जड़ें उनके समान ही वृक्षों के समूह की जड़ों से सम्बन्धित हैं। जान पड़ता था कि दुखद प्रेम के कारण जंगल का जंगल पानी के अंदर डूब गया है। मछलियाँ पत्तों पर तैरती हुई दिखलाई पड़ रही थीं और पक्षी पानी पर उड़ रहे थे। जू-कियाँ इस आश्चर्यजनक प्रतिबिम्ब को देख कर आनन्दित हो रही थी। जिस समय उसने दीवाल से झील की ओर निहारा, सामने के अलिन्द की परछाईं उसे दिखलाई पड़ी, जो महाराज के नीचे वहाँ तक फैली हुई थी।

उसने प्रतिबिम्बों के इस निराले खेल पर इसके पहले कभी भी ध्यान नहीं दिया था। इस खेल को देख कर उसे आश्चर्य हुआ और दिलचस्पी भी। उसने लाल खम्भों, खुरदरे गेयेंदार चित्र कढ़े हुए ऊनी नम्दों, फूलों के पौधों और कलईदार वायुगति-दर्शक यंत्रों को पहिचान लिया। यदि सूर्य की किरणों के कारण तख्तियाँ उलट न गई होतीं, तो वह उन पर लिखे हुए वाक्यों को भी पढ़ लेती। परन्तु सब से अधिक आश्चर्य उसको यह देख कर हुआ कि उसके समान ही छज्जे में झुका हुआ एक आकार उसे दिखलाई पड़ रहा है। वह आकृति और उसकी आकृति दोनों आपस में इतना अधिक मिलती जुलती थीं कि यदि वह झील के दूसरे छोर से न दिखलाई देती, तो वह उसे स्वयं अपनी ही परछाईं समझ लेती। वह प्रतिबिम्ब ह

परछाईं थी। यदि आपको इस बात का आश्चर्य जान पड़ रहा हो कि लड़का किस प्रकार लड़की समझा जा सकता है, तो मैं आपको यह भी बतला दूँगा कि चिन-सिंग ने अपना टोप, गरमी के कारण उतार लिया था और वह बिना डाढ़ी वाला नवयुवक था। उसकी कोमल मुखाकृति, मोहक रूप-राशि और उज्ज्वल आँखों से सहज ही भ्रम उत्पन्न हो सकता था; परन्तु वह अधिक समय तक नहीं टिक सकता था।

जू-कियाँ ने, अपने हृदय में होने वाले आलोड़न से तुरन्त जान लिया कि पानी में जिसकी छाया पड़ रही है, वह लड़की नहीं है। उस समय तक उसकी यही धारणा थी कि इस धरातल पर उसके योग्य वर कहीं नहीं है। कई मर्तबा उसका यह विचार हुआ कि काश, फरगना के एक घोड़े पर उसका अधिकार होता, जो दिन भर में तीन हज़ार मील चल सकता, तो वह अपने काल्पनिक स्थान में पति ढूँढ़ने के लिये चली जाती। वह सोचा करती कि संसार में उसके समान रूपवती कोई दूसरी स्त्री नहीं है और उसे वैवाहिक जीवन के आनन्द का अनुभव कभी प्राप्त न होगा। 'कभी नहीं' वह स्वयं अपने से कहा करती, 'डक-वीड और अलास्मा को मैं अपनी पैतृक वेदी पर समर्पित कर सकूँगी। मैं शहतूत और एल्म वृक्षों के मध्य में अकेली ही प्रवेश करूँगी!'

लेकिन पानी के अन्दर उस प्रतिबिम्ब को देख कर वह समझ सकी कि उसकी सुन्दरता के अनुरूप एक बहिन अथवा भाई और भी है। कुपित होने के स्थान में वह बहुत सुखी हुई। अपने को अनुपम सुन्दरी समझने का मद तुरन्त ही प्रेम के रूप में परिवर्तित हो गया, क्योंकि इस समय जू-कियाँ का हृदय सदा के लिये किसी प्रेम-सूत्र में बँध गया था। केवल एक चितवन, प्रत्यक्ष नहीं, वह भी अप्रत्यक्ष, केवल प्रतिबिम्ब मात्र ही, इस बात के लिये काफ़ी था। इसी कारण उसके उतावली करने की बात नहीं कही जा सकती। किसी युवक के

जिसकी परछाईं अभी-अभी उसने पानी में देखी थी। उसने पिता के इस प्रस्ताव को एकदम अस्वीकार कर दिया।

"अधम बालक!" वृद्ध मनुष्य ने चिल्ला कर कहा, "अगर तू अपनी ज़िद पर इसी प्रकार डटा रहा, तो मुझे चीनी अफ़सरों से प्रार्थना करनी पड़ेगी कि वे तुझे उसे क़िले के अन्दर बन्द कर दें, जहाँ योरुप के बर्बर लोग रहा करते हैं। वहाँ से मनुष्य केवल पर्वतों को देख सकता है, जिनके सिर पर बादलों की टोपी लगी हुई है, और शैतानों के राक्षसीय आविष्कारों द्वारा वे धुआँ का वमन करते हैं और चक्रों पर घूमा करते हैं। उस स्थान पर रहने के बाद ही तुझे मेरे प्रस्ताव पर विचार करने और संशोधन करने का अवसर मिलेगा!"

इन धमकियों से चिन-सिंग अधिक भयभीत न हुआ। उसने जवाब दिया—"अब जो भी पहली स्त्री मेरे पास आवेगी, उसे मैं अपना लूँगा; परन्तु शर्त्त यह रहेगी कि वह आपके द्वारा अभी बतलाई हुई स्त्री न होनी चाहिये।"

दूसरे दिन, ठीक उसी समय वह अलिन्द पर गया और पहिले दिन की सन्ध्या के समान झील पर झुक गया। कुछ मिनट के बाद उसने पानी के अंदर बढ़ते हुये जू-कियाँ के प्रतिबिम्ब को देखा। वह पानी के अन्दर डूबे हुये गुलदस्ते-जैसी मोहक जान पड़ती थी। नवयुवक ने अपना हाथ अपने हृदय पर रक्खा और अपनी अँगुलियों के अग्रिम भाग का चुम्बन कर, संकेत से इन चुम्बनों को उसने प्रतिबिम्ब के पास पहुँचाया। चुम्बन भेजते समय उसकी चितवन में दया और प्रेम हिलोरें ले रहा था।

झील के जल पर अनार-कली के समान प्रेमपूर्ण मुस्कान प्रस्फुटित हो उठी। इसे देख कर चिन सिंग को विश्वास हो गया कि अज्ञात सुन्दरी भी उसे चाहती है। परन्तु कोई भी मनुष्य प्रतिबिम्ब के साथ—जिसका शरीर अदृश्य है, अधिक समय तक वार्तालाप नहीं कर

जिसकी परछाईं अभी-अभी उसने पानी में देखी थी। उसने पिता के इस प्रस्ताव को एकदम अस्वीकार कर दिया।

"अधम बालक!" वृद्ध मनुष्य ने चिल्ला कर कहा, "अगर तू अपनी ज़िद पर इसी प्रकार डटा रहा, तो मुझे चीनी अफ़सरों से प्रार्थना करनी पड़ेगी कि वे तुझे उसे क़िले के अन्दर बन्द कर दें, जहाँ योरप के बर्बर लोग रहा करते हैं। वहाँ से मनुष्य केवल पर्वतों को देख सकता है, जिनके सिर पर बादलों की टोपी लगी हुई है, और शैतानों के राक्षसीय आविष्कारों द्वारा वे धुआँ का वमन करते हैं और चक्रों पर घूमा करते हैं। उस स्थान पर रहने के बाद ही तुझे मेरे प्रस्ताव पर विचार करने और संशोधन करने का अवसर मिलेगा!"

इन धमकियों से चिन-सिंग अधिक भयभीत न हुआ। उसने जवाब दिया—"अब जो भी पहली स्त्री मेरे पास आवेगी, उसे मैं अपना लूँगा; परन्तु शर्त्त यह रहेगी कि वह आपके द्वारा अभी बतलाई हुई स्त्री न होनी चाहिये।"

दूसरे दिन, ठीक उसी समय वह अलिन्द पर गया और पहिले दिन की सन्ध्या के समान झील पर झुक गया। कुछ मिनट के बाद उसने पानी के अंदर बढ़ते हुये जू-कियाँ के प्रतिबिम्ब को देखा। वह पानी के अन्दर डूबे हुये गुलदस्ते-जैसी मोहक जान पड़ती थी। नवयुवक ने अपना हाथ अपने हृदय पर रक्खा और अपनी अँगुलियों के अग्रिम भाग का चुम्बन कर, संकेत से इन चुम्बनों को उसने प्रतिबिम्ब के पास पहुँचाया। चुम्बन भेजते समय उसकी चितवन में दया और प्रेम हिलोरें ले रहा था।

झील के जल पर अनार-कली के समान प्रेमपूर्ण मुस्कान प्रस्फुटित हो उठी। इसे देख कर चिन-सिंग को विश्वास हो गया कि अज्ञात सुन्दरी भी उसे चाहती है। परन्तु कोई भी मनुष्य प्रतिबिम्ब के साथ—जिसका शरीर अदृश्य है, अधिक समय तक वार्तालाप नहीं कर

में लिख कर भेजा। युवती-जनित स्वाभाविक नम्रता के साथ पत्र को देख कर इस बात का सुगमता से पता चलाया जा सकता था कि वह भी चिन-सिंग को प्यार करती थी। पत्र के नीचे दस्तखत को पढ़ कर नवयुवक आश्चर्य से चीख उठा। "सूर्यकान्त ! क्या यह वही बेश-क़ीमती मणि नहीं है, जिसे मेरी माता ने मेरे वक्षःस्थल पर चमकते हुए देखा था ? निश्चयात्मक रूप से मुझे इसी मकान में जाना चाहिये, क्योंकि वहीं मेरी प्रियतमा—जिसका दिग्दर्शन पवित्र आत्माओं द्वारा रात के समय स्वप्न में कराया गया था, निवास करती है !"

वह ज्योंही उस मकान की ओर बढ़ने लगा, उसको उन झगड़ों का स्मरण हो आया, जिनके कारण दोनों मकान विभाजित किये गये थे और उसे तख्तियों पर लिखे हुये उन सभी निषेधों का भी स्मरण हो आया। उसकी समझ में न आता था कि वह अब क्या करे। उसने श्रीमती काऊँ से सारी कहानी कह सुनाई। इधर जू-कियाँ ने अपना पूरा दास्तान श्रीमती टाऊँ को सुना दिया। दोनों गृहणियों को मोती और सूर्यमणि के नाम निर्णयात्मक से प्रतीत होने लगे। वे दोनों मन्दिर में भिक्षु के पास विचार करने के लिये गईं। पुरोहित ने कहा कि स्वप्नों का यही वास्तविक अर्थ जान पड़ता है। जो लोग स्वप्न के इस असली आशय के विरुद्ध काम करेंगे, उन पर ईश्वर अवश्य कुपित होगा। दोनों माताओं की अनुनय-विनय से प्रभावित होकर और उनके छोटे-छोटे उपहारों से प्रसन्न होकर, भिक्षु ने टाऊँ और काऊँ को समझाने का ज़िम्मा लिया। उसने उन दोनों को वाक्-जाल में इस तरह फँसाया, और वर तथा वधू के वास्तविक जीवन के रहस्य का इस प्रकार उद्घाटन किया कि वे दोनों अस्वीकार न कर सके। इतने अधिक समय के पश्चात् दोनों बिछुड़े हुये पुराने दोस्त मिल गये। इस समय उनकी समझ में न आता था कि वे ज़रा-ज़रा-सी बातों पर कैसे एक-दूसरे के इतने विरोधी हो गये थे। उनको इस बात का भी अनुभव हुआ कि एक-दूसरे के सत्संग के अभाव से उनका कितना ज़बर्दस्त नुक़सान हो चुका है। विवाह हो गया और अब मोती और सूर्यकान्त प्रतिबिम्ब के द्वारा नहीं, बल्कि साक्षात् सम्भाषण कर सकते थे। क्या इस प्रकार उन लोगों का जीवन अधिक सुखी बना ? इस बात को निश्चित रूप से कहने का हमारा साहस नहीं होता, क्योंकि सुख, पानी के अन्दर एक परछाईं के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

में लिख कर भेजा। युवती-जनित स्वाभाविक नम्रता के साथ पत्र को देख कर इस बात का सुगमता से पता चलाया जा सकता था कि वह भी चिन-सिंग को प्यार करती थी। पत्र के नीचे दस्तखत को पढ़ कर नवयुवक आश्चर्य से चीख उठा। "सूर्यकान्त! क्या यह वही बेश-क़ीमती मणि नहीं है, जिसे मेरी माता ने मेरे वक्षःस्थल पर चमकते हुए देखा था? निश्चयात्मक रूप से मुझे इसी मकान में जाना चाहिये, क्योंकि वहीं मेरी प्रियतमा—जिसका दिग्दर्शन पवित्र आत्माओं द्वारा रात के समय स्वप्न में कराया गया था, निवास करती है!"

वह ज्योंही उस मकान की ओर बढ़ने लगा, उसको उन झगड़ों का स्मरण हो आया, जिनके कारण दोनों मकान विभाजित किये गये थे और उसे तख्तियों पर लिखे हुये उन सभी निषेधों का भी स्मरण हो आया। उसकी समझ में न आता था कि वह अब क्या करे। उसने श्रीमती काऊँ से सारी कहानी कह सुनाई। इधर जू-क्रियाँ ने अपना पूरा दास्तान श्रीमती टाऊँ को सुना दिया। दोनों गृहणियों को मोती और सूर्यमणि के नाम निर्णयात्मक से प्रतीत होने लगे। वे दोनों मन्दिर में भिक्षु के पास विचार करने के लिये गईं। पुरोहित ने कहा कि स्वप्नों का यही वास्तविक अर्थ जान पड़ता है। जो लोग स्वप्न के इस असली आशय के विरुद्ध काम करेंगे, उन पर ईश्वर अवश्य कुपित होगा। दोनों माताओं की अनुनय-विनय से प्रभावित होकर और उनके छोटे-छोटे उपहारों से प्रसन्न होकर, भिक्षु ने टाऊँ और काऊँ को समझाने का ज़िम्मा लिया। उसने उन दोनों को वाक्-जाल में इस तरह फँसाया, और वर तथा वधू के वास्तविक जीवन के रहस्य का इस प्रकार उद्घाटन किया कि वे दोनों अस्वीकार न कर सके। इतने अधिक समय के पश्चात् दोनों बिछुड़े हुये पुराने दोस्त मिल गये। इस समय उनकी समझ में न आता था कि वे ज़रा-ज़रा-सी बातों पर कैसे एक-दूसरे के इतने विरोधी हो गये थे। उनको इस बात का भी अनुभव हुआ कि एक-दूसरे के सत्संग के अभाव से उनका कितना ज़बर्दस्त नुक़सान हो चुका है। विवाह हो गया और अब मोती और सूर्यकान्त प्रतिबिम्ब के द्वारा नहीं, बल्कि साक्षात् सम्भाषण कर सकते थे। क्या इस प्रकार उन लोगों का जीवन अधिक सुखी बना! इस बात को निश्चित रूप से कहने का हमारा साहस नहीं होता, क्योंकि सुख, पानी के अन्दर एक परछाईं के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

मार्ग नहीं दिखलाई देते। जिस पर्वत के शिखर पर वेण्डोम के ड्यूकों की प्राचीन गढ़ी के भग्नावशेष लटक रहे थे, केवल उसी स्थान से इस बाड़े पर दृष्टिपात किया जा सकता था। इसको देख कर आपके मन में यही विचार उत्पन्न होगा कि किसी समय जिसका अन्दाज़ नहीं लगाया जा सकता, उस छोटी-सी जगह पर किसी भद्र पुरुष का बहुत अधिक प्रेम था। वह गुलाब और गुल-लाला का शौक़ीन था। इसीलिये उसने यहाँ इनके पौधे लगा रखे थे। सारांश में बाग़बानी का और विशेष रूप से सुन्दर फलों वाले वृक्षों पर उसे अधिक प्रेम था। आपको एक कुञ्ज—कुञ्ज नहीं उसे कुञ्ज का भग्नावशेष कहना चाहिये—यहाँ दिखलाई पड़ेगा। इसके नीचे अभी भी एक टेबिल रखी हुई है, जिस पर समय का कोई भी प्रभाव पड़ा-सा नहीं जान पड़ता। इस बग़ीचे को—जो अब बग़ीचे के नाम से पुकारा नहीं जा सकता—देख कर इस प्रान्त के शान्ति-प्रिय निवासियों के निरानन्दमय जीवन का उसी प्रकार अन्दाज़ा लगाया जा सकता है, जिस प्रकार किसी गुणज्ञ व्यवसायी के समाधिस्थ मृत्यु-लेख को पढ़ कर उसके अस्तित्व का अन्दाज़ लगाया जा सकता है। मन में डेरा डाले हुये विषादयुक्त और शीतल विचार एक दीवाल पर लगी हुई धूप-घड़ी को देख कर सहसा अटक जाते हैं। उस पर ईसाई धर्म-सम्बन्धी यह शिलालेख खुदा हुआ है: 'अल्टिमम कोजिटा।' मकान का छत भयंकर रूप से जर्जरित हो गया है। उसकी झिल-मिलियाँ सदा बन्द रहती हैं। छज्जे पर अबाबील पक्षियों के घोंसले बने हुये हैं और उसके दरवाज़े सदा बन्द रहते हैं। ज़ीने की दरारों में हरे-हरे ऊँचे पौधों की रेखायें-सी खिंची जान पड़ती हैं। लोहे के सभी सामान पर ज़ंग चढ़ा हुआ है। चंद्रमा, सूर्य, शरद्‌ऋतु, ग्रीष्मऋतु तथा बरफ ने लकड़ी को भद्दा किया है, तख़्तों को झुका दिया है और रोग़न को बिगाड़ दिया है।

जनक दृश्य देख कर बहुत आनन्द होता था। क्या भग्नावशेष के अतिरिक्त इसमें और भी कोई बात थी ? इस प्रकार के भग्नावशेषों के साथ अखंड प्रमाणों के कुछ चिन्ह सदा पाये जाते हैं; परन्तु वह मकान अभी भी खड़ा हुआ था। ऐसा प्रतीत होता था कि किसी संहारक हाथ द्वारा उसका धीरे-धीरे विनाश किया जा रहा है। इसका रहस्य, अज्ञात विचार के समान गुप्त है। उसमें चंचलता की झलक तक न दिखलाई पड़ती थी। शाम के समय कई बार मैं बाड़े की तरफ घूमा करता था। इसकी देख-रेख करने वाला कोई नहीं दीख पड़ता था। देखने में यह भयावना-सा जान पड़ता था। इसके आस-पास अहाता घिरा हुआ था। काँटों की परवाह न करते हुये, मैं बिना मालिक के उस बगीचे में जाता। यह रियासत न तो सार्वजनिक और न वैयक्तिक ही जान पड़ती थी। मैं वहाँ घंटों बैठ कर इसके विनाश के सम्बन्ध में विचार किया करता। इस असाधारण दृश्य के रहस्योद्घाटन के अभिप्राय से मैंने कभी किसी से एक प्रश्न तक नहीं किया। वहाँ घूमता हुआ मैं सुन्दर कहानियाँ लिखा करता और इस विषाद के सूक्ष्म विलास पर मैं मोहित हो जाता था।

यदि मुझे इस मकान के प्रति सर्वसाधारण की उदासीनता का पता चल गया होता, तो मेरा काव्य-निर्माण के प्रति वह अकथनीय-भाव कभी न रह जाता, जिसके नशे में मैं वहाँ मतवाला बना रहता था। मुझे इस स्थान पर मानव-जीवन के अनेक आधारों की, जो दुर्भाग्यवश इस समय अंधकारपूर्ण हो गये थे, छाया दिखलाई पड़ती थी। कभी तो वह मुझे बिना पादरी के मठ-सा प्रतीत होता और कभी वह समाधि की उस निस्तब्ध शान्ति के रूप में दिखाई पड़ता, जहाँ मुर्दे अपने मृत्यु-लेख को पढ़ते हुये न जान पड़ें। आज वह कोढ़ी के मकान-सा प्रतीत होता और कल भाग्य की उन तीन देवियों के मकान के समान दिखलाई देने लगता, जो मनुष्य के जन्म, जीवन और मरण

जनक दृश्य देख कर बहुत आनन्द होता था। क्या भग्नावशेष के अतिरिक्त इसमें और भी कोई बात थी ? इस प्रकार के भग्नावशेषों के साथ अखंड प्रमाणों के कुछ चिन्ह सदा पाये जाते हैं; परन्तु वह मकान अभी भी खड़ा हुआ था। ऐसा प्रतीत होता था कि किसी संहारक हाथ द्वारा उसका धीरे-धीरे विनाश किया जा रहा है। इसका रहस्य, अज्ञात विचार के समान गुप्त है। उसमें चंचलता की झलक तक न दिखलाई पड़ती थी। शाम के समय कई बार मैं बाड़े की तरफ घूमा करता था। इसकी देख-रेख करने वाला कोई नहीं दीख पड़ता था। देखने में यह भयावना-सा जान पड़ता था। इसके आस-पास अहाता घिरा हुआ था। काँटों की परवाह न करते हुये, मैं बिना मालिक के उस बगीचे में जाता। यह रियासत न तो सार्वजनिक और न वैयक्तिक ही जान पड़ती थी। मैं वहाँ घंटों बैठ कर इसके विनाश के सम्बन्ध में विचार किया करता। इस असाधारण दृश्य के रहस्योद्घाटन के अभिप्राय से मैंने कभी किसी से एक प्रश्न तक नहीं किया। वहाँ घूमता हुआ मैं सुन्दर कहानियाँ लिखा करता और इस विषाद के सूक्ष्म विलास पर मैं मोहित हो जाता था।

यदि मुझे इस मकान के प्रति सर्वसाधारण की उदासीनता का पता चल गया होता, तो मेरा काव्य-निर्माण के प्रति वह अकथनीय-भाव कभी न रह जाता, जिसके नशे में मैं वहाँ मतवाला बना रहता था। मुझे इस स्थान पर मानव-जीवन के अनेक आकारों की, जो दुर्भाग्यवश इस समय अंधकारपूर्ण हो गये थे, छाया दिखलाई पड़ती थी। कभी तो वह मुझे बिना पादरी के मठ-सा प्रतीत होता और कभी वह समाधि की उस निस्तब्ध शान्ति के रूप में दिखाई पड़ता, जहाँ मुर्दे अपने मृत्यु-लेख को पढ़ते हुये न जान पड़ते। आज वह कोठी के मकान-सा प्रतीत होता और कल भाग्य की उन तीन देवियों के मकान के समान दिखलाई देने लगता, जो मनुष्य के जन्म, जीवन और मरण

के सम्बन्ध में निर्णय किया करती हैं; परन्तु इतना होने पर
प्रान्त की प्रतिच्छाया थी। उसकी दयनीय दशा का और जो
प्रति घंटे के कृत्यों का वह दर्पण-सा जान पड़ता है। मैं वहाँ
[illegible] करता था। वहाँ मैं कभी भी नहीं हँसा। मुझे वहाँ कई
लगा। भय का कारण यह था कि मुझे सिर के ऊपर तेज़ी से
उड़ते कुछ कबूतरों के परों की मन्द-मन्द खड़खड़ाहट सुनाई पड़

वहाँ की जमीन सर्द है। आपको छिपकलियों, साँपों और
से सावधान रहना चाहिये जो निर्भय प्राकृतिक भाव से वहाँ
करते हैं। इसके अतिरिक्त आपको यहाँ से भयभीत न होना
क्योंकि कुछ क्षणों के बाद ही आप को अपने कंधों पर बर्फ
लबादा-सा रक्खा हुआ इस प्रकार अनुभव होगा, जिस प्रकार डान
की गरदन पर कमान्डर का हाथ जान पड़ा था। एक दिन
रात, मैं वहाँ काँप उठा था। वायु ने एक पुराने जंग खाये हु
था। [illegible] को इस बेरहमी से दबोचा था कि मुझे
आवाज़ के समान एक कर्कश नाद सुनाई दिया। यह नाद ठ
समान सुनाई पड़ा, जिस समय मैं एक भयानक नाटक के
[illegible] कर लिया गया था। मैंने मन ही मन इसकी कल्पना स
[illegible] तैयारी की और अपने हृदय को ढाढ़स दिया। मैं
[illegible] में लिप्त हुआ अपनी सराय को लौट आया। भोजन
[illegible] पश्चात् मेरी सफाई बनाने वाली, रहस्यपूर्ण मुद्रा धारण कि
[illegible] न आई। उसने मुझसे कहा—"श्रीमान्, ये आयुन
[illegible] हुए हैं।"

"[illegible] कौन है?"

"[illegible] है! क्या कहा आपने! क्या श्रीमान्, श्रीयुत [illegible]

अचानक मैंने एक दुबले-पतले और लम्बे आदमी को काली पोशाक पहिने हुये और अपने टोप को हाथ में लिये हुये कमरे के अन्दर उस मेढ़े के समान आते हुये देखा, जो कि अपने प्रतिस्पर्द्धी की तरफ़ तैयार होकर उससे भिड़ने के लिये लपकता हुआ चला आ रहा हो। उसका मस्तक कुछ पीछे की ओर झुका हुआ था। उसे छोटा पर नुकीला कह सकते हैं। उसका पीला चेहरा गिलास के गन्दे पानी के समान दिखलाई पड़ता था। उसे देख कर आप यही अनुमान करते कि वह किसी मंत्री का द्वारपाल होगा। वह एक पुराना कोट पहिने हुये था, जिस की सिलाई उधड़ गई थी। उसकी कमीज़ के कालर में एक हीरा दिखलाई पड़ रहा था और उसके कानों में सोने की बालियां डली हुई थीं।

"मुझे किससे बातचीत करने का गौरव प्राप्त हुआ है, श्रीमान्?" मैंने उससे पूछा।

एक कुरसी लेकर वह मेरी आग के सामने बैठ गया। उसने अपना टोप मेरी टेबिल पर रख दिया और अपने हाथ मलते हुये जवाब देने लगा—"ओफ़्! इस समय बड़ी सरदी है! श्रीमान्, मैं श्रीयुत रेगनाल्ट हूँ।

मैंने आत्मगत यह कहते हुये सिर झुका दिया—

"यह अजीब आदमी है! न जाने यहां क्यों आया है?"

"मैं बेल्टोम का लेख-प्रमाणक हूँ," उसने कहा।

"मुझे यह सुन कर प्रसन्नता हुई, श्रीमान्," मैंने कहा,

"परन्तु मैं अपना वसीयतनामा लिखने के लिये तैयार नहीं हूँ। इसके अनेक कारण हैं, जिन्हें मैं आपको नहीं बतलाना चाहता।"

"ज़रा एक क्षण ठहरिये," वह बीच ही में बोल उठा। यह कहते हुये उसने इस प्रकार हाथ उठाया, मानो वह मुझे चुप रहने का आदेश दे रहा हो—"क्षमा कीजिये, महाशय! क्षमा कीजिये!

अचानक मैंने एक दुबले-पतले और लम्बे आदमी को काली पोशाक पहिने हुये और अपने टोप को हाथ में लिये हुये कमरे के अन्दर उस मेढ़े के समान आते हुये देखा, जो कि अपने प्रतिस्पर्द्धी की तरफ़ तैयार होकर उससे भिड़ने के लिये लपकता हुआ चला आ रहा हो। उसका मस्तक कुछ पीछे की ओर झुका हुआ था। उसे छोटा पर नुकीला कह सकते हैं। उसका पीला चेहरा गिलास के गन्दे पानी के समान दिखलाई पड़ता था। उसे देख कर आप यही अनुमान करते कि वह किसी मंत्री का द्वारपाल होगा। वह एक पुराना कोट पहिने हुये था, जिस की सिलाई उधड़ गई थी। उसकी कमीज़ के कालर में एक हीरा दिखलाई पड़ रहा था और उसके कानों में सोने की बालियाँ डली हुई थीं।

"मुझे किससे बातचीत करने का गौरव प्राप्त हुआ है, श्रीमान्!" मैंने उससे पूछा।

. एक कुरसी लेकर वह मेरी आग के सामने बैठ गया। उसने अपना टोप मेरी टेबिल पर रख दिया और अपने हाथ मलते हुये जवाब देने लगा—"ओफ़्! इस समय बड़ी सरदी है! श्रीमान्, मैं श्रीयुत रेगनाल्ट हूँ।

मैंने आत्मगत यह कहते हुये सिर झुका दिया—

"यह अजीब आदमी है! न जाने यहाँ क्यों आया है!"

"मैं वेस्टोम का लेख-प्रमाणक हूँ," उसने कहा।

"मुझे यह सुन कर प्रसन्नता हुई, श्रीमान्," मैंने कहा,

"परन्तु मैं अपना वसीयतनामा लिखने के लिये तैयार नहीं हूँ। इसके अनेक कारण हैं, जिन्हें मैं आपको नहीं बतलाना चाहता।"

"ज़रा एक क्षण ठहरिये," वह बीच ही में बोल उठा। यह कहते हुये उसने इस प्रकार हाथ उठाया, मानो वह मुझे चुप रहने का आदेश दे रहा हो—"क्षमा कीजिये, महाशय! क्षमा कीजिये!

खिड़कियों की तादाद की सूचना दी है। यह इसलिये करना पड़ा है कि जिससे कर की रक़म निश्चित की जा सके। मैं कर की यह रक़म उस मद से प्रतिवर्ष दिया करता हूँ, जिसे स्वर्गीय काउन्ट की स्त्री ने इसी काम के लिये अलहदा सुरक्षित रख छोड़ा है। ओफ़! श्रीमान्, इनके वसीयत नामे की वेण्डोम में एक समय कितनी अधिक चर्चा हुई थी।"

इतना कह चुकने के पश्चात् वह भला आदमी अपनी नाक फुलाने के लिये रुक गया। मैं उसके भाषण का आदर कर रहा था। मैं इस बात को भलीभाँति समझ रहा था कि श्रीमती डी मैरेट की रियासत का प्रबन्ध इसके जीवन का, ख्याति का, यश का, अयोग्यता का—आवश्यक कार्य था। मुझे अपने आमोद-प्रमोद और लेखन-कला को सदा के लिये विदा कर देना चाहिये। फिर भी मैं एक विश्वसनीय व्यक्ति द्वारा असलियत के जानने के मोह का संवरण नहीं कर सका।

"क्या यह अनुचित होगा, महाशय," मैंने उससे पूछा—"यदि मैं आपसे इस प्रतिबन्ध का कारण पूछूँ?"

इस प्रश्न के पूछते ही उसके मुख पर प्रसन्नता की झलक दिखलाई पड़ने लगी। दिल चाही बात सुन कर मनुष्य जिस प्रकार प्रसन्न हो उठता है, उसी प्रकार इस लेख-प्रमाणक का मुख प्रसन्नता से चमक उठा। उसने सन्तुष्ट भाव से अपने कमीज़ के कालर को ताना, नाक की अपनी डब्बी निकाली, उसे खोल कर उसने मुझे देने के इरादे से उसे मेरी तरफ़ बढ़ाया और जब मैंने उसे लेने से इन्कार कर दिया, तब उसने एक चुटकी नास लेकर उसे सूँघा। वह सन्तुष्ट था। जिस मनुष्य को कोई इच्छा न हो, उसे जीवन में जो मनोरथ प्राप्त हो सकता है, उसका वह अनुमान तक नहीं कर सकता। इच्छा, भाव और लालसा के मध्य का ठीक मध्यवर्ती बिन्दु है। उस समय

गिरवा भी दिया। कुछ लोग बतलाते हैं कि उन्होंने सब सामान जलवा दिया। जो कुछ भी सामान इस समय इस रियासत में मौजूद है, जिसका पट्टा उपरोक्त...। मैं क्या कहता चला जा रहा हूँ ? मुझे क्षमा कीजिये। म समझा कि मैं पट्टे का मज़मून लिखा रहा हूँ—" वह बोला "उसने वह सब सामान मेरेट के खेतो मे जलवा दिया। क्यो महाशय, क्या आप कभी मेरेट गये हैं ? नहीं ?" उसने अपने प्रश्न का स्वयं उत्तर देते हुये कहा—"वाह ! कितना सुहावना स्थान है वह।" अपने सिर को ज़रा हिलाते हुये वह फिर कहने लगा—"लगभग तीन महीने तक श्रीमान् काउन्ट और श्रीमती काउन्ट ने एक निराला जीवन व्यतीत किया।

"उन्होंने किसी अभ्यागत का स्वागत नहीं किया। श्रीमती नीचे कमरे में और श्रीमान् दुमजले के एक कमरे में रहते थे। जब काउन्ट की महिला अकेली रह जाती थी, वह गिरजाघर के सिवाय और कहीं न जाती थी। बाद में अपनी रियासत के मकान में उसने अपने उन मित्रों से भी मुलाक़ात करना अस्वीकार कर दिया, जो उससे मिलने के लिए आया करते थे। जिस समय मेरेट जाने के लिये उसने ला ग्रेण्डे ब्रेटैचे छोड़ा, उस समय उसमें बहुत परिवर्त्तन हो चुका था। वह प्यारी स्त्री—मैं उसे 'प्यारी' इसलिये कहता हूँ कि यह हीरा मुझे उसी से प्राप्त हुआ है; परन्तु दरअसल मैंने उसे केवल एक ही बार देखा है—वह सर्वोत्कृष्ट महिला उस समय बहुत सख्त बीमार थी। वह निस्सन्देह अपने स्वास्थ्य से बिल्कुल निराश हो गई थी। इतनी बीमारी में भी उसने डाक्टर को न बुलाया और काल के गाल में समा गई। यही कारण था कि बहुत-सी महिलायें सोचा करती थी कि उसका दिमाग ठिकाने नहीं था। महाशय, जिस समय मुझे मालूम हुआ कि श्रीमती मैडम डी मेरेट को मेरी सेवा की आवश्यकता है, उस समय मुझे बड़ा कौतूहल हुआ। इस पेशा मे दिलचस्पी लेने वाला सिर्फ मैं ही [illegible]

अन्तिम प्रयत्न किया। अन्त में उसने एक सील-बन्द कागज़ निकाला। इतना परिश्रम करने से उसके मस्तक पर पसीना आ गया। 'मैं अपनी वसीयत आप को सौंपती हूँ' उसने कहा—'ओफ़! ओफ़! ओफ़!' बस केवल इतना वह कह पाई। उसने ईसामसीह के चित्र को, जो उसके बिस्तर पर पड़ा हुआ था, उठा लिया। उसने शीघ्र ही उसे अपने ओठों से लगा लिया और संसार को छोड़ कर किसी दूसरे लोक को उसने प्रस्थान किया। उसकी आँखों की अन्तिम चितवन के भाव को स्मरण कर आज भी मैं सिहिर उठता हूँ! उसकी अन्तिम चितवन में आनन्द की एक रेखा झलकती थी। उसकी मृत आँखों के अन्दर एक भाव सदा के लिये दब गया।

"मैं वसीयतनामे को ले आया। जब वह खोला गया, तब मुझे मालूम हुआ कि श्रीमती डी मैरेट ने मुझे अपना मृतलोक-प्रवर्त्तक मुकर्रर किया था। कुछ व्यक्तिगत चीजों को छोड़ कर, उसने अपनी सारी जायदाद वेण्डोम के अस्पताल को दे दी थी। परन्तु ला ग्रेन्डे ब्रेटेचे के सम्बन्ध में उसने यह प्रबन्ध किया था—उसने मुझे यह आदेश दिया था कि उसका मकान उसकी मृत्यु के दिन से पचास साल तक उसी दशा में रहने दिया जावे, जैसी हालत में कि मरते समय वह था। किसी भी आदमी को उसके कमरों के अन्दर प्रवेश न करने दिया जावे। उसकी ज़रा भी मरम्मत न की जावे। उसकी देख-रेख करने वालों के लिये भी उसने प्रबन्ध कर दिया था। अगर उसकी वसीयत का अक्षरशः पालन करने में रुपयों की ज़रूरत पड़े, तो इस काम के लिये सुरक्षित रखी गई एक अलग मद से, लिये जा सकते थे। इस अवधि की समाप्ति के बाद, अगर वसीयत करने वाली की इच्छा के अनुसार सब काम किया गया हो, तो यह मकान मेरे उत्तराधिकारियों का हो जायेगा। यह प्रबन्ध इसीलिये किया गया था [illegible], कि शायद आप जानते होंगे कि मुझ [illegible], मृत्यु-शैय्या पर इस

अन्तिम प्रयत्न किया। अन्त में उसने एक सील-बन्द कागज़ निकाला। इतना परिश्रम करने से उसके मस्तक पर पसीना आ गया। 'मैं अपनी वसीयत आप को सौंपती हूँ' उसने कहा—'ओफ़! ओफ़! ओफ़!' बस केवल इतना वह कह पाई। उसने ईसामसीह के चित्र को, जो उसके बिस्तर पर पड़ा हुआ था, उठा लिया। उसने शीघ्र ही उसे अपने ओठों से लगा लिया और संसार को छोड़ कर किसी दूसरे लोक को उसने प्रस्थान किया। उसकी आंखों की अन्तिम चितवन के भाव को स्मरण कर आज भी मैं सिहिर उठता हूँ! उसकी अन्तिम चितवन में आनन्द की एक रेखा झलकती थी। उसकी मृत आंखों के अन्दर एक भाव सदा के लिये दब गया।

"मैं वसीयतनामे को ले आया। जब वह खोला गया, तब मुझे मालूम हुआ कि श्रीमती डी मेरेट ने मुझे अपना मृतलोक-प्रवर्त्तक मुक़र्रर किया था। कुछ व्यक्तिगत चीज़ों को छोड़ कर, उसने अपनी सारी जायदाद वेण्डोम के अस्पताल को दे दी थी। परन्तु ला ग्रेन्डे ब्रेटैचे के सम्बन्ध में उसने यह प्रबन्ध किया था—उसने मुझे यह आदेश दिया था कि उसका मकान उसकी मृत्यु के दिन से पचास साल तक उसी दशा में रहने दिया जावे, जैसी हालत में कि मरते समय वह था। किसी भी आदमी को उसके कमरों के अन्दर प्रवेश न करने दिया जावे। उसकी ज़रा भी मरम्मत न की जावे। उसकी देख-रेख करने वालों के लिये भी उसने प्रबन्ध कर दिया था। अगर उसकी वसीयत का अक्षरशः पालन करने में रुपयों की ज़रूरत पड़े, तो इस काम के लिये सुरक्षित रखी गई एक अलग मद से, लिये जा सकते थे। इस अवधि की समाप्ति के बाद, अगर वसीयत करने वाली की इच्छा के अनुसार सब काम किया गया हो, तो वह मकान मेरे उत्तराधिकारियों का हो जावेगा। यह प्रबन्ध इसीलिये किया गया था [illegible]. कि शायद आप जानते होंगे कि मृत लोक-प्रवर्त्तक, मृत्यु-लेख-पत्र इत्या

बना दिया ! मृतलेख-प्रवर्तक की निरानन्द और धारावाहिक वक्तृता ने मेरे कौतूहल पर विजय प्राप्त कर ली। ऐसा जान पड़ता था कि अपने मवक्किलों और साथियों को इस प्रकार की बातें सुनाने का वह आदी था। वह स्वयं अपनी बातों को सुन कर सन्तुष्ट-सा हुआ जान पड़ता था।

"अहा ! बहुत से मनुष्य महाशय," उतरते हुए उसने कहा, "पचास वर्ष तक और जीवित रहना चाहेंगे; परन्तु ज़रा एक क्षण के लिये ठहरिये।" उसने अपने दाहिने हाथ की एक अँगुली अपनी नाक पर रखी। ऐसा जान पड़ता था कि मानो वह यह कहना चाहता है—'मैं जो कुछ कह रहा हूँ, उसे ध्यान-पूर्वक सुनो'—"परन्तु ऐसा करने के लिये, ऐसा करने के लिये," उसने कहा, "मनुष्य को साठ वर्ष से कम उम्र का ही होना चाहिये।"

मैंने दरवाज़े बन्द कर लिये। उसके इस अन्तिम तीर ने मुझे जगा-सा दिया। मेरी सुस्ती दूर हो गई। उसने अपनी इस वक्तृता को दक्षता-पूर्ण समझा। इसके बाद मैं पैर फैला कर अपनी आराम कुरसी पर बैठ गया। श्रीयुत रेगनाल्ट द्वारा प्रतिपादित विचारों के आधार पर, मैंने तत्काल 'ए ला रेटक्लिफ़' शीर्षक एक काल्पनिक कहानी गढ़ डाली। मैं ध्यानस्थ होकर अपनी कहानी के भावों में लीन हो गया। सहसा बड़ी सावधानी से किसी स्त्री के हाथ ने मेरा दरवाज़ा खोल दिया। मुझे मेरी खाना पकाने वाली सामने दिखाई पड़ी। उसका मुँह लाल रंग का था। वह काफ़ी हृष्ट-पुष्ट और बड़े अच्छे स्वभाव की थी। उसका रोज़गार छूट चुका था। वह फ़्लैन्डर्स की रहने वाली थी। क्या ही अच्छा होता, यदि उसका जन्म टेनियर में हुआ होता और वह भी एक चित्र के रूप में !

"क्यों महाशय," उसने कहा, "इसमें कोई शक नहीं कि मालुम

"ऐसा हो सकता है," उसने कहा—"महाशय, आप इस बात को जानते हैं कि उस मनुष्य में कोई न कोई विशेषता जरूर होनी चाहिये, जिसका विवाह श्रीमती डी मैरेट के साथ हुआ था। मैं किसी स्त्री की निन्दा नहीं करती; परन्तु इस बात को ज़ोर देकर कह सकती हूँ कि श्रीमती डी मैरेट समस्त प्रान्त में सबसे अधिक खूबसूरत और धनवान स्त्री थी। उसकी साल की आमदनी लगभग बीस हज़ार फ्रैंक थी। उसकी शादी में शहर के सब लोग शरीक हुये थे। अहा! उस समय यह दम्पति बड़े सुन्दर दिखलाई पड़ते थे!"

"क्या उन लोगों का जीवन आनन्दपूर्ण व्यतीत हुआ?"

"ऐ प्यारे! ऐ प्यारे! हाँ और नहीं। मैं अपने ख्याल के मुताबिक बतला सकती हूँ। तुम इस बात को भली-भाँति समझते हो कि हम लोगों की उनसे घनिष्टता नहीं थी। श्रीमती डी मैरेट दयालु स्त्री थी। वह बड़ी खुश मिजाज़ भी थी। उसका पति क्रोधी स्वभाव का था। इसी कारण उसे कभी-कभी यातना सहनी पड़ती थी। उसके कुछ घमंडी होने पर भी हम लोग उसको चाहती थीं। उसको ऐसा बनना ही पड़ता था। जब कोई आदमी बड़ा होता है, तो आप जानते हैं कि—"

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐसी कोई दुर्घटना अवश्य घटी होगी, जिसके कारण श्रीमान् और श्रीमती डी मैरेट को अलग होना पड़ा था।"

"बिल्कुल ठीक। मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि आप सभी बातें जानती हैं।"

"अच्छा, महाशय! मैं जो कुछ भी जानती हूँ, वह सब आपको बतलाती हूँ। जिस समय मैंने श्रीयुत रेगनाल्ट को आपके कमरे में जाते हुये देखा, मैं उसी समय समझ गई कि वह आपसे ला ग्रैंड ब्रेटेचे और श्रीमती डी मैरेट के सम्बन्ध में बातचीत करेगा। उसी समय मैंने आपसे बातचीत करने का विचार किया था। मुझे आप एक भले आदमी दिख-

"ऐसा हो सकता है," उसने कहा—"महाशय, आप इस बात को जानते हैं कि उस मनुष्य में कोई न कोई विशेषता जरूर होनी चाहिये, जिसका विवाह श्रीमती डी मैरेट के साथ हुआ था। मैं किसी स्त्री की निन्दा नहीं करती; परन्तु इस बात को ज़ोर देकर कह सकती हूँ कि श्रीमती डी मैरेट समस्त प्रान्त में सबसे अधिक खूबसूरत और धनवान स्त्री थी। उसकी साल की आमदनी लगभग बीस हज़ार फ्रैंक थी। उसकी शादी में शहर के सब लोग शरीक हुये थे। अहा! उस समय यह दम्पति बड़े सुन्दर दिखलाई पड़ते थे!"

"क्या उन लोगों का जीवन आनन्दपूर्ण व्यतीत हुआ?"

"ऐ प्यारे! ऐ प्यारे! हां और नहीं। मैं अपने ख्याल के मुताबिक़ बतला सकती हूँ। तुम इस बात को भली-भाँति समझते हो कि हम लोगों की उनसे घनिष्टता नहीं थी। श्रीमती डी मैरेट दयालु स्त्री थी। वह बड़ी ख़ुश मिजाज़ भी थी। उसका पति क्रोधी स्वभाव का था। इसी कारण उसे कभी-कभी यातना सहनी पड़ती थी। उसके कुछ घमंडी होने पर भी हम लोग उसको चाहती थीं। उसको ऐसा बनना ही पड़ता था। जब कोई आदमी बड़ा होता है, तो आप जानते हैं कि—"

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐसी कोई दुर्घटना अवश्य घटी होगी, जिसके कारण श्रीमान और श्रीमती डी मैरेट को अलग होना पड़ा था।"

"बिल्कुल ठीक। मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि आप सभी बातें जानती हैं।"

"अच्छा, महाशय! मैं जो कुछ भी जानती हूँ, वह सब आपको बतलाती हूँ। जिस समय मैंने श्रीयुत रेगनाल्ट को आपके कमरे में जाते हुये देखा, मैं उसी समय समझ गई कि वह आपसे ला ब्रेटेचे और श्रीमती डी मैरेट के सम्बन्ध में बातचीत करेगा। उसी समय मैंने आपसे बातचीत करने का विचार किया था। मुझे आप एक भले आदमी दिख-

वह नवयुवक बहुत ख़ूबसूरत था। लोग कहा करते हैं कि स्पेन-निवासी बहुत बदसूरत होते हैं; परन्तु वह इस लोकोक्ति का अपवाद था। उसकी ऊँचाई केवल पाँच फुट दो इंच थी। उसकी गठन बहुत बढ़िया थी। उसके छोटे-छोटे हाथ थे, जिनकी वह बड़ी सावधानी से देख-भाल करता था। उसके पास हाथों को साफ़ करने के लिये बहुत से ब्रश थे। जिस प्रकार स्त्रियाँ अनेक कामों के लिये अनेक ब्रश रखती हैं, उसी प्रकार वह अपने हाथों की सफ़ाई के लिये बहुत से ब्रश रखा करता था। उसके लम्बे काले बाल थे। उसकी चमकदार आँखें बहुत भली प्रतीत होती थीं। उसके चमड़े का रंग ताँबे के रंग से मिलता-जुलता था। मुझे वह बहुत अच्छा लगता था। वह इतने सुन्दर वस्त्र धारण करता था कि मैंने वैसे वस्त्र कभी नहीं देखे थे, यद्यपि मैंने जनरल बैरट्रेंट, डेकेटेस के राजा और रानी, श्रीमान् डेक-ज़ीस, स्पेन के राजा तथा अनेक राजकुमारियों का स्वागत किया था और उन्हें भोजन खिलाया था। वह अधिक नहीं खाता था। उसका स्वभाव बहुत सीधा और भला था। मुझे उस पर कुपित होने का कभी अवसर नहीं आया। सचमुच वह मुझे बहुत प्यारा लगता था, यद्यपि वह दिन भर में चार शब्द भी न बोलता था। उससे ज़रा सी भी बात-चीत करना असम्भव था। यदि उससे कोई बोलता भी, तो वह कोई जवाब न देता था। यह उसकी लत की बात थी। ऐसा लोग बतलाया करते थे। वह अपनी धार्मिक पुस्तक को पादरी के समान पढ़ता था। वह प्रार्थना के लिये प्रतिदिन बिला नागा गिरजाघर जाता था। वह जहाँ बैठता था, वह बहुत बार मैंने देखा। [illegible] डी मैरेट के पास छोटे गिरजाघर से दो क़दम दूरी पर वह दिखाई पड़ता था। पहले-पहल जब वह गिरजाघर जाकर इस प्रकार वहाँ बैठा, तब किसी को इस बात का ख़याल नहीं हुआ कि उसके वहाँ बैठने में कोई रहस्य है। इसके अतिरिक्त उसका मुँह उसकी धार्मिक पुस्तक के

लाई पड़ते हैं। मुझे विश्वास है कि आप मेरे समान ग़रीब औरत के साथ विश्वासघात न करेंगे। मैंने आज तक किसी आदमी का कुछ नहीं बिगाड़ा। फिर भी मेरी आत्मा मुझे सदा व्यथित किया करती है। इस समय तक पड़ोस में रहने वाले लोगों से मैंने कभी भी बात-चीत करने का साहस नहीं किया, क्योंकि वे सब मुझे बड़े अभद्र दिखलाई पड़ते हैं। इसके अलावा महाशय, मेरी सराय में आज तक कोई ऐसा मेहमान आकर इतने समय तक नहीं रहा, जितने समय तक आप रहे हैं। इसलिये मैं आपसे पन्द्रह हज़ार फ्रैंक की एक कहानी बतलाती हूँ।"

"मेरी प्यारी श्रीमती लैपस" मैंने उसके शब्दों की बाढ़ को रोकते हुये कहा, "यदि तुम्हारा मुझ पर तिलमात्र भी सन्देह है, तो मुझ पर इस ज़िम्मेदारी का बोझ न लादो।"

"आप ज़रा भी भयभीत न हों," उसने मुझको रोकते हुये कहा— "आपको आगे मालूम हो जायगा।"

उसके इस उतावलेपन को देख कर मैं समझ गया कि उसने मेरे अतिरिक्त इस रहस्य को औरों को भी बतलाया है। मैं उसकी बातों को ध्यान-पूर्वक सुनने लगा।

"महाशय," उसने कहना शुरू किया, "जिस समय बादशाह ने स्पेन-निवासी अथवा लड़ाई के दूसरे क़ैदी यहाँ भेजे, तब उनके रहने का इन्तज़ाम मुझे करना पड़ता था। इसका खर्च सरकार बरदाश्त करती थी। एक स्पेन-निवासी युवक यहाँ निगरानी पर भेजा गया। निगरानी रहने पर भी उसे उच्च राज्याधिकारी के पास जाकर रोज़ हाज़िरी देना पड़ती थी। वह स्पेन का एक रईस था—इस बात में किसी को सन्देह नहीं था। उसका नाम ओस और दिया के समान था! जहाँ तक मेरा ख्याल है, उसे बेगोस डी फेरेदिया कह कर पुकारते थे। उसका नाम मेरे रजिस्टर में दर्ज है। चाहें तो आप उसे पढ़ सकते हैं।

वह नवयुवक बहुत ख़ूबसूरत था। लोग कहा करते हैं कि स्पेन-निवासी बहुत बदसूरत होते हैं; परन्तु वह इस लोकोक्ति का अपवाद था। उसकी ऊँचाई केवल पाँच फुट दो इंच थी। उसकी गठन बहुत बढ़िया थी। उसके छोटे-छोटे हाथ थे, जिनकी वह बड़ी सावधानी से देख-भाल करता था। उसके पास हाथों को साफ करने के लिये बहुत से ब्रश थे। जिस प्रकार स्त्रियाँ अनेक कामों के लिये अनेक ब्रश रखती हैं, उसी प्रकार वह अपने हाथों की सफ़ाई के लिये बहुत से ब्रश रखा करता था। उसके लम्बे काले बाल थे। उसकी चमकदार आँखें बहुत भली प्रतीत होती थीं। उसके चमड़े का रंग ताँबे के रंग से मिलता-जुलता था। मुझे वह बहुत अच्छा लगता था। वह इतने सुन्दर वस्त्र धारण करता था कि मैंने वैसे वस्त्र कभी नहीं देखे थे, यद्यपि मैंने जनरल बैर ट्रेंड, डेवेंटेस के राजा और रानी, श्रीमान् डेकज़ीस, स्पेन के राजा तथा अनेक राजकुमारियों का स्वागत किया था और उन्हें भोजन खिलाया था। वह अधिक नहीं खाता था। उसका स्वभाव बहुत सीधा और भला था। मुझे उस पर कुपित होने का कभी अवसर नहीं आया। सचमुच वह मुझे बहुत प्यारा लगता था, यद्यपि वह दिन भर में चार शब्द भी न बोलता था। उससे ज़रा सी भी बात-चीत करना असम्भव था। यदि उससे कोई बोलता भी, तो वह कोई जवाब न देता था। यह उसकी लत की बात थी। ऐसा लोग बतलाया करते थे। वह अपनी धार्मिक पुस्तक को पादरी के समान पढ़ता था। वह प्रार्थना के लिये प्रतिदिन बिना नागा गिरजाघर जाता था। वह कहाँ बैठता था, यह बहुत बाद में हमने देखा। 'सिस्टी डी मैरेट' के खास छोटे गिरजाघर के दो क़दम दूरी पर वह दिनरात पढ़ता था। पहले-पहल जब वह गिरजाघर जाकर इस जगह पर बैठा, तब किसी को इस बात का ख्याल नहीं हुआ कि इसके यहाँ बैठने में कोई रहस्य है। इसके अतिरिक्त उसका मेज़ उसकी धार्मिक पुस्तक के

अन्दर ढँका रहता था। शाम के वक्त, महाशय, वह गढ़ी के भग्नावशेषों को देखता हुआ पहाड़ों पर घूमा करता था। वह उस ग़रीब आदमी का एक मनोरंजन था। उसको वहाँ अपने देश की याद आ जाती थी। लोग कहते हैं कि स्पेन में पर्वतों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

"यहाँ आने के बहुत थोड़े समय बाद से ही वह देर तक बाहर घूमा करता था। एक दिन वह आधी रात तक लौट कर नहीं आया। मुझे बड़ी चिन्ता हुई; परंतु धीरे-धीरे हमको उसकी आदत का पता चल गया। वह दरवाज़े की चाबी साथ ले जाता और हम लोग उसका इन्तज़ार न करते थे। वह रुई डो केसर के एक मकान में रहता था। एक दिन हमारे एक साईस ने बतलाया कि एक रात को जब वह घोड़ों को पानी पिलाने के लिये ले गया था, तब उसने नदी में स्पेन के इस रईस को असली मछली के समान बहुत दूरी पर तैरते हुये पाया था। जब वह लौट कर आया, तब मैंने उससे गोल्डी मछलियों से सावधान रहने के लिये कहा। उसको यह जानकर दुःख हुआ कि उसे लोगों ने तैरता हुआ देख लिया है। निदान, महाशय, एक दिन अथवा प्रातःकाल, वह अपने कमरे में न पाया गया। वह लौट कर घर आया ही नहीं था। मैंने उसको चारों तरफ ढूँढ़ा; परन्तु वह कहीं न मिला। उसकी टेबिल के ड्रावर में एक लिखा हुआ काग़ज मिला। वहाँ स्पेन के पचास सोने के सिक्के मिले, जिन्हें कि वे लोग 'पोर्चुगेज़ीज़' कहते हैं। उनका मूल्य पाँच हज़ार फ्रैंक के लगभग होगा। इसके अलावा एक छोटी मोहरबन्द सन्दूकची में कुछ जवाहरात थे, जिनका मूल्य लगभग दस हज़ार फ्रैंक था। उसने लिखा था कि यदि वह लौट न आवे, तो उसके इस रुपये से उसकी आत्मा की शान्ति के लिये और उसके भाग जाने के उपलक्ष्य में, ईश्वर को धन्यवाद दिया जावे और उसकी प्रार्थना की जावे। उन दिनों मेरा पति जीवित था। वह उसको

खोजने के लिये बहुत भटका; परंतु वह उसे न मिला। इस कहानी की मज़ेदार बात यह है कि मेरा पति उसके कपड़ों को लेकर लौटा। उसे वे कपड़े नदी के किनारे एक बड़े पत्थर के नीचे मिले थे। यह स्थान गढ़ी के पास और ठीक ला ग्रेंडे ब्रेटेंचे के सामने था।

"मेरा पति वहाँ प्रातःबेला में इतने जल्द आया था कि उसे किसी ने भी न देख पाया था। चिट्ठी पढ़ लेने के बाद उसने कपड़ों को जला दिया। हम लोगों ने काउन्ट फेरेदिया की इच्छानुसार यह ज़ाहिर किया कि वह भाग गया। गवर्नर ने उसको खोजने के लिये चारों ओर घुड़-सवारों को भेजा; परन्तु कोई भी उसे न पा सके। लेपस को विश्वास हो गया कि वह स्पेन-निवासी नदी में डूब कर मर गया। जहाँ तक मेरा ख्याल है महाशय, मुझे इस बात पर विश्वास नहीं होता। मेरा ख्याल है कि वह श्रीमती डी मैरेट के मामले में उलझ गया, क्योंकि रोज़ली ने मुझको यह बतलाया था कि ईसामसीह की उस तस्वीर को जिसे उसकी स्वामिनी बहुत अधिक प्यार करती थी, उसे उसने अपने साथ ही दफ़न करवा दिया था। वह आबनूस और चाँदी की बनी हुई थी। वह मुझे बाद में कभी भी दिखलाई न पड़ी। अब आप ही बतलाइये महाशय, कि उस स्पेन-निवासी के इन पन्द्रह हज़ार फ्रैंक के लिये मुझे क्या ज़रा भी चिन्ता करनी चाहिये? अब तो वे मेरे ही गये।"

"निस्सन्देह। परन्तु क्या तुमने कभी रोज़ली से इस सम्बन्ध में पूछ-ताँछ नहीं की?" मैंने उससे पूछा।

"क्यों नहीं, महाशय! उससे मैंने बहुत पूछा; परन्तु क्या आप मुझ पर विश्वास करेंगे? वह स्त्री दीवाल के समान है। उसे कुछ मालूम अवश्य है; परन्तु उसका बोलना ही तो असम्भव है।"

मेरा खाना पकानेवाली मुझसे एक क्षण और बातचीत करके चली गई। वह मेरे कौतूहल को उभाड़ गई। मुझे अनिर्वचनीय मनचर विचारों ने धर दबाया। वह सब मुझे एक कल्पना के समान प्रतीत

लाई पड़ती थी। इस कहानी का अन्तिम परिच्छेद इस लड़की के अंदर समाविष्ट था। इसीलिये उस वक्त से मेरा ध्यान रोज़ले की तरफ़ विशेष रूप से आकृष्ट रहने लगा। जिस समय मैंने इस स्त्री का अध्ययन करना आरम्भ किया, उस समय मुझे वह सद्गुणों का समूह-सी दिखाई पड़ने लगी। ध्यानपूर्वक देखी जाने पर सभी स्त्रियाँ इस प्रकार दिखाई पड़ने लगती हैं। वह साफ़-सुथरी और देखने में खूबसूरत थी, इसमें किसी तरह का सन्देह नहीं किया जा सकता। उसमें चित्त को आकर्षित करने के वे सभी गुण वर्तमान थे, जिन्हें पुरुष, स्त्रियों में देखना चाहते हैं। सभी स्थिति के पुरुषों को आकृष्ट करने की सामग्री उसके पास मौजूद थी। मृत लेख-प्रवर्तक की मुलाक़ात के पन्द्रह दिन बाद एक दिन शाम को—नहीं-नहीं, सुबह के वक्त और वह भी बहुत जल्दी—मैंने रोज़ले से कहा :

"श्रीमती डी मेरेट के सम्बन्ध में तुम जो कुछ भी जानती हो, वह सब मुझे बतलाओ।"

"आप मुझसे यह न पूछिये, महाशय होरेस!" उसने डर कर जवाब दिया।

उसका सुन्दर चेहरा काला पड़ गया। उसकी दमक जाती रही। उसकी आँखों का नमी और प्रकाश अन्तर्ध्यान हो गया; परंतु मैं आग्रह करता रहा।

"अच्छा," उसने कहा, "आप ज़िद कर रहे हैं, इसलिये मैं आप को बतलाती हूँ; परन्तु इस बात को गुप्त रखियेगा।"

"अवश्य, अवश्य, मेरी प्यारी लड़की; मैं यह बात बिल्कुल गुप्त रखूँगा। जिस प्रकार चोर अपनी चोरी को सदा गुप्त रखता है, उसी प्रकार मैं भी इस बात को सदा गुप्त रखूँगा, क्योंकि चोरों के अतिरिक्त बात को छिपाये रखने की लगन और कहीं नहीं दिखलाई पड़ती।"

"यदि आप इसे उपयुक्त समझते हैं, तो ऐसा ही कीजिये," उसने

कहा, "मैं चाहती हूँ कि बात आपके अलावा दूसरे को न मालूम होने पावे।"

इसके बाद उसने अपने गले के रूमाल को सम्हाला, और कहानी कहने वाले की तरह रुख धारण किया, क्योंकि कहानी कहने के लिये आत्म-विश्वास और दृढ़ता के भाव का होना बहुत ज़रूरी है। संसार की श्रेष्ठ कहानियाँ एक निश्चित समय में और एक टेबिल पर कही गई हैं। उसी प्रकार आज हम लोग भी एकत्र हुये हैं। किसी ने भी खड़े-खड़े और भूखे रह कर कभी कोई कहानी नहीं कही; परन्तु रोज़ले की वाक्चातुरी का ईमानदारी से चित्रण किया जावे, तो सम्भवतः यह पुस्तक भी उसके लिये पर्याप्त न होगी। उसने जिस घटना का क्रम-भंग वर्णन मेरे सामने किया, वह मृत-लेख-प्रवर्तक और श्रीमती लेपस द्वारा किये हुये वर्णन के मध्य भाग से सम्बन्ध रखता था। उसकी स्थिति अंकगणित की त्रैराशिक के बीच के अंक के समान थी। उसको मैं बहुत संक्षिप्त भाव में आपके सामने वर्णन करता हूँ।

श्रीमती डी मैरेट ला ग्रेंडे ब्रेटैचे के जिस कमरे में रहती थी, वह पहले मंज़ले में था। दीवाल के अन्दर लगभग चार फीट गहरी एक छोटी कोठरी उसके वस्त्रागार का काम देती थी। जिन घटनाओं का मैं अभी ज़िक्र करने जा रही हूँ, उनकी तिथि से तीन मास पूर्व एक दिन शाम को श्रीमती डी मैरेट की तबियत बहुत खराब हो गई। इसी वजह उसका पति उसको अपने कमरे में, अकेली छोड़ कर नीचे के एक कमरे में जाकर सो रहा। रोज शाम को वह अखबार पढ़ने अथवा राजनैतिक विषयों पर विचार-विनिमय करने के इरादे से क्लब जाया करता था। उस दिन शाम को घटना-क्रम में फँस जाने के कारण वह दो घण्टे देरी से घर लौटा। उसकी स्त्री ने समझा कि वह घर लौट आया होगा और अपने कमरे में सोने के लिये चला गया होगा। परन्तु आज

के आक्रमण की मनोरंजक चर्चा सब तरफ़ चल रही थी। बिलियर्ड का खेल तेज़ी से हो रहा था। वह चालीस फ्रैंक हार चुका था। वेरडोम के लिये यह बहुत बड़ी रकम थी। यहाँ सब लोग रुपया इकट्ठा करने के आदी थे और लोग सहन-शीलता का सीमोल्लंघन करना जानते ही न थे। इसीलिये उनकी प्रशंसा हुआ करती थी। प्रत्येक पेरिस-निवासी को इससे सच्चा सुख मिलता था।

कुछ समय से श्रीयुत डी मैरेट रोज़ले से यह पूछ लिया करता कि उसकी स्त्री सो गई अथवा नहीं। यह बात मालूम कर लेने के बाद, वह सन्तुष्ट-सा हो जाता। लड़की से उसे जब यह जवाब मिल जाता कि वह अपने शयनागार में चली गई, तब वह तुरन्त ही अपने कमरे में चला जाता था। परन्तु उस दिन शाम को लौटने के बाद उसके दिमाग़ में आया कि वह श्रीमती डी मैरेट के कमरे में जावे और उसे अपने दुर्भाग्य का हाल बतलावे। उसके वहाँ जाने का शायद यह भी मक़सद था कि वहाँ जाकर, वह अपना मन बहलावे। भोजन के समय उसने यह कहा था कि श्रीमती डी मैरेट ने आज बड़ी भड़कीली पोशाक पहिन रखी है। क्लब से लौटते समय उसने मन ही मन सोचा था कि उसकी औरत की तबियत ठीक है; उसकी बीमारी हट गई है और वह तन्दुरुस्त हो चली है; परन्तु उसने इस बात को ज़रा देरी से देखा। स्त्रियों की बातों को पति इसी प्रकार देरी से देखा करते हैं। रोज़ले को बुलाने के बजाय, जो इस समय रसोई घर के काम में व्यस्त थी और जो रसोइये और गाड़ीवान के त्रिस्क खेल को देख रही थी, श्रीयुत डी मैरेट, जीने पर रखी हुई लालटेन को लेकर अपनी स्त्री के कमरे में गया। उसके क़दम की आवाज़ आसानी से पहिचानी जा सकती थी। वह बरामदे की महराबों के नीचे गूँज रही थी। उसने अपनी स्त्री के कमरे के दरवाज़े के गुमड़े को घुमाया। उसी समय उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसकी स्त्री के कमरे की अन्दर वाली दीवाल के

भीतर जो कोठरी थी, उसका दरवाज़ा बन्द किया गया। ऊपर बता दिया गया है कि वह कमरा बन्द था; परन्तु जिस समय वह वहाँ पहुँचा श्रीमती डी मैरेट अकेली अँगीठी के सामने खड़ी थी। पति ने निष्कपट भाव से अनुमान किया कि रोज़ले शायद उस छोटे कमरे में होगी; परन्तु ताला बन्द होने की-सी आवाज़ सुन कर उसके मन में सन्देह उत्पन्न हो गया। उसने अपनी स्त्री की ओर देखा। उसे उसके चेहरे पर अवर्णनातीत घबड़ाहट और आश्चर्य के भाव दिखलाई पड़े।

"तुम बहुत देरी से घर लौटने लगे हो," उसने कहा।

वह आवाज़ जो सदा बहुत पवित्र और सुहावनी जान पड़ती थी, उसे कुछ बदली हुई-सी जान पड़ी। उसने कोई जवाब नहीं दिया। इसी समय रोज़ले कमरे के अन्दर आई। इसने बज्र-ध्वनि का काम किया। वह कमरे के अन्दर एक खिड़की से दूसरी खिड़की के पास, हाथ पर हाथ जमाये हुए समगति से टहलने लगा।

"क्या तुमने कोई दुःखद समाचार पाया है अथवा क्या तुम्हारी तबियत खराब है?" उसकी स्त्री ने डरते हुए उससे पूछा। रोज़ले उसके कपड़े उतार रही थी।

उसने कोई जवाब न दिया।

"तुम जाओ," श्रीमती डी मैरेट ने अपनी दासी से कहा—"मैं अपने केश क्लिप खुद सजा लूँगी।"

उसे अपने पति के चेहरे के भाव को देख कर किसी आने वाली आपत्ति का आभास हुआ। इसीलिये उसने उसके साथ अकेला रहना उचित समझा। जब रोज़ले चली गई, अथवा यह समझा गया कि वह चली गई, यद्यपि वह कुछ क्षण तक बरामदे में खड़ी रही थी, तब श्रीयुत डी मैरेट अपनी स्त्री के सामने खड़ा हो गया और रुखाई से बोला—

"श्रीमती जी, तुम्हारे छोटे कमरे में कोई अवश्य है ?"

उसने अपने पति की ओर शान्त भाव से देखा, और केवल यह जवाब दिया—

"नहीं, श्रीमान् ।"

इस "नहीं" ने श्रीयुत डी मैरेट के हृदय को वेध डाला । उसको इस बात पर विश्वास न हुआ । इतने पर भी उसकी स्त्री, उसे इस समय इतनी शुद्ध और पवित्र दिखलाई दे रही थी, जितनी कि वह अब तक कभी न दिखलाई पड़ी थी । वह उस छोटे कमरे के दरवाज़े को खोलने के लिये उठा । श्रीमती डी मैरेट ने उसका हाथ पकड़ कर उसे रोक दिया । वह उसकी ओर विषाद-पूर्ण मुद्रा से देखने लगी । उसने कुछ उत्तेजित स्वर में कहा—"अगर तुम्हें वहाँ कोई न मिलेगा, तो समझ लेना कि आज से मुझसे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं रहा ।"

अपनी स्त्री की अकथनीय गम्भीर मुद्रा को देख कर उस सज्जन के हृदय में उसके प्रति आदर के भाव फिर से जाग पड़े । उसके मन में ऐसे संकल्प सिमिट उठे कि जिनके कार्य रूप में परिणत किये जाने के लिये एक विस्तृत रंग-मंच की आवश्यकता पड़ती और जो मनुष्य को अमर बना देते ।

"नहीं," उसने कहा, "मैं वैसा न करूँगा, जोसेफाइन । किसी भी अवस्था में अब हम लोगों को सदा के लिये विलग हो जाना चाहिये । सुनो, मैं तुम्हारी आत्मा की पवित्रता बहुत अच्छी तरह जानता हूँ । मुझे यह भी मालूम है कि तुम साधुओं-जैसा जीवन व्यतीत करती हो । मुझे इस बात का भी विश्वास है कि तुम अपनी जीवन रक्षा के लिये भी कोई पाप-कर्म न करोगी ।"

घबड़ाई हुई आँखों से श्रीमती डी मैरेट अपने पति के इन शब्दों को सुनती रही ।

"देखो, यह तुम्हारी ईसामसीह की तस्वीर है । ईश्वर के सामने

तुम क़सम खा लो कि वहाँ कोई नहीं है और मैं तुम पर विश्वास कर लूँगा। मैं उस दरवाज़े को कभी न खोलूँगा।"

श्रीमती डो मैरेट ने ईसामसीह की तस्वीर ले ली और कहा—"मैं इस बात की क़सम खाती हूँ।"

"ज़रा ज़ोर से कहो," पति ने कहा, "और मैं जो कुछ भी कहूँ उसे दोहराती जाओ—मैं ईश्वर के सामने शपथ खाती हूँ कि उस कमरे में कोई नहीं है।"

उसने बिना किसी प्रकार की घबड़ाहट के उन शब्दों को दोहरा दिया।

"बहुत अच्छी बात है," श्रीयुत डो मैरेट ने उदास होकर कहा— एक क्षण ठहरने के बाद—"मुझे इस बात का बिल्कुल पता न था कि तुम्हारे पास यह सुन्दर वस्तु है।" उसने आबनूस के और चांदी के सुन्दर पात्र से मढ़े हुये ईसामसीह के चित्र को बड़ी बारीकी से देख कर कहा।

"मुझे यह डुवार्डेवर के यहाँ पिछली साल उस समय मिला था, जब कि क़ैदियों का दल वेण्डोम से गुज़रा था। उसने इसे एक स्पेन के महात्मा से खरीदा था।"

"अहा!" श्रीयुत डो मैरेट ने खूँटी पर ईसामसीह के चित्र को टाँगते हुये कहा। इसके बाद उसने घंटी बजाई। रोज़ले ने उसे अधिक समय तक प्रतीक्षा न करने दी। वह तुरन्त आ गई। श्रीयुत डो मैरेट उससे मिलने के लिये तेज़ी से चला। वह उसे खिड़की के उस छेद के पास ले गया, जिसके द्वारा बग़ीचे को देखा जा सकता था। उसने धीमे स्वर में उससे कहा—

"मुझे मालूम है कि गोरेन फ्लाट तुम्हारे साथ शादी करना चाहता है। ग़रीबी के कारण ही तुम उसके साथ विवाह न कर सकने के लिये मजबूर हो रही हो और तुमने उसको यह भी कह दिया है कि जब

कराते हैं। बाहर से सामान बुलवाने के कारण इस काम में खर्च बहुत अधिक पड़ता है। इसलिये श्रीयुत मैरेट ने बहुत अधिक सामान बुलवा लिया था। उसको यह बात भली-भाँति मालूम थी कि उसका काम हो जाने के बाद जो सामान बच रहेगा, उसके उसे सहज ही में ख़रीदार मिल जायँगे। इसी वजह से उसने अपना काम शुरू करना चाहा।

"गोरेन फ्लाट आ गया, महाशय," रोज़ले ने धीमे स्वर में कहा।

"उसको यहाँ बुलाओ," महाशय ने ज़ोर से जवाब दिया। कारीगर को देख कर श्रीमती डी मैरेट पीली पड़ गईं।

"गोरेनफ्लाट," उसके पति ने कहा, "गाड़ीघर से जाकर कुछ ईंटें ले आओ। देखो, इतनी ईंटें लाओ जिससे कि इस कमरे का दरवाज़ा बन्द किया जा सके। तुम उस पलास्तर का इस्तेमाल कर सकते हो, जो दीवाल के पलास्तर करने के लिये इकट्ठा किया गया है।" इसके बाद उसने इशारे से रोज़ले और कारीगर को अपने पास बुलाया और उनसे धीमे स्वर में बोला—"देखो, गोरेन फ्लाट, तुम को आज रात को यहीं सोना होगा; परन्तु कल सुबह तुम को बाहर जाने के लिए पासपोर्ट मिलेगा। तुमको जिस शहर को जाना होगा, वह मैं बतला दूँगा। मैं तुम्हारी यात्रा के लिये छः हज़ार फ्रेंक दूँगा। तुमको उस शहर में दस साल तक रहना पड़ेगा। यदि तुम्हें वहाँ अच्छा न लगे, तो तुम किसी भी दूसरे शहर में रह सकते हो; लेकिन शर्त यह रहेगी कि वह उसी देश का शहर होना चाहिये। मैं तुमको इस बात का विश्वास दिलाता हूँ कि वहाँ से लौटने पर मैं तुमको छः हज़ार फ्रेंक और दूँगा। यह रक़म उसी हालत में दी जायेगी, जब कि तुम आज के सौदे की सब शर्तों का पूरा तौर पर पालन करोगे। इस रक़म को पाकर तुमने यहाँ जो कुछ भी आज रात को किया है, वह सब गुप्त रखना होगा। इस बात को कभी किसी को ज़ाहिर न करना होगा। और रोज़ले, मैं तुमको दस हज़ार फ्रेंक दूँगा। यह रक़म तुम्हारा शादी के

दिन दी जावेगी, बशर्ते कि तुम गोरेन फ्लाट के साथ शादी करो। तुमको यह शादी करने के लिये मौन धारण करना पड़ेगा। अगर तुम ऐसा न करोगी, तो तुमको यह दहेज़ न दिया जावेगा।

"रोज़ले," श्रीमती डी मेरेंट ने कहा, "यहाँ आकर मेरे केश सँवार दो।"

पति शान्त भाव से इधर-उधर टहलता रहा। वह कभी दरवाज़े को, कभी कारीगर को और कभी अपनी स्त्री को देखता था; परन्तु उसकी बाह्य भाव-भंगी से किसी के भी नुकसान होने का शक न होता था। गोरेन फ्लाट को मजबूरन कुछ शोर-गुल करना पड़ा। श्रीमती डी मेरेंट को मौक़ा मिल गया। जिस समय कारीगर ईंटें गिरा रहा था और जिस समय उसका पति दरवाज़े के उस ओर खड़ा था, उसने रोज़ले से कहा—

"मेरी प्यारी बच्ची, मैं तुम्हें एक हज़ार फ्रेंक सालाना दूँगी, बशर्ते कि तुम गोरेन फ्लाट से जाकर कह दो कि दरवाज़ा बन्द करते समय वह नीचे के हिस्से में एक दराज़ रख दे। जाओ उसकी सहायता करो," उसने लापरवाही से और ज़ोर से कहा।

श्रीयुत और श्रीमती डी मेरेंट ने उस वक्त एक शब्द भी न कहा, जब कि गोरेन फ्लाट दरवाज़े पर दीवाल बनाता रहा। पति की पूर्व-युक्ति के अनुसार ही इस शान्ति का पालन किया गया। वह अपनी स्त्री को ऐसा मौक़ा ही न देना चाहता था, जिससे वह ऐसे कोई भी शब्द कहे, जिनके दो अर्थ हो सकते हों। श्रीमती डी मेरेंट ने जो कुछ भी किया, उसे आप बुद्धिमानी अथवा घमंड चाहे जो कह लें। जब दीवाल आधी बन गई, तब कुशल कारीगर ने मौक़ा ताक कर काँच के दरवाज़े के अन्दर से उस समय एक कुदाली मार दी, जब कि महाशय ने उसकी तरफ़ अपनी पीठ दिखलाई।

नवम्बर का महीना था। उषाकाल में लगभग चार बजे काम

खत्म हो गया। कारीगर मकान में ज़ीन की ज़ेर निगरानी में रहा। श्रीयुत डी मैरेट अपनी स्त्री के कमरे में सोया। सुबह उठ कर उसने लापरवाही से कहा :—"ओफ़! मुझको पासपोर्ट के लिये मजिस्ट्रेट के यहाँ ज़रूर जाना चाहिये।"

उसने अपना टोप सिर पर पहिन लिया और वह दरवाज़े की ओर चला। थोड़ी दूर चल कर वह फिर लौटा और उसने ईसामसीह की तस्वीर उठा ली। उसकी स्त्री ख़ुशी के मारे काँपने लगी।

'वह डुवाइवर के यहाँ जावेगा,' उसने सोचा।

ज्योंही महाशय दरवाज़े के बाहर गया, श्रीमती डी मैरेट ने रोज़ले के लिये घंटी बजाई। इसके बाद भयकर आवाज़ से वह चिल्ला उठी—

"कुदाली, कुदाली! काम करो! मैंने देख लिया कि गोरेन फ्लाट ने रात को मेरे भाव को समझ लिया था। हमको सूराख बनाने के लिये और उसे बन्द कर देने का समय मिलेगा!"

पलक झपते ही रोज़ले ने अपनी स्वामिनी को एक छोटी कुदाली लाकर दी। वह अकथनीय उत्साह के साथ दीवाल को गिराने लगी। वह बहुत-सी ईंटें निकाल चुकी थी और ज्योंही वह पहिले आघातों ने अधिक ज़ोर का आघात दीवाल पर जमाने के लिये पीछे हटी, त्योंही उसने श्रीयुत डी मैरेट को अपने पीछे खड़ा हुआ देखा। उसको ग़श आ गया।

"श्रीमती को बिस्तर पर लिटा दो," महाशय ने लापरवाही से कहा।

उसको इस बात का शक था कि उसकी अनुपस्थिति में यही बात होगी। इसी आशंका से प्रेरित होकर अपनी स्त्री के लिये उसने यह फन्दा रचा था। उसने मजिस्ट्रेट को लिख कर भेज दिया था और डुवाइवर के पास एक सन्देश भिजवा दिया था। जिस समय मकान की सारी गड़बड़ी दुरुस्त हो चुकी थी, उसी समय गौरेन आया।

"ड्राइवर," श्रीयुत डी मैरेट ने पूछा, "क्या तुमने स्पेन-निवासियों से, उस समय, कुछ ईनामसनोद के चित्र खरीदे थे, जब वे लोग यहाँ से गुजरे थे ?"

"नहीं, महाशय।"

"ठीक है, मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ" उसने शेर के समान अपनी स्त्री की ओर देख कर उससे कहा—"जीन" उसने अपने विश्वस्त सेवक की ओर मुड़ कर कहा, "तुम मेरा खाना श्रीमती डी मैरेट के कमरे में लाकर सजाओ। वह बीमार हैं। जब तक उनकी तबियत ठीक नहीं हो जाती, तब तक मैं उनके पास रहूँगा।"

यह बेरहम आदमी अपनी स्त्री के पास बीस रोज़ तक रहा। पहले दिनों में जब कि दीवाल द्वारा बन्द किये हुए कमरे में आवाज़ होने लगी और जोसेफाइन उससे इस अज्ञात मर रहे आदमी के लिये अनुनय-विनय करने लगी, तब उसने उससे एक भी शब्द न बोलने का आग्रह किया।

"तुमने ईश्वर के सामने शपथ खाई है कि वहाँ कोई नहीं है।"

बिल्लियों का स्वर्ग

लेखक—एमिली ज़ोला

चाची मुझे अंगोरा की एक बिल्ली दे गई हैं। जहाँ तक मैं जानती हूँ, उससे अधिक मूर्ख पशु कहीं न मिलेगा। एक दिन शीत-काल की सन्ध्या में, आग के सामने बैठ कर मेरी बिल्ली ने मुझसे यह कहा :

(१)

उस समय मैं दो वर्ष की थी। मैं सब बिल्लियों में मोटी और सीधी जान पड़ती थी। इस छोटी-सी उम्र में ही मैंने सुहावने गार्हस्थ्य जीवन के प्रति बड़ी तीव्र घृणा का भाव धारण कर लिया। मैंने उस परमात्मा का कुछ भी उपकार न माना, जिसने मुझे तुम्हारी चाची के पास भेज दिया था। वह योग्य महिला मुझे प्यार करती थी। बरतन रखने की आलमारी के भीतर मेरा सुन्दर शयनागार था। मेरे पास परों की तकिया और तिहरी दुलाई थी। यह शयनागार जितना सुखद था, भोजन भी उतना ही स्वादिष्ट। रोटी और शोरुआ की तो बात ही छोड़िये। मुझे तो सदा गोश्त—सुन्दर लाल गोश्त—खाने को मिलता था।

इस प्रकार सुखद जीवन व्यतीत करते हुये भी मेरी केवल एक इच्छा थी—मेरा एक स्वप्न था। वह इच्छा यह थी कि खुली हुई खिड़की में से मैं भाग जाऊँ और छत पर दौड़ लगाऊँ। दुलार में मुझे आनन्द न आता था। अपने बिस्तर की कोमलता से मुझे घृणा हो गई थी और मैं अपनी मोटाई से तो बिल्कुल बेज़ार हो उठा था। सारा दिन सुख ही सुख में बिता देने से मन में ऊब उठी थी। मैं यह कह देना चाहती हूँ कि गरदन फैलाते समय, मैं खिड़की में से सामने वाला

तीन बिल्लियाँ जो मकान के छत से लुढ़कती हुई नीचे चली आ रही थीं, मेरे पास आकर भयंकर गर्जन-तर्जन करने लगी। मैं जिस समय डर के मारे बेहोश-सी होने लगी, तब उन्होंने मुझे निरा मूर्ख समझा। वे कहने लगीं कि वे तो मज़ाक में 'म्याऊँ म्याऊँ' कर रही थीं। मैं भी उनके साथ 'म्याऊँ-म्याऊँ' करने लगी। वह बड़ा सुहावना जान पड़ा। वे खुश-मिजाज़ बिल्लियाँ मेरे समान मोटी न थीं। जिस समय मैं जस्ते की रकाबियो पर गेंद के समान लुढ़क जाती थी, उस समय वे मेरा मज़ाक उड़ाने लगती थीं। यह जस्ता सूरज की तेज़ रोशनी में तप गया था, इसलिये उस पर से फिसल जाना अस्वाभाविक न था। उसमें से एक हँस-मुख पुराना बिलाव मेरा जिगरी दोस्त बन गया। उसने मुझे पूर्ण शिक्षा देने का वचन दिया और मैंने उसके इस आश्वासन को धन्यवाद-पूर्वक स्वीकार कर लिया।

अहा! तुम्हारी चाची की उदारता से मैं कितनी दूर पहुँच गई थी!

मैंने मोरियों का पानी पिया। मुझे चीनी-मिश्रत दूध भी इसके समान मीठा नहीं लगता था! मुझे वहाँ की सभी चीज़ें सुन्दर और आकर्षक प्रतीत होती थीं। एक बिल्ली—ज़बर्दस्त डरावनी बिल्ली वहाँ से निकली। उसको देख कर एक अज्ञात भय ने मुझे मानो धर दबाया। मुझे इस प्रकार के उत्कृष्ट जन्तु केवल स्वप्न में ही दिखलाई पड़ते थे। उसकी रीढ़ प्रशंसा के योग्य लचीली थी। हम लोग इस नवागन्तुक का अभिवादन करने के लिये लपके। इस दौड़ में मेरे तीनो साथी मेरे साथ थे। मैं सब के आगे निकल गई। अब मैं इस मनोमुग्धकारी सुन्दरी को अभिवादन करने जा रही थी, तभी मेरे एक साथी ने मेरी गरदन पर काट खाया। मैं दर्द के मारे चिल्ला उठी।

"वाह!" वृद्ध बिलाव ने मुझको दूर खींच कर ले जाते हुए कहा—"हम लोग अभी बहुत-सी दूसरी सुन्दरियों को देखेंगे।"

(३)

एक घण्टा घूमने के बाद मुझे बड़े ज़ोर से भूख लगी।

"मकान की छत पर कुछ खाने को है?" मैंने अपने मित्र से पूछा।

"यहां क्या रक्खा है?"—उसने बुद्धिमानी से कहा।

इस उत्तर से मुझे बड़ा दुःख हुआ। यद्यपि मैंने बहुत तलाश किया; परन्तु मुझे वहां कुछ भी न मिला। निदान, मुझे छत पर एक युवती अपना भोजन बनाती हुई दिखलाई पड़ी। खिड़की के नीचे टेबिल पर लाल-लाल मांस का पका हुआ एक सुन्दर टुकड़ा रक्खा था, जिसे देख कर मेरी भूख भड़क उठती थी।

"यही तुम्हारे काम का स्थान है!" मैंने मन ही मन भोलेपन से कहा। मैं टेबिल पर कूद पड़ी और गोश्त को उठा लिया; परन्तु स्त्री ने मुझे देख लिया था। उसने मेरी पीठ पर झाड़ू का एक भयंकर प्रहार किया। मैंने मांस को छोड़ दिया और घबड़ा कर कसम खाती हुई भाग खड़ी हुई।

"तुम अपने गांव के बाहर क्यों जाती हो?" बिलाव ने कहा—"टेबिल पर रक्खे हुये गोश्त को खाने की कभी भी लालसा न करनी चाहिये। तुम्हें तो मोरियों के अन्दर ही भोजन की तलाश करनी चाहिये।"

आज तक मेरी समझ में यह बात कभी न आई थी कि रसोई-घर के मांस में बिल्लियों का कुछ भी हक नहीं होता। मेरे पेट में चूहे कूद रहे थे—भूख से मैं तड़प रही थी। बिलाव ने मुझको यह कह बिल्कुल निराश कर दिया कि हमको रात तक ठहर जाना चाहिये। रात होने पर हमको सड़क पर चलना चाहिये और वहां पर पड़े हुये कचरे के ढेर पर हमला करना चाहिये। रात होने तक ठहरो। उसने एक

अनुभवी दार्शनिक के समान यह बात धीरे से कही। मैं—मैं—इस बढ़ते हुये उपवास को देख कर मूर्च्छित-सी होने लगी।

(४)

धीरे-धीरे रात भी आई—ऐसी शीत रात जिसने मुझे ठण्ड के मारे कँपा दिया। रिमझिम-रिमझिम पानी बरस रहा था। ठण्डी हवा तीखे तीरो जैसी मेरे शरीर में प्रवेश करने लगी। इसके बाद मूसलधार पानी हहर-हहर कर बरसने लगा। हम लोग ज़ीने के रोशनदान से नीचे उतरे। मुझे सड़क बड़ी भद्दी दिखलाई पड़ रही थी। गरम सूर्य का प्रकाश बिल्कुल न था। सूर्य भी नहीं दिखलाई पड़ता था। जो छत चमक कर सफ़ेद से दिखलाई पड़ते थे और जहाँ धूप तापकर आनन्द मिलता था, वहाँ अब अन्धेरा ही अन्धेरा दिखलाई पड़ता था। मेरे पंजे चिकने रास्तों पर से फिसल पड़े। इस समय मुझे अपनी तिहरी रज़ाई और पंखे की तकिया का स्मरण हो आया।

ज्योंही हम लोग सड़क पर पहुँचे कि मेरा मित्र बड़ा बिलाव भी काँपने लगा। उसने अपने को फुला लिया। इसके बाद वह सिकुड़ कर छोटा रूप धारण कर मकानों के अन्दर चुपचाप घुस पड़ा। उसने मुझे शीघ्रता से उसका अनुकरण करने के लिये कहा। ज्योंही वह गाड़ीघर के दरवाज़े के पास पहुँचा, वहाँ जाकर वह छिप गया। वहाँ उसे बड़े आराम का अनुभव हुआ। मैंने उससे, हम लोगों के भागने का कारण पूछा।

"क्या तुमने वहाँ एक आदमी को टोकरी और नूकदार छड़ी लिये हुये देखा था ?" उसने पूछा।

"हाँ।"

"ठीक ! अगर उसने हम लोगों को देख लिया होता, तो वह हमारे सिर पर वही छड़ी जमा देता और इसके बाद वह हमको पका कर खा जाता।"

"हम लोगों को पका कर क्या जाता ?" मैंने चिल्ला कर पूछा—"तब तो सड़कों पर हमारा अधिकार नहीं है ! हम लोग कुछ खाते भी नहीं हैं, तब भी मारे जाते हैं !"

(५)

किसी तरह लोगों ने अपने घरों का कूड़ा करकट अपने दरवाज़ों के सामने डाल ही दिया था। मैंने निराश मन से उन ढेरों को टटोला, मुझे मांस रहित दो या तीन हड्डी के टुकड़े मिले, जो कोयले के साथ चले आये थे। इसी समय मेरी समझ में आया कि ताज़ा फेफड़े और गोश्त में कितना रस रहता है। मेरा मित्र बिलाव कूड़े के ऊपर कारीगर के समान छान बीन करने लगा। प्रातः काल तक मैं उसके साथ दौड़ती फिरी। हम लोग प्रत्येक रास्ते के फर्श को देखते और कभी भी जल्दबाज़ी न करते थे। लगभग दस घंटे तक बरसते पानी में मैं घूमती रही। मैं बराबर काँप रही थी। अधम मार्ग और अधम स्वतंत्रता ! आह ! इस समय मुझे अपने कारागार में वापस चले आने की कितनी प्रबल इच्छा होने लगी !

प्रातःकाल के समय बिलाव ने मुझे लड़खड़ाते हुये देखा।

"तुमको तो काफ़ी मिल चुका ?" उसने आश्चर्य-जनक दृष्टि से पूछा।

"हाँ," मैंने जवाब दिया।

"क्या तुम घर वापस जाना चाहती हो ?

"अवश्य, परन्तु मुझे घर कैसे मिलेगा ?"

"मेरे साथ आओ। आज सुबह तुम्हारे समान मोटी-ताज़ी बिल्ली को अपने साथ आती देख कर, मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि तुम स्वतन्त्र जीवन के कठिन आनन्द के लिये पैदा नहीं हुई हो। मुझे तुम्हारा मकान मालूम है। मैं तुम्हें दरवाज़े तक पहुँचा दूँगा।"

वह बड़ा भला बिलाव था। जब हम लोग घर पहुँच गये तब उसने बड़ी सरलता से कहा :—

"बन्दे !" एक विरक्त भाव उसके स्वर में था।

"नहीं !" मैं चिल्ला उठी—"हम लोग इस तरह जुदा नहीं हो सकते। तुमको मेरे साथ रहना पड़ेगा। हम लोग एक ही बिस्तर पर लेटेंगे और साथ-साथ गोश्त खायँगे। मेरी मालकिन बड़ी भली औरत है..."

उसने मुझे बात भी खत्म न करने दी—

"चुप रहो !" उसने तेज़ी के साथ कहा—"तुम मूर्ख हो। मैं पंखों की कोमल तकियों के अन्दर मर जाऊँगा। तुम्हारे जीवन का तरीक़ा दोग़ले बिल्लों के लिये बहुत अच्छा है। स्वतंत्र बिल्लियाँ, तुम्हारे बिस्तर और गोश्त को कारागार के मूल्य पर कभी नहीं खरीद सकते। बन्दे !"

वह शीघ्र ही छप्पर पर चढ़ गया। मैंने उसके बड़े और दुबले-पतले शरीर को उदीयमान सूर्य की किरणों में आनन्द के साथ काँपते हुये देखा। जिस समय मैं घर के अन्दर आई, उस समय, तुम्हारी चाची ने मुझे चाबुक से ख़ूब मार लगाई; लेकिन यह मार खाकर भी मुझे परमानन्द हुआ। मुझे मार खाकर गरम होने का रसास्वादन मिला। जिस समय वह मुझे मार रही थीं, उस समय मैं उस गोश्त के पाने के आनन्द-दायक विचारों में डूबी हुई थी, जो मुझे बहुत जल्द मिलने वाला था।

"तुमने देखा," मेरी बिल्ली ने बात खत्म करते हुये और आग के सामने हाथ-पैर फैलाते हुये कहा—"मेरी प्यारी स्वामिनी, वास्तविक आनन्द और स्वर्ग उस कमरे के अन्दर बन्द होकर मार खाने में है, जहाँ गोश्त रखा हो।"

मैं बिल्लियों के लिये [illegible] रही हूँ।

जैनी

लेखक—विक्टर ह्यूगो

(१)

रात्रि का समय था। कमरा साधारण परन्तु गरम और गन्दा था। उसके अन्दर धुँधला प्रकाश फैला हुआ था। इस प्रकाश और जलते हुये चूल्हे के प्रकाश द्वारा जिससे सिर के ऊपर के खाँखर लाल हो रहे थे, मकान के अन्दर की चीजें बड़ी कठिनाई से देखी जा सकती थीं। मछुआ के जाले दीवाल पर टँगे हुये थे। एक कोने में घर के कुछ बरतन और कढ़ाइयाँ एक बेढंगी आलमारी पर रखी हुई थीं। इसके अलावा एक बड़ा बिस्तर बिछा हुआ था जिस पर लम्बे पर्दे लटके हुये थे। दो पुरानी बेंचों पर एक तोशक फैली हुई थी, जिस पर पाँच छोटे-छोटे बच्चे घोसले में पक्षियों के समान सो रहे थे। बिस्तर के पास अपने मस्तक को पलंग के चादर से ढाँके हुये माता बैठी हुई थी। वह अकेली थी। मकान के बाहर काला समुद्र, तूफ़ानी फेनिल लहरों से टकराता हुआ, सिसकता और बड़बड़ाता-सा जान पड़ता था। उसका पति समुद्र पर गया हुआ था।

लड़कपन में वह मछुए का काम करता था। उसका जीवन मानों नित्य जल के साथ युद्ध करने के लिये ही था। प्रतिदिन परिश्रम करके उन बच्चों का भरण-पोषण करना पड़ता था। प्रतिदिन, वर्षा, हवा, और तूफ़ान उसके मछलियाँ पकड़ने में बाधक हुआ करता था। जिस समय वह अपनी नाव को निर्जन समुद्र में चलाया करता, उस समय उसकी स्त्री घर पर पुराने कपड़ों को सिया करती; जालों को

सुधारा करती; काँटों को देखा करती और आग को निहारा करती, जहाँ मछलियों का गोश्त पका करता था। ज्योंही पाँचों बच्चे सो जाते, वह घुटनों को टेक कर बैठ जाती और ईश्वर से समुद्र की तरंगों और अन्धकार से लड़ रहे अपने पति की कुशलता के लिये प्रार्थना करती थी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसका जीवन सतत कठिनाइयों से भरा हुआ था। चट्टानो से टक्कर खाने वाली लहरों के निकट ही बहुधा मछलियाँ मिला करती थीं। इस प्रकार की लहरों की लम्बाई-चौड़ाई उसके अपने कमरे से दुगुनी से अधिक नहीं होती थी। यह अन्धकार-पूर्ण स्थान बहुधा मरुस्थल के रूप में परिणत हुआ करता था। इतना होने पर भी शीत काल की रात के समय तूफ़ान और कोहरे में उसे अपनी वांछित वस्तु खोजनी पड़ती थी। इसके खोजने में लहरों और हवा के ज्ञान तथा साधारण बुद्धि की आवश्यकता पड़ती थी। और वहाँ जिस समय मन्थर गति से प्रवाहित होने वाली लहरें हरित मणि सर्पों के समान तेज़ी से भागती थीं, अन्धकार की खाड़ी मानो आगे बढ़ कर लहरों का स्वागत करने लगती थी, और जहाज़ की ऐंठी हुई रस्सियाँ डर से घबड़ायी-सी कराहने लगती थीं, उस समय, बर्फ़ से ढँके हुये समुद्र के बीच में वह अपनी जेनी का विचार किया करता और उधर जेनी अपनी झोपड़ी में बैठी हुई अश्रुपूर्ण नेत्रों से, मछुए का ध्यान किया करती थी।

उसका ध्यान करते हुये वह ईश्वर से प्रार्थना किया करती थी। समुद्र के पक्षियों के कर्कश और व्यंग से भरे हुये चीत्कार को सुन कर वह घबड़ा उठती थी। चट्टान पर टकराती हुई समुद्र की तरंगों की गर्जना से उसकी आत्मा भयभीत हो उठती; परन्तु वह अपने विचारों में—अपने शरीरों के विचारों में तल्लीन रहती था। उसके नन्हें-नन्हें बच्चे, सरदी और गरमी में नंगे पैर घूमते थे। गेहूं का रोटी उनको कभी खाने को नहीं मिलती। बाजरे की रोटियों से ही उनको पेट भरना पड़ता

है । भगवन ! वायु भट्टी की धौंकनी के समान गरज रही है और समुद्र-तट निहाई के समान प्रतिध्वनित हो रहे हैं । वह रोई और काँपने लगी । उन अभागिनी स्त्रियों का क्या हाल होगा, जिनके पति समुद्र पर हैं ! इस बात का कहना कितना भयंकर है कि, "मेरे स्नेही,—पिता, प्रेमी, भाई, पुत्र—तूफान में फँस गये हैं ।" जैनी भी बहुत अधीर हो रही थी । उसका पति अकेला था—इस भयंकर रात्रि में निस्सहाय और बिल्कुल अकेला था । उसके बच्चे इतने छोटे थे कि उसे ज़रा भी सहायता नहीं पहुँचा सकते । ग़रीब माता ! अब वह कहने लगी, "क्या ही अच्छा होता कि वे बड़े होते और अपने पिता की सहायता करते ।" मूढ़ स्वप्न ! कुछ समय के बाद जब कि वे अपने पिता के साथ तूफान में फँस जावेंगे, उस समय वह अश्रुपूर्ण नेत्रों से कहेगी—"क्या ही अच्छा होता कि वे इस समय भी नन्हें बच्चे रहते ।"

(७)

जैनी ने लालटेन और अपना लबादा उठा लिया । 'अभी समय है' उसने मन में कहा, 'जाकर देखना चाहिये कि वह लौट कर घर आ रहा है अथवा नहीं । चल कर यह भी देखना चाहिये कि समुद्र कुछ शान्त हुआ है या नहीं और मस्तूल का प्रकाश जगमगा रहा है अथवा नहीं ।' वह बाहर निकल पड़ी । वहाँ कुछ भी दिखाई न पड़ता था । आसमान पर केवल एक सफ़ेद रेखा-सी दिखलाई पड़ती थी । रिमझिम-रिमझिम बूँदाबाँदी हो रही थी । सघन अंधकार छाया हुआ था । प्रातःकाल होने में देर नहीं थी । लेकिन पानी की ठंडी बूँदें पड़ रही थीं, अतः अभी भी मकान की खिड़की से प्रकाश की कोई झलक तक नहीं दिखाई पड़ती थी ।

चारों तरफ़ दृष्टि फेंकने पर सहसा उसे एक टूटी हुई झोपड़ी दिखाई पड़ी, जिसके अन्दर न तो कोई प्रकाश था और न अग्नि

ही। हवा के तीव्र झोंकों से दरवाज़ा भड़भड़ा रहा था। कीड़ों की खाई हुई दीवालें, इतनी कमज़ोर थीं कि वे जर्जरित छत के वज़न को सम्हालने में असमर्थ-सी प्रतीत हो रही थीं। सड़े हुये छप्पर के समूह हवा के झोंकों से हिल रहे थे।

"ठहरो," उसने कहा—"मैं उस ग़रीब विधवा को भूली जा रही हूँ जिसको मेरे पति ने उस रोज़ अकेली और बीमार पाया था। इस समय उसकी क्या हालत है, यह मुझे अवश्य देखना चाहिये।"

उसने दरवाज़े को खटखटाया और किसी उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी; किन्तु किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। जैनी समुद्र की ठण्डी हवा के स्पर्श से काँप उठी।

'वह बीमार है। और उसके ग़रीब बच्चे! उसके केवल दो बच्चे हैं; परन्तु वह बहुत ग़रीब है और उसका पति भी नहीं है।'

उसने फिर दरवाज़ा खटखटाया और पुकारा, "ऐ पड़ोसिन!" परन्तु फिर भी कोई जवाब न मिला।

'भगवन्!' उसने अपने आप कहा—'वह कितनी गहरी नींद में सो रही है! उसको जगाने में कितनी कठिनाई हो रही है!"

इसी समय दरवाज़ा आप ही आप खुल गया। वह कमरे के अन्दर गई। उसकी लालटेन ने अन्धकार-पूर्ण और निस्तब्ध कमरे में प्रकाश फैला दिया। उसकी छत पर से उसी प्रकार पानी टपकता हुआ-सा दिखलाई पड़ने लगा, जिस प्रकार चलनी में छेद हो जाने से आटा गिरने लगता है। कमरे के एक कोने में एक भयंकर आकृति पड़ी हुई थी। वह आकृति एक स्त्री की थी, जो निश्चेष्ट, नंगे पैरों और संज्ञा-शून्य नेत्रों से निहार रही थी। उसका टूटा सफ़ेद हाथ बिस्तर के पास के घास पर पड़ा हुआ था। वह मर चुकी थी। एक समय था, जब वह हृष्ट-पुष्ट और सुखी माता थी। अब वह हड्डियों का एक ढांचा मात्र रह गई था, जैसा कि निर्धन मानव समाज बन जाया करता है।

ही। हवा के तीव्र झोंकों से दरवाज़ा भड़भड़ा रहा था। कीड़ों की खाई हुई दीवालें, इतनी कमज़ोर थीं कि वे जर्जरित छत के वज़न को सम्हालने में असमर्थ-सी प्रतीत हो रही थीं। सड़े हुये छप्पर के समूह हवा के झोंकों से हिल रहे थे।

"ठहरो," उसने कहा—"मैं उस ग़रीब विधवा को भूली जा रही हूँ जिसको मेरे पति ने उस रोज़ अकेली और बीमार पाया था। इस समय उसकी क्या हालत है, यह मुझे अवश्य देखना चाहिये।"

उसने दरवाज़े को खटखटाया और किसी उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी; किन्तु किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। जैनी समुद्र की ठण्डी हवा के स्पर्श से काँप उठी।

'वह बीमार है। और उसके ग़रीब बच्चे! उसके केवल दो बच्चे हैं; परन्तु वह बहुत ग़रीब है और उसका पति भी नहीं है।'

उसने फिर दरवाज़ा खटखटाया और पुकारा, "ऐ पड़ोसिन!" परन्तु फिर भी कोई जवाब न मिला।

'भगवन्!' उसने अपने आप कहा—'वह कितनी गहरी नींद में सो रही है! उसको जगाने में कितनी कठिनाई हो रही है!"

इसी समय दरवाज़ा आप ही आप खुल गया। वह कमरे के अन्दर गई। उसकी लालटेन ने अन्धकार-पूर्ण और निस्तब्ध कमरे में प्रकाश फैला दिया। उसको छत पर से उसी प्रकार पानी टपकता हुआ-सा दिखलाई पड़ने लगा, जिस प्रकार चलनी में छेद हो जाने से आटा गिरने लगता है। कमरे के एक कोने में एक भयंकर आकृति पड़ी हुई थी। वह आकृति एक स्त्री की थी, जो निस्पंद, नंगे पैरों और संज्ञा-शून्य नेत्रों से निहार रही थी। उसका ठंडा सफ़ेद हाथ बिस्तर के पास के घास पर पड़ा हुआ था। वह मर चुकी थी। एक समय था, जब वह हृष्ट-पुष्ट और सुखी माता थी। अन्त में हड्डियों का एक ढाँचा मात्र रह गई थी, जैसा कि निर्धन मानव समाज बना डाला करता है।

उसने संसार में भयंकर जीवन-संग्राम का सामना किया था। उसी परिश्रम का यह परिणाम था।

जिस बिस्तर पर माता पड़ी हुई थी, उसके पास दो छोटे बच्चे—एक लड़का और एक लड़की—अपने झूले में साथ-साथ पड़े हुये थे। वे सुखद स्वप्न देखते हुये मुस्करा रहे थे। जिस समय उनकी माँ को अपने मरने का समय निकट-सा जान पड़ा, उस समय उसने अपना लबादा उनके पैरों पर डाल दिया और उन्हें अपनी पोशाक से ढँक दिया था। यह सब प्रयास उसने उन्हें गरम बनाये रखने के लिये किया था, जब कि वह स्वयं ठंडी हो चुकी थी।

वे अपने पुराने टूटे फूटे झूले में कितनी सुख की नींद सो रहे थे। उनकी साँस शान्ति-पूर्वक चल रही थी और उनके मुख शान्त प्रतीत हो रहे थे। ऐसा लगता था कि सोते हुये इन बालकों को किसी तरह भी नहीं जगाया जा सकता। बाहर मूसलधार पानी बरस रहा था, और समुद्र से खतरे की घंटी के समान आवाज़ निकल रही थी। पुराने टूटे हुये छत से हवा के झोंके सायँ सायँ कर बह रहे थे। वहीं से पानी की एक बूँद मृत मुख पर गिरी और वह आँसू के समान ढुलक गई।

(२)

जैनी मरी हुई औरत के मकान के अन्दर क्यों गई! वह अपने लबादे के अन्दर क्या दबाये थी? वह इस प्रकार तेज़ी के साथ काँपती हुई, बिना उसकी तरफ़ देखने की हिम्मत किये हुये, अपने मकान की ओर क्यों लौट पड़ी! उसने अपने बिस्तर के नीचे परदे की आड़ में क्या चीज़ छिपा दी! वह क्या चुरा रही थी?

जिस समय वह मकान के अन्दर गई, उस समय चट्टानें सफ़ेद हो रही थीं। वह बिस्तर के पास रखी हुई कुरसी पर बैठ गई। वह बिल्कुल पीली पड़ गई था। ऐसा प्रतीत होता था कि उसे पश्चात्ताप

हुआ है। उसका मस्तक तकिया पर गिर पड़ा और ज़रा-ज़रा-सी देरी में वह उस समय टूटे हुये शब्दों में आप ही आप कुछ कहने लगती जब कि मकान के बाहर उद्दण्ड समुद्र सिसक रहा था।

'मेरे अभागे पति! भगवन्! वह क्या कहेगा? वह इस समय बड़ी आफ़त में है। मैंने इस वक्त क्या कर डाला? मेरे पास इस समय पाँच बच्चे हैं! उनका पिता रात-दिन मेहनत करता है। इतने पर भी जान पड़ता है कि उसके लिये काफी चिन्ता नहीं है। फिर मैं उसे यह चिन्ता और दे रही हूँ। क्या वह वही है? नहीं, कुछ नहीं है। मैंने ग़लती की। इसके लिये यदि वह मुझे मारे, तो न्याय करेगा। क्या वह वही है? नहीं? बड़ी अच्छी बात है। दरवाज़ा खुल रहा है। जान पड़ता है कि कोई अन्दर आ रहा है; परन्तु नहीं। क्या मैं उसको अन्दर आता हुआ देख कर डर जाऊँगी?'

इसके बाद वह अपनी ही विचार-धारा में डूबी रही। वह जाड़े से काँप रही थी। उसको बाहर के जल पक्षियों के कोई भी शब्द सुनाई नहीं पड़ रहे थे, जो चिल्ला कर उड़ जाते थे। उसे समुद्र और वायु के कोप का भी पता नहीं चल रहा था, मानो वह अचेतनावस्था में पहुँच गई थी।

सहसा दरवाज़ा खुला। प्रातःकाल का धुँधला प्रकाश कमरे के अन्दर प्रविष्ट हो गया। मछुआ, पानी से भीगा हुआ, अपना जाला घसीटता हुआ, ड्योढ़ी पर दिखलाई पड़ा। वह प्रसन्नता से हँसता हुआ बोला—"जल-सेना आ गई।"

"तुम!" जैनी चिल्ला उठी और उसने अपने पति को एक प्रेमी की तरह गले से चिपका लिया और उसने अपना मुँह उसकी कड़ी सदरी के अन्दर दबा लिया।

"मैं आ गया, प्यारी," कहते हुये उसने अपना प्रसन्न चेहरा

ग्नि के प्रकाश में जैनी को देख लेने का अवसर दिया। इस चेहरे को
ह बहुत अधिक चाहती थी।

"आज भाग्य ने साथ नहीं दिया," उसने कहा।

"आज किस प्रकार की हवा थी?"

"भयंकर।"

"कुछ मछलियाँ मिलीं?"

"नहीं, परन्तु कुछ चिन्ता नहीं। मैं तुमको फिर अपने बाहु-पाश में
ा सका हूँ और इससे मैं सन्तुष्ट हूँ। आज मुझे एक भी मछली नहीं
ली। मैंने आज अपने जाल को फाड़ डाला है। आज रात को हवा
शैतान सवार था। तूफान में एक समय मुझे ऐसा जान पड़ा कि
ब नाव डूबती है। रस्सी टूट गई; परन्तु इतने समय तक तुम क्या
रती रहीं?"

जैनी जैसे काँप उठी।

"मैं?" उसने दुःखित होकर कहा—"ओफ़, कुछ नहीं। सदा के
समान काम करती रही। मैं कपड़े सीती रही। समुद्र की गर्जना को
सुन कर मैं डर गई थी।"

"हाँ, शीतकाल का समय बहुत कठिन होता है; परन्तु अब कोई
चिन्ता की बात नहीं है।"

इसके बाद वह काँपने लगी। ऐसा प्रतीत होने लगा, मानो वह
कोई अपराध कर बैठी हो।

"प्यारे!" उसने कहा, "अपनी पड़ोसिन मर गई। वह तुम्हारे
जाने के बाद ही कल रात को मरी है। वह दो छोटे बच्चे छोड़ गई है।
क का नाम विलियम और दूसरी का नाम मेडेलाइन है। बालक
कठिनाई से चल सकता है और बालिका सिर्फ़ तोतली बोली बोल
सकती है। उस ग़रीब और भली औरत को भयंकर तकलीफ़ थी।"

मछुआ गम्भीर हो गया। उसने अपनी बालवाली टोपी, जो तूफ़ान में मिट्टी से भर गई थी, एक कोने में फेंक दी। "शैतान," उसने अपना सिर खुजाते हुये कहा—"हमारे पाँच लड़के हैं ही, इन्हें मिला कर अब सात हो जावेंगे। खराब मौसम में अभी भी हम लोगों को खाने को नहीं मिलता। अब हम लोग क्या करेंगे? ओफ़! यह मेरा अपराध नहीं है। यह परमात्मा की लीला है। ये चीज़ें मेरे लिये बड़ी महँगी पड़ेंगी। उसने इन नन्हें-नन्हें बच्चों की माँ को क्यों छीन लिया? इन बातों को समझना बहुत कठिन है। इन बातों को समझने के लिये विद्वत्ता चाहिये। कितने छोटे-छोटे बच्चे हैं! प्यारी, जाओ, उन्हें उठा लाओ। यदि वे जाग गये होंगे, तो उन्हे अपनी मृत माँ को देख कर बहुत डर लग रहा होगा। हम उन्हें अपने बच्चों के साथ पाल लेंगे। वे अपने पाँच बच्चों के भाई-बहिन बन जायँगे। जिस समय ईश्वर देखेगा कि हमको अपने बच्चों के अलावा इन दो बच्चों की भी परवरिश करनी पड़ती है, तब वह हमें और अधिक मछलियाँ देगा। मैं पानी पीकर अपना काम चला लूँगा। मैं दुगुना परिश्रम करूँगा। बस, इससे काम चल जावेगा। जाओ, और उन्हें ले आओ! परन्तु माजरा क्या है? क्या यह बात तुम्हें पसन्द नहीं है? तुम तो नित्य ही आज की अपेक्षा अधिक जल्दबाजी से काम करती थी।"

और तभी उसकी स्त्री ने परदा हटा दिया!

"देखो!" उसने कहा।

था। वह ज्यों की त्यों फूली और फैली हुई थी। गत वर्ष की भयंकर घटनाओं को, मानव-समाज की बर्बरता की कड़ी टीका-टिप्पणी करते हुए, उन्होंने दुःख तथा धैर्य के साथ सहन किया था। इस समय जब कि वे युद्ध के समाप्त हो जाने के पश्चात्, सीमा प्रान्त की यात्रा कर रहे थे, तभी उन्होंने सब से पहिले जर्मन सैनिकों को देखा था, यद्यपि उन्होंने अश्वारोही सैनिक की हालत में किले की दीवारों में कई शीतल रातों में अपने कर्त्तव्य का पालन किया था।

वे भय और क्रोध मिश्रित भाव से उन डाढ़ी वाले सशस्त्र सैनिकों की ओर देख रहे थे जो कि फ़ान्स की समस्त भूमि पर अपने घर के समान स्वच्छन्द रूप से विराजमान थे। इसके अतिरिक्त उनकी आत्मा पर पुरुषत्व-हीन देश-भक्ति का ज्वर-सा चढ़ा हुआ प्रतीत होता था। उनको इस समय नूतन क्रियात्मक बुद्धि के भाव की ज़बर्दस्त आवश्यकता प्रतीत हो रही थी, जिसने कि इनका साथ कभी न छोड़ा था। महाशय इवियस के साथ दो अंग्रेज़ सज्जन बैठे हुए थे। वे इस देश में सैर करने के लिये आये हुए थे। वे लोग इनकी ओर आश्चर्य-पूर्ण दृष्टि से देख रहे थे। वे दोनों हट्टे-कट्टे थे और अपनी मातृ-भाषा में बात-चीत कर रहे थे। कभी-कभी वे अपनी 'गाइड बुक' को देखते जाते थे और उनमें छपे हुए स्थानों के नाम ज़ोर-ज़ोर से पढ़ते जाते थे।

अचानक रेलगाड़ी एक छोटे-से गाँव के स्टेशन पर रुकी और एक जर्मन अफ़सर अपनी तलवार को खनखनाते हुए, रेल के डब्बे की पैर रखने की दोहरी पट्टी पर कूदा। वह ऊँचे क़द का था, चुस्त वर्दी पहिने था और उसके गलमोछे आँख तक फैले हुए थे। उसके लाल बाल अग्नि के समान चमकते थे। उसकी हल्के ज़र्द रंग की लम्बी मूछें उसके चेहरे के दोनों तरफ़ इस प्रकार फैली हुई थीं, मानो वे मुँह को दो भागों में विभाजित कर रही हों।
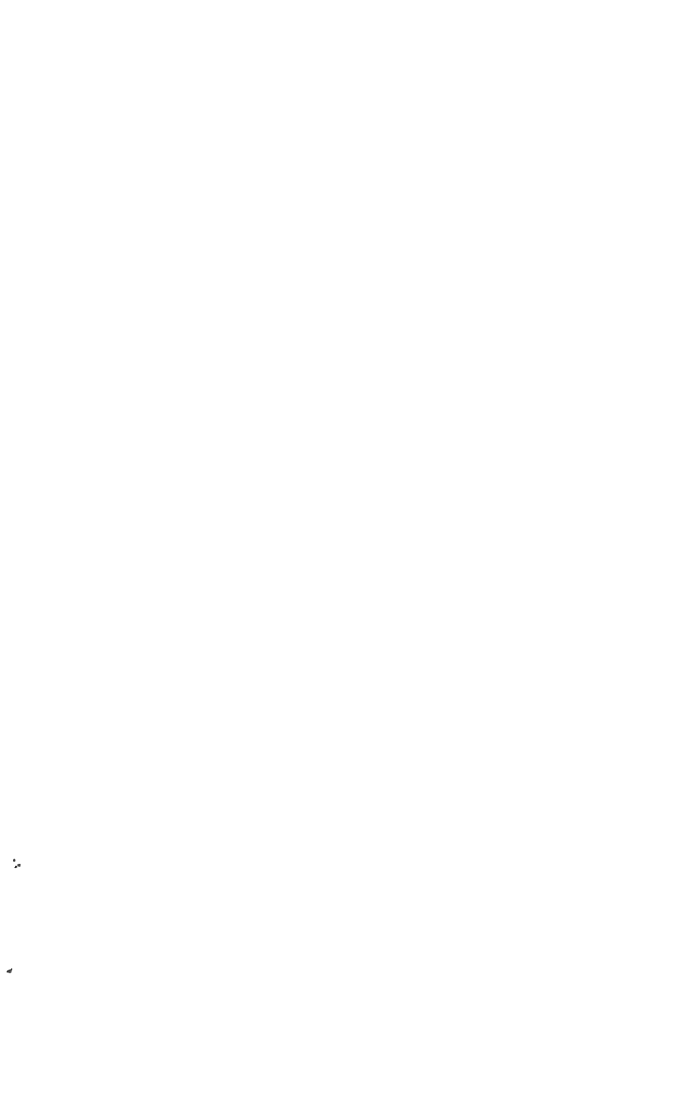
अंग्रेज़ सज्जन ने नम्रता-पूर्वक केवल यह उत्तर दिया—"वाह! अवश्य।"

वह फिर कहने लगा—"बीस साल के अन्दर समस्त यूरोप, उसका समूचा भाग हमारा हो जायगा। जर्मनी अकेला ही उन सबका मुक़ाबिला करने के लिये काफ़ी है।"

अंग्रेज़ सज्जनों के चेहरों पर बेसब्री के भाव प्रत्यक्ष रूप से दिखलाई पड़ने लगे। उन्होंने कोई जवाब न दिया। उनके चेहरे उदास हो गये। ऐसा प्रतीत होने लगा कि लम्बे गलमुच्छों के अन्दर

अंग्रेज़ सज्जन ने नम्रता-पूर्वक केवल यह उत्तर दिया—“वाह ! अवश्य ।”

वह फिर कहने लगा—“बीस साल के अन्दर समस्त यूरोप, उसका समूचा भाग हमारा हो जायगा । जर्मनी अकेला ही उन सबका मुक़ाबिला करने के लिये काफ़ी है ।”

अंग्रेज़ सज्जनों के चेहरों पर बेसब्री के भाव प्रत्यक्ष रूप से दिखलाई पड़ने लगे । उन्होंने कोई जवाब न दिया । उनके चेहरे उदास हो गये । ऐसा प्रतीत होने लगा कि लम्बे गलमुच्छों के अन्दर उनके चेहरे मोम से निर्मित किये गये हैं । इतना कह कर जर्मन अफ़सर हँसने लगा । इसके बाद थोड़ा टिक कर वह फिर तानों के तीर चलाने लगा । उसने फ्रान्स के पतन का मखौल उड़ाया और पराजित सेना का उपहास किया । उसने हाल ही में जीते हुए आस्ट्रिया का भी मज़ाक उड़ाया । उसने भिन्न-भिन्न दलों द्वारा शौर्यपूर्ण, परन्तु निष्फल आत्म-रक्षा की हँसी उड़ाई । उसने गार्डे मोबिले और बेकार तोपखानों की भी निन्दा की । उसने यह बतलाया कि जीती हुई तोपों से बिस्मार्क एक शहर का निर्माण करने जा रहा है । इस प्रकार द्वेष की आग उगलते हुए उसने महाशय इवियस की जाँघ पर बूट का ठोकर मारी । महाशय इवियस ने अपनी आँखें फेर लीं । उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा ।

अंग्रेज़ सज्जन, जो कुछ भी हो रहा था, उससे उदासीन-से जान पड़ने लगे । ऐसा प्रतीत होता था, मानो वे अचानक अपने ही द्वीप के अन्दर बन्द कर दिये गये हों और उन्हें संसार का कोलाहल कुछ भी न सुनाई पड़ रहा हो ।

अफ़सर ने अपना पाइप निकाला और अंग्रेज़ों की ओर घूर कर देखता हुआ कहने लगा—“क्यों जी, क्या तुम्हारे पास कुछ तम्बाकू है ?”

ने कहा—"मैं तुम्हारी मूँछों के बाल काट कर उनसे अपना पाइप भरूँगा।" ऐसा कहते हुये उसने अपना हाथ फ्रान्सीसी के मुँह की ओर बढ़ाया।

अंग्रेज़ सज्जन उनकी ओर घूर कर देखते रहे। उन्होंने पूर्ववत् अपना उदासीन भाव क़ायम रखा।

उस जर्मन ने फ्रान्सीसी की मूँछ के कुछ बाल नोच डाले। वह अधिकाधिक बाल उखाड़ने का प्रयत्न करने लगा। इस परिस्थिति में महाशय इवियस ने हाथ का झटका देकर, अफ़सर का हाथ हटा दिया और उसका कालर पकड़ कर, उसे फ़र्श पर पटक दिया। वह क्रोध में उन्मत-सा हो गया। उसकी कनपटी फूल गईं और उसकी आँखें चमकने लगीं। वह एक हाथ से अफ़सर का गला घोटने लगा और दूसरे हाथ की मुट्ठी बाँध कर, वह उसे ज़ोर से घूँसे मारने लगा। जर्मन ने छूटने का पूरा प्रयत्न किया; अपनी तलवार निकालनी चाही और अपने ऊपर आक्रमण कर रहे प्रतिद्वन्द्वी को पकड़ना चाहा; परन्तु महाशय इवियस ने उसे अपने ज़बर्दस्त वज़न से कुचल दिया था और वह बिना दम लिये उसको दबाये चला जा रहा था। वह बेतहाशा घूँसे जमा रहा था। उसे इस बात का भी ध्यान नहीं था कि उसके घूँसे कहाँ पड़ रहे हैं। जर्मन के मुँह से रक्त की धारा बहने लगी। उसका दम घुटने लगा। घर्र घर्र करते हुये गले से, उसने अपने टूटे हुये दाँतों को दबा कर इस क्रोधान्मत्त मनुष्य को दूर फेंकना चाहा, जो उसकी जान लिये डाल रहा था।

अंग्रेज़ सज्जन उठ खड़े हुये और भली-भांति देख सकने के इरादे से अधिक निकट आ गये। वे आनन्द और कौतूहल से भरे हुये वहीं खड़े रहे। वे एक दूसरे से हार-जीत के लिये शर्त करने को भी तैयार हो गये।

अचानक महाशय इवियस, अपने भयंकर आक्रमण से थक कर,

उन लोगों ने उन्हें अपने शत्रु से बीस क़दम की दूरी पर खड़ा किया। उनसे पूछा गया—"क्या तुम तैयार हो ?"

जिस समय वे जवाब दे रहे थे—"हाँ, महाशय," तब उन्होंने देखा कि एक अंग्रेज़ सज्जन ने, सूर्य की किरणों से उन्हें बचाने के लिये उनके सामने अपना छाता खोल कर फैला दिया था।

एक स्वर ने संकेत किया—"गोली छोड़ो।"

महाशय इवियस ने तुरन्त ही बिना निशाना लगाये, अललटप्पू गोली छोड़ दी। उसको यह देख कर आश्चर्य हुआ कि उसके सामने खड़ा हुआ जर्मन, लड़खड़ा कर, हाथ फैलाये हुये मर कर ज़मीन पर गिर पड़ा। उसने अफ़सर को मार डाला।

एक अंग्रेज़ सज्जन चिल्ला उठे—"आह !" वे एक विकट कौतूहल से सन्तुष्ट होकर आनन्द से उतावले बन कर काँपने लगे। दूसरे सज्जन ने, जिनके हाथ पर अभी भी घड़ी रखी हुई थी, महाशय इवियस का हाथ पकड़ कर उन्हें स्टेशन की ओर बड़ी तेज़ी से दौड़ाया। उनका दूसरा देशबन्धु साथ-साथ दौड़ता हुआ अभी भी समय देखता जाता था। दौड़ते समय उनकी मुट्ठियाँ बँधी हुई थी और कुहनियाँ बग़ल में दबी हुई थीं। "एक दो; एक दो !"

तीनों आदमी तेज़ी से दौड़ते हुये, हास्यप्रद समाचार-पत्र के हास्यास्पद चित्रों के समान, शीघ्र ही स्टेशन पहुँच गये।

रेलगाड़ी छूटने ही वाली थी। वे अपने डब्बे के अन्दर घुस पड़े। इसके बाद अंग्रेज़ सज्जनों ने अपने यात्रा के टोप उठा कर उन्हें अपने सिर के ऊपर तीन बार हिला कर कहा—

"हिप ! हिप ! हिप ! हुर्रा !"

इसके बाद बड़ी गम्भीरता के साथ एक के बाद एक—उन दोनों ने, महाशय इवियस से अपने अपने दाहिने हाथ मिलाये और फिर वे अपने स्थान में एक कोने में आ बैठे।

ज़िंगो

लेखक—जूडिथ गाटियर

राजमहल पर रात्रि का साम्राज्य था। संतरियों के सिवाय अन्य सभी लोग निद्रा-देवी की गोद में निमग्न थे। लेकिन नहीं; सब लोग नहीं सोये थे। एक मनुष्य दीवाल पर चढ़ कर अपने को छिपाये हुये, दालान और बग़ीचे की ओर चला जा रहा था। वह ख़ामोशी से चलता-चलता उस कमरे के अन्दर जा पहुँचा, जहाँ महारानी सो रही थीं। वहाँ लैम्प जल रहे थे, जिन पर रेशम के कपड़ों के आवरण थे। कमरे के अन्दर झिलमिल-झिलमिल-सी रोशनी हो रही थी। कमरे के भीतर मन्दिर के समान मन्द-मन्द सुगन्धित वायु बह रही थी। वह मनुष्य बिना किसी हिचकिचाहट के, आगे बढ़ता जा रहा है। वह महारानी के पलँग के बग़ल में जाकर खड़ा हो गया। महारानी उठ बैठीं; परन्तु चिल्लाईं नहीं।

अन्दर आने वाले को वे पहिचान गईं। वह ख़ूबसूरत सेना नायक नाके-श्रोसी-नो-सीकोने है। उसकी वर्दी मैली और धूल से भरी हुई है। उसमें ख़ून के दाग़ भी लगे हुये हैं, जो अभी तक सूखे नहीं हैं।

महारानी मच्छरदानी को हटा कर, फ़र्श पर कूद पड़ीं। वह अपनी सोने की लम्बी और हिलती हुई पोशाक में बड़ी सुन्दर और दयालु प्रतीत होती हैं। उन्हें देख कर यह भी अनुमान किया जा सकता है वह गर्भवती हैं और शीघ्र ही माता होने जा रही हैं।

"तुम!" वे ज़ोर से बोलीं—"तुम यहाँ क्या कर रहे हो! क्या हुआ! क्या तुम्हारी हार हो गई!"

"हार से भी खराब हुआ, महारानी," उसने जवाब दिया।

"हार से ज्यादा खराब क्या हो सकता है ? जल्द बतलाओ।"

"आसमान का फरिश्ता, हमारा बादशाह, और आपके प्रतापी पति मर गये। वह अपनी सेनायें विजय की ओर ले जा रहे थे, इसी समय कोरिया के सैनिकों ने उन्हें एक बाण मारा। उसी बाण की चोट से उनकी महान्-आत्मा, जिस स्वर्ग से आई थी, वहीं वापिस चली गई।"

"आह ! तब तो मुझे जो भय था, वह सही निकला !" महारानी ने विलाप करते हुए और अपने हाथ अपने लम्बे काले केशों में डालते हुए कहा—"मेरा दिल मुझसे कहता था कि जापान के बादशाह को, उन भयकर आदमियों से युद्ध मोल लेकर, समराङ्गण में अपनी जान जोखिम में न डालनी चाहिये। टिसियो-ऐ-टेनो ने मेरी सलाह पर ध्यान नहीं दिया। और अब वह मर गया ! मेरा दयालु पति, योद्धाओं के राजकुमार का पुत्र, और वह नेक आत्मा, जिसकी दया के कारण बर्फ़ के समान सफ़ेद रंग के एक लाख बगुलों का यहाँ निवास-गृह बना हुआ है, कारण कि एक बगुले में उसके पिता की आत्मा निवास करती थी, हाय ! मर गया। आह ! उसकी खुद की आत्मा इस वक्त कहाँ है ? अफ़सोस ! हम उसको कहाँ खोजने जायँ ?"

अचानक महारानी शान्त हो गईं। गौरव के साथ उन्होंने अपना हाथ उठाया और सेनापति को, जिसने अपना माथा उसके पैरों पर रख दिया था, उठने का संकेत किया।

"मुझको बतलाओ—क्या सब कुछ हाथ से चला गया ! क्या विजय हमारे पास से सदा के लिये चली गई ?"

"कुछ नहीं गया है, मेरी महारानी," तारे-श्रौलो ने घुटनों के बल खड़े होकर कहा—"मैं बादशाह के शव को अपने हाथों उठा

इसके बाद महारानी ज़िंगो कुछ रोज़ तक सफर करती रहीं। ताके-औस्ती उनके साथ है। फौज की शक्ति को बढ़ाने के लिये नये सैनिकों की नियुक्ति की गई है। सब इनके पीछे-पीछे चल रहे हैं।

सब के आगे उज्ज्वल ज़िरह-बख्तर पहिने बल्लम-बरदार हैं, जो सामने झुका हुआ और पीछे कटा हुआ शिरस्त्राण पहिने हुये हैं। शिरस्त्राण के सामने का भाग काँसे के चमकीले नवचन्द्र से शोभायमान है। शेष में भाला, और अन्त में छोटा झंडा फहरा रहा है। यह दृश्य बहुत ही सुन्दर दिखलाई पड़ता है। इनके बाद धनुर्धारी शूर हैं। उनके सिर में सफ़ेद वस्त्र बँधे हुए हैं, जिनके छोर फहरा रहे हैं। उनके समूचे तर्कश उनकी पीठ पर लटक रहे हैं। वे लोग अपने सीधे हाथों में बड़े-बड़े धनुष धारण किये हुए हैं। इनके बाद धनुषधारियों का दूसरा दल चल रहा है। उनके धनुष नये आकार के हैं। उनसे बड़े वज़नी पत्थर दूर तक फेंके जा सकते हैं।

अन्यान्य सैनिक अपने-अपने क्रम के अनुसार प्राचीन जापान की विचित्र पोशाक पहिने हुए पीछे-पीछे चल रहे थे। वे लोग काले रंग के विलक्षण नक़ाब पहिने हुए थे। उनके अन्दर से उनकी मूँछें और लाल भृकुटियाँ चमक रही थीं। उन लोगों ने कनकूट के तांबे के शिरस्त्राण धारण कर रखे थे, जिनके बगल में असली बारहसिंगों के सींग की शाखायें लगी हुई थीं। कुछ सैनिकों के सिर पर लोहे के शिरस्त्राण तथा शरीर पर ज़िरह-बख्तर शोभायमान हो रहे हैं। उनमें बनी हुई जालियों के द्वारा केवल उनकी आँखें भर दिखलाई पड़ रही हैं। सब प्रकार के झंडे और निशान, खूब कढ़े हुए इस जनसमुदाय के ऊपर फहरा रहे हैं।

महारानी एक सुन्दर घोड़े पर सवार हैं। घोड़े की अयाल इस प्रकार गुँथी हुई है कि वह कल्पना के [illegible] [illegible] [illegible] पड़ती है। उनके पैर कढ़े हुए पत्थर के रकाब पर रखे हुए हैं। वह सेना के आगे

जिंगो ने महात्मा को धन्यवाद दिया और उसने ताके-ओत्सी की सहायता से उस मूल्यवान तावीज़ को अपने हृदय पर धारण कर लिया।

वे कासिफीने ओरा बन्दरगाह पर पहुँचे। जहाज़ों का बेड़ा सुन्दर क़तार में खड़ा किया गया। बड़े-बड़े जहाज़ विशाल-काय दानवों जैसे प्रतीत होते थे और उनके मस्तूल विशाल पंखों जैसे। मल्लाहों और सैनिकों ने करतल-ध्वनि द्वारा एक दूसरे का अभिवादन किया। महारानी जी घोड़े पर से उतर पड़ीं और किनारे की ओर बढ़ीं। अपने सोने के शिरस्त्राण को निकाल कर उसने अपने लम्बे काले केश खोल डाले और उसने उन्हें जल से धो डाला। इसके बाद वह उन्हें हिलाती रही। जब वे सूख गये, तब उसने सादी वेणी बाँध कर उन्हें पीठ के पीछे लटका लिया। पुरुष भी उस प्रकार के केश धारण किया करते हैं। इसके बाद उसने अपना भाला उठाया और जाकर सबसे अच्छे जहाज़ पर बैठ गई।

जन-समुदाय के बीच में ज़िगो उच्च आसन पर एक प्रतिमा के समान प्रतीत होने लगी। उसका ज़िरह-बख़्तर काले सीगों का बना हुआ था और जोड़ों पर बैंगनी रंग के रेशम से बँधा हुआ था। सफ़ेद बूटेदार पट्टू के पाजामे पर वह आकाश पर मेघ के समान प्रतीत होता था। वह पैरों के टखनों तक लम्बा था। उसके कंधों की पट्टियाँ काले मखमल की थीं और चौड़ी आस्तीनें, उसके पैरों तक गिरती हुईं उसके आसपास सुनहरे कमल के किनारे के समान प्रतीत हो रही थीं। इन पर बेलबूटे और भाँति-भाँति के फूल कढ़े हुये थे। उस पर साटन की गोट लगी हुई सफ़ेद साड़ी थी।

उसके ज़िरह-बख़्तर के ऊपर सोने का बना हुआ एक सुन्दर [illegible] मढ़ा हुआ था। उसका शिरस्त्राण [illegible] के [illegible] जैसा लम्बा था। वह एक रेशमी पट्टी के द्वारा उसकी ठुड्डी के नीचे से कसा हुआ था। दो तलवारें और एक [illegible] [illegible] में [illegible]

थे, जिनमें प्रतिविम्ब का दिखलाई पड़ना असम्भव था। इस आज्ञा के फलस्वरूप सर्वसाधारण का जो कष्ट था, उसका वर्णन करना असम्भव है। विशेष कर हावभाव द्वारा दूसरों को रिझाने वालों को, जो अन्यान्य देशों के समान यहाँ भी वर्तमान थे—असाधारण कष्ट था।

(२)

परन्तु जैसिन्थ नामक एक युवती, जो शहर के बाहरी भाग में रहती थी, अन्यान्य स्त्रियों के समान अधिक दुखी न थी, कारण कि उसका एक प्रेमी उसके लिये थोड़ा-बहुत दर्पण का काम करता था। वह सदा उसकी सुन्दरता का वर्णन किया करता था। जैसिन्थ शरमा जाती थी। इसका कारण यह न था कि जब उसका प्रेमी उससे विवाह करने के लिये कहता था, तब उसे भय प्रतीत होता हो; अथवा जिस समय वह मुस्कराती थी उस समय "नहीं" कहने के विचार से उसमें आनन्द के भाव न दिखलाई पड़ते हों, बल्कि आपत्ति तो इस बात की थी कि रानी शादियों के समाचार सुनने के लिये आतो थी, क्योंकि रानी को दूसरों के सुख को नष्ट करने में विशेष आनन्द प्राप्त होता था। इसके अलावा, वह जैसिन्थ को सब से अधिक घृणा की दृष्टि से देखती थी, क्योंकि जैसिन्थ सारे राज्य में सब से अधिक सुन्दरी समझी जाती थी।

(३)

शादी के कुछ दिन पहिले, जिस समय जैसिन्थ दर्पण में झुक रही थी, एक बुड्ढी औरत उसके पास भीख माँगती हुई आई। अचानक बुड्ढी औरत भय से व्याकुल होकर चिल्ला उठा। वह पीछे हट कर इस प्रकार जमीन पर गिर पड़ा, मानो उसका पैर किसी विषधर के ऊपर पड़ गया हो।

"क्या ! मैं तुम्हारी पत्नी बनूँ ! यह कभी नहीं हो सकता । मैं तुमको इतना अधिक प्यार करती हूँ कि तुम्हें अपने समान कुरूपा स्त्री कभी नहीं दे सकती ।"

अब क्या किया जावे ? इस बात के सिद्ध करने के लिये कि वह बूढ़ी औरत असत्यवादिनी थी और जैसिन्थ को वास्तविकता का विश्वास दिलाने के लिये केवल यही उपाय था कि आइने में उसको उसका स्वरूप दिखलाया जावे; परन्तु समस्त साम्राज्य में एक भी आइना न था और रानी के भय के कारण कोई भी कारीगर उसे बनाने की हिम्मत भी नहीं कर सकता था ।

"मुझे दरबार जाना पड़ेगा," जैसिन्थ के प्रेमी ने अन्त में कहा—"रानी कितनी भी असभ्य क्यों न हो, मेरे आँसुओं को और जैसिन्थ की सुन्दरता को देखकर वह अवश्य ही द्रवित हो जावेगी ।"

(५)

"क्यों, क्या मामला है," दुष्ट रानी ने पूछा—"ये लोग कौन हैं, और मुझसे क्या चाहते हैं ?"

"रानी साहिबा, आपके सामने संसार में सब से दुखी प्रेमी उपस्थित हैं ।"

"वास्तव में मुझे तंग करने के लिये यह बहुत अच्छा कारण है ।"

"रानी साहिबा हम लोगों पर दया करो ।"

"परन्तु मुझे तुम प्रेमियों के झगड़ों से क्या मतलब ?"

"यदि आप दया कर हमको एक आइना रखने की आज्ञा प्रदान करें..."

"तुमने आइना का प्रश्न उपस्थित करने का साहस ही क्यों किया," रानी ने उठ कर, गुस्से से काँपते हुये और दाँत पीसते हुये कहा ।

लोहे का टोप

लेखक—फर्डिनेंड बीसियर

"परन्तु मामा, मैं अपनी बहिन को प्यार करता हूँ!"

"बाहर जाओ!"

"उसको मुझे दे दो।"

"मुझे तंग न करो!"

"ऐसा न करने से मेरे प्राण निकल जायँगे!"

"बेवकूफ़! किसी दूसरी लड़की को प्राप्त करके अपना हृदय शान्त कर लेना।"

"कृपया—"

उपर्युक्त बातचीत करते समय मेरे मामा की पीठ मेरी तरफ़ थी। वे मेरी तरफ़ बड़ी तेज़ी से मुड़े। उनका चेहरा तमतमाया हुआ, रक्त-वर्ण हो रहा था। उन्होंने अपनी मुट्ठी बाँध कर उसे ज़ोर से मेज़ पर पटकते हुये कहा—"कभी नहीं! कभी नहीं! मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ, उसे तुम सुन रहे हो या नहीं?"

मैं उनकी ओर विनीत-भाव से बँधे हाथों ही देखता रहा। वे कहते गये—"तुम बड़े सुन्दर पति प्रतीत होते हो! कौड़ी पास नहीं, और गृहस्थी का स्वप्न देख रहे हो! यदि मैं तुम्हें अपनी पुत्री दे दूँ, तो एक अनोखी अस्त-व्यस्तता उत्पन्न हो जायगी! इस बात पर ज़िद न करो! इससे कुछ लाभ न होगा! तुम जानते हो कि जब मैंने 'नहीं' कह दिया, तब संसार की ऐसी कोई शक्ति नहीं, जो मुझसे 'हाँ' कहला सके।"

मैंने इस सम्बन्ध में अधिक आवेदन करना उचित न समझा।

मोटे, बड़े गुस्सैल और ज़िद्दी; परन्तु हृदय के अन्तस्तल से दयालु मेरे मामा कारनुडेट थे। मेरे जीवित सम्बन्धियों में से केवल वे ही बचे थे। मैंने ज्योंही स्कूल छोड़ा, त्योंही उन्होंने मुझे "माल्टीज़ क्रास" दूकान के प्रधान लेखक और दूकानदार का पद देकर गौरवान्वित कर दिया।

मेरे मामा न केवल प्राचीन वस्तुओं के विक्रेता और म्युनिसिपल सदस्य, बल्कि इससे भी कहीं अधिक थे। इन सब बातों के अलावा वे मेरी बहिन रोज़ के पिता थे जिसको मैं स्वभावतः प्रेम करता था।

मैं फिर उसी स्थान पर लौटता हूं, जहां से मैंने विषयान्तर किया था।

मेरे हृदय से निकली हुई दीर्घ निःश्वासों पर कुछ भी ध्यान दिये बिना ही मेरे मामा दूरबीन हाथ में लेकर उन तमगों के समूह का निरीक्षण करने लगे, जो उन्होंने उसी दिन प्रातःकाल खरीदे थे। मैं दो मूठ वाली तलवार के जंग को साफ करने में लग गया। सहसा उन्होंने अपना हाथ उठाया। उस समय घड़ी पांच बजा रही थी।

"सभा!" उन्होंने चिल्ला कर कहा।

जिस समय मेरे मामा ने इस महत्वपूर्ण शब्द का उच्चारण किया, मैं बहुत प्रसन्न हुआ, क्योंकि मामा सब काम छोड़ कर सभा में जाने के बड़े शौकीन थे। परन्तु इस समय एक क्षण विचार करने के बाद ही, उन्होंने अपने माथे को थपथपाया और नितान्त बेचैनी के साथ कहने लगे—"नहीं, सभा कल होगी। मैं इस बात को बिल्कुल ही भूल गया था कि मुझे आज स्टेशन जाकर उस माल को छुड़ाना है, जिसकी सूचना मुझे आज प्रातःकाल मिली थी।"

कुरसी से उठ कर और दूरबीन को रखकर उन्होंने जोर से कहा—"रोज़, मेरी छड़ी और टोप ले आओ।"

इसके बाद मेरी तरफ मुड़ कर उन्होंने धीमे स्वर में [illegible]

जल्दी कहा—"तुमसे यह कहना है कि हमारी बातचीत को भूल न जाना। यदि तुम समझते हो कि तुम मुझे 'हाँ' कहलाने में समर्थ और सफल हो सकोगे, तो कोशिश करो; परन्तु मेरे ख्याल से तुम्हें सफलता न मिल सकेगी। तब तक इस सम्बन्ध में रोज़ से एक शब्द भी न कहना और यदि तुम मेरे मना करने पर भी, रोज़ से इस विषय की चर्चा करोगे, तो मैं सौगंध खाकर कहता हूँ कि मैं तुम्हें लात मार कर फौरन् मकान से बाहर निकाल दूँगा!"

इसी समय रोज़ मेरे मामा की छड़ी और टोप लेकर आ गई जिन्हें उसने उन्हें दे दिया। उन्होंने उसके मस्तक का चुम्बन लिया और जाते समय मेरी ओर तेज़ और तिरछी निगाह से देखते हुये फुरती से दूकान के बाहर चले गये।

मैं दो मूठ वाली तलवार को साफ करने में लगा रहा। रोज़ धीरे से मेरे पास आई।

"आज पिताजी को क्या हो गया है?" उसने पूछा—"वे तुमसे नाराज़ जान पड़ते हैं।"

मैंने उसकी तरफ़ देखा। उसकी आँखें इतनी काली थीं, उसकी चितवन इतनी दयालु, मुँह इतना गुलाबी, और दाँत इतने सफेद कि मैंने उसको सब बतला दिया। मैंने उसे अपने प्रेम की बात, उसके पिता से की हुई प्रार्थना और उनका कोरा जवाब सब ब्योरेवार कह सुनाया। आखिरकार यह सब दोष उन्हीं का तो था। वे वहाँ न थे। मैंने उनके क्रोध का मुकाबिला करने का निश्चय कर लिया। इसके अलावा खास-खास मामलों में हिम्मत बतलाने की भी तो ज़रूरत रहती है। सभी जगह भीरुता से काम नहीं चलता।

मेरी बहिन ने कुछ नहीं कहा। उसने केवल अपनी आँखें नीची कर लीं। उसके गाल सड़े सहीने की बिलायती मकोय के समान लाल हो रहे थे।

मैंने अपने को सम्हाला।

"क्या तुम मुझसे नाराज हो ?" मैंने काँपते हुये पूछा—"रोज ! क्या तुम मुझसे नाराज़ हो ?"

उसने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया। इस पर, मेरे हृदय में साहस भर आया और मेरा मस्तक खौलने लगा। मैं ज़ोर से चिल्ला उठा—"रोज़, मैं क़सम खाकर कहता हूँ। मैं तुम्हारा पति बनूँगा।" और ज्योंही उसने अपना माथा हिलाया और मेरी तरफ़ उदास भाव से देखा, त्योंही मैंने कहा—"ओफ़ ! मैं इस बात को जानता हूँ कि मेरे मामा बड़े ज़िद्दी हैं, परन्तु मैं उनसे भी अधिक ज़िद्दी बन जाऊँगा। उनसे जबरन 'हाँ' कहलाना पड़ेगा। मैं उन्हें ऐसा करने के लिये मजबूर करूँगा।"

"परन्तु किस प्रकार ?" रोज़ ने पूछा।

"ओफ़ ! किस प्रकार ? यही बतलाना तो सचमुच मुश्किल की बात है; परन्तु इसकी चिन्ता नहीं। मैं इस मसले को हल करने का मार्ग खोज निकालूंगा।"

इसी समय सड़क पर पैरों की भारी आवाज़ सुनाई पड़ी। हम लोग स्वाभाविक तरीक़े से एक दूसरे से दूर-दूर हो गये। मैं अपनी दो मूठ वाली तलवार के पास चला आया। रोज़ मन बहलाने के अभिप्राय से अपने पुराने लाल मखमल के डब्बे से प्रतिमा को निकाल कर, उसे अपनी पोशाक के छोर से साफ़ करने लगी।

मेरे मामा अन्दर आये। हम लोगों को एक साथ देख कर वे बहुत घबराये। उन्होंने हम दोनों की ओर बड़ी कड़ी निगाह से देखा। हम दोनों बिना सिर उठाये सफ़ाई के काम में लगे रहे।

"इधर आओ और इसे ले जाओ," मेरे मामा ने मुझे अपनी बग़ल से एक भारी बण्डल देते हुये कहा—"एक बड़ी अच्छी चीज़ मैंने ख़रीदा है। तुम इसे देख कर प्रसन्न हो जाओगे।"

दूसरे दिन, ओफ्! दूसरे दिन भी मैं अपना काम समाप्त न कर ाया। मेरे मामा द्वारा लाये गये लोहे के टोप को दाँत पीस-पीस कर ने शुरू से आखीर तक खूब रगड़ा; रगड़ते समय मैंने इतनी ताक़त ागाई कि लोहा टूटते-टूटते बचा; परन्तु वह साफ़ न हुआ। साफ़ ारते समय मेरे दिमाग में कोई विचार तक उत्पन्न न हुये। निदान, ोहे का टोप सूर्य के समान चमक उठा। मेरे मामा हुक्का पीते हुये ुझे देख रहे थे। परन्तु मुझे ऐसा कोई उपाय ही न सूझता था, जसके द्वारा मैं उन्हें मजबूर करके उनकी कन्या को प्राप्त कर सकता।

तीन बजे रोज़ बाहर चली गई। बाहर से वह शाम के भोजन के मय लौटने वाली थी। जाते समय बरामदे पर से वह मुझे केवल ाथ का इशारा कर सकी। मेरे मामा ने हम लोगों को एक क्षण के लिये भी नहीं छोड़ा। इस कारण हम लोग न तो मिल ही सके और बातचीत ही कर सके। इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि वे हमारी कल ाम की बातचीत को भूले न थे।

मैं अपने लोहे के टोप को साफ़ करने में लगा रहा।

"तुमने इसे काफी चमकदार बना दिया—अब इसे रख दो," मेरे ामा ने कहा।

मैंने उसे रख दिया; परन्तु अचानक मेरे मामा को एक [illegible] न सवार हुई। उन्होंने इस विशाल लोहे के टोप को उठा लिया और ा-ंपता कर वे उसे देखने लगे।

"इसमें ज़रा भी शक न [illegible] कि बड़ा सुन्दर शिरस्त्राण है; [illegible] से धारण करने वाले के कंधों पर कितना वजन पड़ता होगा," उन्होंने [illegible] से कहा। मैं कह नहीं सकता कि शैतान की प्रेरणा से, उन्होंने [illegible] ने अपने सिर पर पहिन लिया और [illegible] के शिरस्त्राण [illegible] : आश्चर्य [illegible] बना लिया।

हुआ । सच तो है, प्रेमी से अधिक कोई पागल नहीं कहा जा सकता । इसके अलावा मेरे पास कोई दूसरा साधन भी तो न था ।

"नहीं !" मैंने जवाब दिया ।

मेरे मामा डर कर दो क़दम पीछे हट गये—और फिर वह विशाल लोहे का टोप उनके कन्धों पर चक्कर लगाने लगा ।

"नहीं ।" मैंने दृढ़ता के साथ दोहराया, जब तक आप मेरी बहिन रोज़ को मुझे न दे देंगे, तब तक मैं आपकी सहायता कदापि नहीं कर सकता ।

उस आश्चर्य-जनक लम्बे लोहे के टोप के अन्दर से क्रोधपूर्ण चीत्कार तो नहीं, बल्कि एक भयंकर गर्जना सुनाई पड़ी—"मेरा सर्वनाश हो गया ।"

"मैं आप से जो कुछ भी कह रहा हूँ, यदि आप उसे स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं हैं" मैंने कहा, "तो मैं न केवल आपके सिर से लोहे के टोप को न हटाऊँगा, बल्कि मैं आपके सब पड़ोसियों को बुला लाऊँगा और इसके बाद म्युनिसिपल कौन्सिल में भी जाकर इसकी सूचना दे दूँगा !"

"तब तो तुम फाँसी के तख्ते पर लटका दिये जाओगे !" मेरे मामा ने चिल्ला कर कहा ।

"मुझे रोज़ चाहिये !" मैंने फिर दोहराया—"आपने कहा था कि आप से केवल जबरन 'हाँ' कहलाया जा सकता है—जल्दी 'हाँ' कहो, नहीं तो मैं जाकर पड़ोसियों को बुलाता हूँ !"

घड़ी अभी भी बज रही थी । मेरे मामा ने [illegible] हटाया, मानो वे मुझे मार देने जा रहे हों ।

"फौरन निर्णय करो !" मैंने चिल्ला कर कहा—"कोई आ रहा है !"

री में पारंगत थीं। उनमें समुद्र में उत्पन्न होने वाली झाड़ियो जैसी
ज़ सुगन्ध थी। उनका स्वर इच्छा के अनुरूप कोमल और कुछ-कुछ
री था।

यूलीसस बन्धन से मुक्त होने के लिये तड़फड़ा रहा था; परन्तु उसके
ल्लाहों को पहिले ही इस सम्बन्ध की चेतावनी दी जा चुकी थी। उन
गों ने उसके हाथ और पैरों को और भी मज़बूती के साथ जकड़ कर
ध दिया।

इतना होने पर भी यूफोरियन नामक एक नाविक ने यह विचार
या कि जिन गीतों में यूलीसस के समान धूर्त्त को भी प्रभावित करने
शक्ति है, जो अद्वितीय ज्ञानप्रद समझे जाते हैं, मनुष्य-जीवन पाकर
हें सुनना अवश्य चाहिये।

उसने अपने कान का मोम निकाल कर उन गीतों को सुना। गीत
ने चित्ताकर्षक और मधुर थे कि वह अधिकाधिक उत्सुकता के साथ
का हुआ, उन्हें ध्यान-पूर्वक सुनता रहा। ज़रा देर के बाद वह भयं-
ज्वार-भाटे की तरंगो में कूद पड़ा।

मल्लाह अपने एक साथी को इस प्रकार भयंकर काल के गाल में
जाने देना चाहते थे; परन्तु यूलीसस ने कुपित होकर उन्हें आज्ञा दी
जहाज़ को इस द्वीप के आगे जल्द बढ़ाओ।

× × ×

आकांक्षा की आकुलता से यूफोरियन उस ओर बढ़ा, जहां से गाने
आवाज़ आ रही थी। सूर्य के प्रकाश से जल चमक रहा था।
तल हरी गुफा की ओर यह जल काला प्रतीत हो रहा था। उसके
श द्वार पर सात साइरेन [illegible] हुये थे। सिर के नीचे कमर
र तक उनका आकार सुन्दरी कन्याओं जैसा था। उनकी आंखें
ली थीं और केश हरित स्वर्ण से। उनके [illegible] और [illegible]
[illegible] बूंदो में चमक रहे थे और उनकी आकृति [illegible]

अधिकार-पूर्ण मुद्रा द्वारा यह कहते हुये उसने अपनी बहिनों को वहाँ से हट जाने की आज्ञा दी—"यह विदेशी मेरा है।"

अन्यान्य साइरेन-निवासिनी वहाँ से चली गईं। ऐसा भान होता था कि जिसने यह आदेश दिया था, उसके हाथ में बहुत अधिकार थे। सम्भवतः उन लोगों में इन मनुष्य रूपी शिकारों को विभाजित करने के सम्बन्ध में, कुछ पहिले से ही निश्चित हो चुका था, जिसका हमको ज़रा भी पता नहीं है।

इस समय वह चतुर ग्रीक निवासी के पास अकेली थी। उसने उसका नाम पूछा। उसको मालूम कर लेने के बाद उसने कहा—"यूफोरियन मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। यद्यपि मैं अमर हूँ, फिर भी यह पहला ही अवसर है, जब कि मैंने किसी पर अपना प्रेम प्रकट किया है। प्रेम का आकर्षण भी मैं आज ही अनुभव कर सकी हूँ। और तुम?"

ग्रीक निवासी ने कहा—"तुम्हारा क्या नाम है?"

"ल्यूकोसिया।"

× × ×

अन्यान्य साइरेन-निवासिनी, अपने किये गये निर्णय के अनुसार यूफोरियन और ल्यूकोसिया को, इच्छानुसार जीवन व्यतीत करने के लिये छोड़ कर, वहां से चली गईं।

इस गुफ़ा की ज़मीन की ओर का खुला हुआ भाग एक चरागाह था, जिसका किसी को भी पता न था। वहाँ ताज़े पानी का एक झरना था। इस झरने के जल से यूफोरियन ने अपनी प्यास बुझाई और चट्टानों की मछलियों को खाकर जीवन-यापन करने लगा।

ल्यूकोसिया उसे कभी नहीं छोड़ती थी। वे लोग एक साथ जल-धारा की उत्तुंग तरल तरंगों में तैर कर प्रमुदित हुआ करते। लहरों का आलिंगन कर वे लोग उनका स्वागत किया करते। कभी-कभी

जैसी थी। उनके शरीर के नीचे का भाग लिहाफ़ पहिने तरा
समान प्रतीत होता था। तैराक़ ने उनके पास पहुँच कर, उनकी
के भड़कीले रंगों को देखा, जो जल की सतह पर इधर-उधर
रही थीं।

ज्योंही वह उनके पास पहुँचा त्योंही साइरेन वासियों का गीत
हो गया। भयंकर चीत्कार करती हुई वे, अभागे मनुष्य के ऊप
पड़ीं। वे उसे पकड़ कर गहरी गुफा में ले गईं और उसे हड्डि
ढकी हुई एक चट्टान के कोने पर नंगा पटक दिया। इन म
जन्तुओं के यहाँ यह रीति थी कि चट्टान से टकराई हुई नौ
नष्ट हो जाने के कारण, जो मनुष्य उनके चंगुल में आ जाते थे,
लाकर उनके शरीरों को वे चीर डालते और पुष्प सदृश अधरों
उनके रक्त को पी लेते थे।

यूफ़ोरियन को एक साइरेन-निवासिनी उसकी अन्यान्य
बहिनों की अपेक्षा अधिक सुन्दरी प्रतीत हुई। वह उन सब के
क्रूर भी न जान पड़ती थी। वह उसकी तरफ़ मुड़ कर कहने लग
"मैं सुख-पूर्वक मरूँगा, क्योंकि मैंने समुद्र की कन्याओं का गीत
लिया है, परन्तु मेरी मृत्यु अब केवल तुम्हारे द्वारा होगी, तभी मैं
को परम सुखी समझूँगा।"

साइरेन निवासिनी ने उसकी ओर आश्चर्य-पूर्ण दृष्टि से घूर
देखा। उसने इसके पहिले कभी भी ऐसे मनुष्य का मुँह न देखा
जिस पर किसी आकांक्षा और ज्ञान के भाव अंकित हों। अभी
उनके शिकार के मुख पर उस प्रचंड आतंक के अतिरिक्त दूसरे
कभी दिखाई नहीं पड़े थे। अधिकांश लोग तो सब प्रयत्न करके
जाने के बाद इन लोगों के चंगुल में उस समय फँसते थे, जब वे
भी न बोल सकते थे।

अधिकार-पूर्ण मुद्रा द्वारा यह कहते हुये उसने अपनी बहिनों को वहाँ से हट जाने की आज्ञा दी—"यह विदेशी मेरा है।"

अन्यान्य साइरेन-निवासिनी वहाँ से चली गईं। ऐसा भान होता था कि जिसने यह आदेश दिया था, उसके हाथ में बहुत अधिकार थे। सम्भवतः उन लोगो में इन मनुष्य रूपी शिकारो को विभाजित करने के सम्बन्ध में, कुछ पहिले से ही निश्चित हो चुका था, जिसका हमको ज़रा भी पता नहीं है।

इस समय वह चतुर ग्रीक निवासी के पास अकेली थी। उसने उसका नाम पूछा। उसको मालूम कर लेने के बाद उसने कहा—"यूफ़ोरियन मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। यद्यपि मैं अमर हूँ, फिर भी यह पहला ही अवसर है, जब कि मैंने किसी पर अपना प्रेम प्रकट किया है। प्रेम का आकर्षण भी मैं आज ही अनुभव कर सकी हूँ। और तुम?"

ग्रीक निवासी ने कहा—"तुम्हारा क्या नाम है?"

"ल्यूकोसिया।"

× × ×

अन्यान्य साइरेन-निवासिनी, अपने किये गये निर्णय के अनुसार यूफ़ोरियन और ल्यूकोसिया को, इच्छानुसार जीवन व्यतीत करने के लिये छोड़ कर, वहाँ से चली गईं।

इस गुफ़ा की ज़मीन की ओर का खुला हुआ भाग एक चमत्कार था, जिसका किसी को भी पता न था। वहाँ ताज़े पानी का एक झरना था। इस झरने के जल से यूफ़ोरियन ने अपनी प्यास बुझाई और चट्टानों की मछलियों को खाकर जीवन-यापन करने लगा।

ल्यूकोसिया उसे कभी नहीं छोड़ती थी। वे लोग एक साथ जल-धारा की उत्तुंग तरल तरंगों में तैर कर प्रमुदित हुआ करते। लहरों का आलिंगन कर वे लोग उनका स्वागत किया करते। कल-कल

जैसी थी। उनके शरीर के नीचे का भाग लिहाफ़ पहिने तरान्‌ के समान प्रतीत होता था। तैराक़ ने उनके पास पहुँच कर, उनकी पूँछ के भड़कीले रंगों को देखा, जो जल की सतह पर इधर-उधर हिल रही थीं।

ज्योंही वह उनके पास पहुँचा त्योंही साइरेन वासियों का गीत बन्द हो गया। भयंकर चीत्कार करती हुई वे, अभागे मनुष्य के ऊपर टूट पड़ीं। वे उसे पकड़ कर गहरी गुफा में ले गईं और उसे हड्डियों से ढकी हुई एक चट्टान के कोने पर नंगा पटक दिया। इन मनोहर जन्तुओं के यहाँ यह रीति थी कि चट्टान से टकराई हुई नौका के नष्ट हो जाने के कारण, जो मनुष्य उनके चंगुल में आ जाते थे, उन्हें लाकर उनके शरीरों को वे चीर डालते और पुष्प सदृश अधरों द्वारा उनके रक्त को पी लेते थे।

यूफोरियन को एक साइरेन-निवासिनी उसकी अन्यान्य सभी बहिनों की अपेक्षा अधिक सुन्दरी प्रतीत हुई। वह उन सब के समान क्रूर भी न जान पड़ती थी। वह उसकी तरफ मुड़ कर कहने लगा—"मैं सुख-पूर्वक मरूँगा, क्योंकि मैंने समुद्र की कन्याओं का गीत सुन लिया है; परन्तु मेरी मृत्यु जब केवल तुम्हारे द्वारा होगी, तभी मैं स्वयं को परम सुखी समझूँगा।"

साइरेन-निवासिनी ने उसकी ओर आश्चर्य-पूर्ण दृष्टि से घूर कर देखा। उसने इसके पहिले कभी भी ऐसे मनुष्य का मुँह न देखा था, जिस पर ऐसी आकांक्षा और ज्ञान के भाव अंकित हों। अभी तक उसके शिकार के मुख पर उसे प्रचंड आतंक के अतिरिक्त दूसरे भाव कभी दिखाई नहीं पड़े थे। अधिकांश लोग तो सब प्रयत्न करके थक जाने के बाद इन लोगों के चंगुल में उस समय फँसते थे, जब वे उन्हें भी न बोल सकते थे।

ऊँची चट्टान से साइरेन-निवासिनी अपनी कड़ी पूँछ को बाण के समान नीचे झुकाये हुये जल पर कूद पड़ती थी। वह उसे अपने हाथ पर झेल लेता था और इसके बाद वे दोनों लहरों में बहुत नीचे तक डुबकी लगाते थे। सूर्य के प्रकाश में क्रीड़ा करके वे आनन्द मनाया करते। वे समुद्र-तट के फेन के अन्दर किलोलें किया करते अथवा भँवरों से खेल खेलते हुये सन्तोष का अनुभव किया करते। वे लोग बहुधा डालफिन नामक पाँच फीट लम्बी समुद्री मछली का शिकार किया करते और उनको पकड़ कर उनके साथ अनेक प्रकार के खेल-खेल कर मन बहलाया करते।

रात्रि के समय अन्यान्य साइरेन-निवासिनी तृणाच्छादित भूमि पर एक साथ ही अपनी वज़नी पूँछ को दबा कर लेट जातीं; परन्तु यूकोरियन और ल्यूकोसिया चरागाह के एक गुप्त कोने में शयन करते। नाविक लोग जल-देवी की शीतल भुजाओं के आश्रय पर ठंड में बाहर सोते थे।

वे बहुत कम बोलते थे। ल्यूकोसिया जीवन के उन सब व्यावहारिक शब्दों से भली-भाँति परिचित थी, जिन्हें भूमध्य सागर की चट्टान पर निवास करने वाले, मध्यम श्रेणी के नाविक देवता को जान लेना आवश्यक था। वह आकाश, समुद्र, सूर्य, चन्द्रमा, तारा, चट्टान, सब प्रकार की मछलियाँ और शरीर के भिन्न-भिन्न भागों का नाम ले सकती थी। वह यह भी कह सकती थी—"मैं देखती हूँ; मैं सुनती हूँ; मैं अनुभव करती हूँ; मैं प्रेम करती हूँ; मैं चाहती हूँ; मैं आशा करती हूँ।" उसके ज्ञान की केवल इतनी ही सीमा थी।

यूकोरियन ने उससे एक दिन कहा—"जिस समय तेज़ी से चलते हुये जहाज़ से मैंने तुमको अपनी बहिनों के साथ गीत गाते हुये सुना था, उस समय तुम यह घोषणा कर रही थीं कि तुम ऐसी बहुत सी बातें

जानती हो, जिनको मनुष्य नहीं जानते। ल्यूकोसिया, क्या तुम मुझे वे सब बातें न बतलाओगी ?"

परन्तु उसने उसको समझाया कि साइरेन-निवासिनियों ने इस सम्बन्ध में झूठ कहा था। इसका आशय केवल सुनने वालों के कौतूहल को उभाड़ने के अतिरिक्त और कुछ न था।

वास्तविकता तो यह थी कि जिन गीतों को वे गाती थीं और जिनको वह रोज़ सन्ध्या समय सुना करता था, उनसे किसी विशेष ज्ञान का बोध न होता था। उनमें उषाकालीन आश्चर्य-जनक भावों का प्रदर्शन, सूर्यास्त का वैभव, समुद्र की विशालता और सुन्दरता का दिग्दर्शन, किसी चपल मनुष्य के आनन्द का नितान्त साधारण वर्णन होता, जो परिश्रम करने पर कभी थकना जानता ही नहीं था और कभी उन महत्वाकांक्षाओं का दिग्दर्शन किया जाता था, जिन्हें वे ज्ञानहीन गानेवाली स्वयं न समझ सकती थीं। परन्तु यूरोरियन इन भावनाओं को भलीभांति समझ सकता था, क्योंकि मानव प्राणी उनका बहुधा अनुभव किया करता है।

× × ×

ल्यूकोसिया अपने साथी के दुःख से पूर्णतः परिचित थी। वह उसे सदा अपने मधुर चुम्बनों द्वारा प्रसन्न रखने की चेष्टा किया करता। समुद्र अथवा गुफा की झील में वह उसकी अपेक्षा अधिक मज़बूत और लचीली थी और वहां वह उसकी सब प्रकार की आपत्तियों से रक्षा किया करती; परन्तु जब अथवा [illegible] चरागाह में वह केवल अपने हाथों द्वारा चल सकती थी और इसका एक निरर्थक [illegible] करती। थल पर वह अपने साथी के [illegible] प्रशंसा ही करती, परन्तु [illegible]। इसके बाद यूरोरियन को यह भी अनुभव होने लगा कि [illegible]

इसी समय साइरेन-निवासिनियों के गीतों से आकर्षित होकर एक जहाज़, पास की एक चट्टान से टकरा गया। इन सब सुन्दरी बालाओं ने यूफोरियन की भयभीत आँखों के सामने ही, टूटे हुये जहाज़ के आदमियों के शरीरों पर अपने नुकीले दाँत गड़ा कर उनके लाल रक्त को सफ़ेद ब्लैडर (वायु से फूली हुई थैली) के समान चूसना शुरू कर दिया। ल्यूकोसिया ने अपनी बहिनो के साथ गाने और इस वीभत्स भोजन में भाग लेने से इन्कार कर दिया। यूफोरियन इस बात के लिये उसका कृतज्ञ था; परन्तु उसको शीघ्र ही इस बात का पता चल गया कि उसने इनमें अपनी विरक्ति इसलिये बतलाई थी ताकि वह अप्रसन्न न हो जाय। यद्यपि उसे प्रेम के भावों का अनुभव प्राप्त हुआ था, क्योंकि यह अधिकांश प्राणियों में समान रूप से पाया जाता है; परन्तु वह अभी भी दया से कोसों दूर थी, जो केवल मानव-समाज की सम्पत्ति मानी जाती है।

× × ×

साइरेन-निवासिनी जल और आकाश में समान सुगमता से साँस ले सकती हैं। अपने मित्र के शिक्षण के फलस्वरूप यूफोरियन ने पानी के अन्दर बहुत समय तक साँस रोकने का अभ्यास कर लिया था। इस बात में कोई भी गोताखोर अब उसका मुक़ाबिला न कर सकता था। वह ल्यूकोसिया के साथ, मूँगों के कुञ्ज में तथा उज्ज्वल वृक्षों के बीच तैर कर बहुत प्रसन्न होता था। वह बहुधा जल के अन्दर चमकते हुये पदार्थों को देख कर आश्चर्य में डूब जाता था। उसे भ्रम हो जाता था और वह समझ ही न पाता था कि वे चमत्कार चीज़ें, पत्थर, फूल अथवा पशुओं में से वास्तव में हैं क्या।

इसी प्रकार के अपने एक दिन के भ्रमण में उसने समुद्र के तल पर एक क्षत-विक्षत जहाज़ देखा। उसके तख्तों और [illegible] में, घड़े, हंडे, भोजन बनाने के बर्तन, हार, [illegible], [illegible],

इसी समय साइरेन-निवासिनियों के गीतों से आकर्षित होकर एक जहाज़, पास की एक चट्टान से टकरा गया। इन सब सुन्दरी बालाओं ने यूफोरियन की भयभीत आँखों के सामने ही, टूटे हुये जहाज़ के आदमियों के शरीरों पर अपने नुकीले दाँत गड़ा कर उनके लाल रक्त को सफ़ेद ब्लैडर (वायु से फूली हुई थैली) के समान चूसना शुरू कर दिया। ल्यूकोसिया ने अपनी बहिनों के साथ गाने और इस वीभत्स भोजन में भाग लेने से इन्कार कर दिया। यूफोरियन इस बात के लिये उसका कृतज्ञ था; परन्तु उसको शीघ्र ही इस बात का पता चल गया कि उसने इनमें अपनी विरक्ति इसलिये बतलाई थी ताकि वह अप्रसन्न न हो जाय। यद्यपि उसे प्रेम के भावों का अनुभव प्राप्त हुआ था, क्योंकि यह अधिकांश प्राणियों में समान रूप से पाया जाता है; परन्तु वह अभी भी दया से कोसों दूर थी, जो केवल मानव-समाज की सम्पत्ति मानी जाती है।

× × ×

साइरेन-निवासिनी जल और आकाश में समान सुगमता से साँस ले सकती हैं। अपने मित्र के शिक्षण के फलस्वरूप यूफोरियन ने पानी के अन्दर बहुत समय तक साँस रोकने का अभ्यास कर लिया था। इस बात में कोई भी गोताखोर अब उसका मुक़ाबिला न कर सकता था। वह ल्यूकोसिया के साथ, मूँगों के कुञ्ज में तथा उज्ज्वल वृक्षों के बीच तैर कर बहुत प्रसन्न होता था। वह बहुधा जल के अन्दर चमकते हुये पदार्थों को देख कर आश्चर्य में डूब जाता था। उसे भ्रम हो जाता था और वह समझ ही न पाता था कि ये चमकदार चीज़ें, पत्थर, फूल अथवा पशुओं में से वास्तव में है क्या।

इसी प्रकार के अपने एक दिन के भ्रमण में उसने समुद्र के तल पर एक छत-विक्षत जहाज़ देखा। उसके तख्तों और [illegible] में, घड़े, हंडे, भोजन बनाने के बर्तन, हार, [illegible], [illegible],

जायँगे। केवल तीन दिन की यात्रा करने पर ही हम लोग एथेन्स पहुँच सकते हैं।"

"परन्तु मैं तो ज़मीन पर बिल्कुल नहीं चल सकती !"

"मैं तुम्हारी सहायता करूँगा," यूफोरियन ने जवाब दिया—"और ज्योंही हम शहर पहुँच जावेंगे, एक सुन्दर गाड़ी पर, जिसका नमूना मैंने तुम्हें दरवाज़ो के चित्रो में बतलाया है, तुमको बैठा कर जहाँ तुम जाना चाहोगी, वहाँ तुमको पहुँचा दूँगा। हम लोग इस सन्दूक में रखे हुये सोने के बल पर बड़े आनन्द-पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकेंगे।"

परन्तु उसने, जो कुछ भी वह विचार रहा था, उसका अधिकांश भाग छिपा लिया—उसको न बतलाया।

× × ×

साइरेन-निवासिनी के लिये तीन दिन तक तैरना कोई बड़ी बात न थी। यूफोरियन भी कभी उसके बगल में तैरता और कभी उसके आश्रय में तैरता हुआ अधिक न थका। अन्त में वे समुद्र के तट पर पहुँच गये। वे एकान्त तट पर उतरे। वहाँ से कुछ दूरी पर शहर दिखलाई पड़ता था। वहाँ जाने का मार्ग लम्बा और रेतीला था।

यूफोरियन ने पत्तों का कमरबन्द बना कर पहिन लिया, जिससे वह मनुष्यों के सामने निर्लज्ज न दिखलाई पड़े।

कुछ दूर तक तो साइरेन-निवासिनी उसका हाथ पकड़े हुये [illegible] से चलती रही; परन्तु पत्थरों ने उसको निर्दयता पूर्वक [illegible] कर डाला। वह सूर्य के प्रकाश की उष्णता से बेहोश [illegible] उसको पीछे छोड़ कर आगे बढ़ा; परन्तु उसने [illegible] "मनुष्यों की इच्छा [illegible] नहीं है," उसने कहा—"मैं [illegible]

उसने अपने हाथ फैलाये। आज पहले-पहल ही उसके थके हुये कपोलों से आँसुओं की धारा बह निकली। धूल-धूसरित होने के कारण उसकी सुहावनी पूँछ के चित्ताकर्षक रंग भद्दे हो गये। उसकी पूँछ सड़क पर पड़ी अपनी कमज़ोरी और परवशता का निदर्शन कर रही थी।

"यूफोरियन," उसने फिर रोते हुये कहा—"यूफोरियन दया करो!"

"दया!" उसने ज़ोर से कहा—"तुमने आज तक यह शब्द कभी नहीं कहा!"

"इसका कारण यही है कि मुझे कभी दुःख नहीं मिला," उसने कहा—"दोस्त, मेरी बात सुनो। मैं इस बात को भलीभाँति समझती हूँ कि मैं तुम्हारे लिये सदा एक बला बनी रहूँगी। इधर मैं भी सदा दुःखी और चिन्तित रहूँगी। स्त्रियों के पैरों को देख कर मुझे उनके प्राप्त करने की कामना परेशान करेगी। इसके अलावा मैं अभी जो सब चीज़ें देखना चाहती थी, उन्हें देख कर मुझे इस समय भय-सा लग रहा है; परन्तु समुद्र तक पहुँचने में, मैं नितान्त असमर्थ हूँ। यदि तुम मुझे समुद्र-तट तक पहुँचा दोगे, तो मैं अपनी क्रूर बहिनों के पास पहुँच जाऊँगी।"

"क्रूर!" यूफोरियन ने ज़ोर से कहा—"यह दूसरा शब्द है जिसको तुम्हारी ज़बान पर मैं पहले-पहल सुन रहा हूँ।"

"अफ़सोस!" उसने विलाप करते हुये कहा—"तुम्हारे द्वारा ही मैं इसका अर्थ समझ सकी हूँ।"

बिना एक शब्द बोले हुये यूफोरियन ने उसे अपने हाथों पर उठा लिया। जिस समय वे लौटे, उस समय साइरेन-निवासिनियों के [illegible] में लहरा रहे थे। वह आँसू बहाती हुई मुस्काने लगी। [illegible]

तक ले आई हूँ, क्या मेरे मित्र, बदले में तुम मुझे अब न ले जा सकोगे ?"

वह उसकी इस प्रार्थना को अस्वीकार न कर सका। वह लौट आया और झुक कर बैठ गया। उसने उसे पीठ पर बैठने के लिये कहा। साइरेन-निवासिनी ने उसके गले के आसपास अपने दोनों हाथ डाल दिये और एक हाथ से दूसरे हाथ को खूब कस कर पकड़ लिया। वह खड़ा हो गया और मार्ग पर चलने लगा। उसकी लम्बी पूँछ का छोर सड़क की धूल झाड़ता हुआ चला जा रहा था।

उसके बोझ से दबने के कारण यूफोरियन को पसीना आ गया। उसे गुस्सा भी आ गया। वह बड़बड़ाने लगा। वह विचारने लगा कि वह इस स्त्री के साथ अब क्या करे। यह उसकी स्त्री रूपिणी मछली है, जो मानव-भूमि पर उसके साथ चली आई है। निदान्, उसने असभ्य तरीके से ज़ोर से उसके हाथ अपनी गरदन से अलग कर दिये। वह मुँह के बल सड़क पर औंधी गिर पड़ी। उसको छोड़ कर वह तेज़ी के साथ शहर की ओर बढ़ चला।

"यूफोरियन ! यूफोरियन !" उसने विलाप करते हुये पुकारा। वह ऐसा दर्द भरा चीत्कार था कि उस पर ज़बर्दस्त प्रभाव पड़ा। वह फिर लौट आया—"ज़रा सबर तो करो," उसने कहा—"मैं तुम्हारे लिये शहर से गाड़ी लाने के लिये जा रहा हूँ।"

"नहीं, नहीं," उसने रोते हुये कहा—"मैं इस बात को जानती हूँ कि तुम कभी भी वापस न लौटोगे। तुम मुझ पर ज़रा भी प्रेम नहीं करते हो, क्योंकि मैं सब तरह स्त्री के समान नहीं हूँ। मुझको धन्यवाद है कि तुम अभी तक जीवित हो। इतना होने पर भी, तुम मेरी मृत्यु के कारण बन रहे हो। तुम इस बात को भली-भाँति जानते हो कि मनुष्य से प्रेम करने के अपराध पर ही ईश्वर मेरे अमरत्व को मुझसे छीन कर मुझे दण्ड देगा। मैं समुद्र-फेन बन जाऊँगी।"

उसने अपने हाथ फैलाये। आज पहले-पहल ही उसके थके हुये कपोलों से आँसुओं की धारा बह निकली। धूल-धूसरित होने के कारण उसकी सुहावनी पूँछ के चित्ताकर्षक रंग भद्दे हो गये। उसकी पूँछ सड़क पर पड़ी अपनी कमज़ोरी और परवशता का निदर्शन कर रही थी।

"यूफ़ोरियन," उसने फिर रोते हुये कहा—"यूफ़ोरियन दया करो !"

"दया !" उसने ज़ोर से कहा—"तुमने आज तक यह शब्द कभी नहीं कहा ?"

"इसका कारण यही है कि मुझे कभी दुःख नहीं मिला," उसने कहा—"दोस्त, मेरी बात सुनो। मैं इस बात को भलीभाँति समझती हूँ कि मैं तुम्हारे लिये सदा एक बला बनी रहूँगी। इधर मैं भी सदा दुःखी और चिन्तित रहूँगी। स्त्रियों के पैरों को देख कर मुझे उनके प्राप्त करने की कामना परेशान करेगी। इसके अलावा मैं अभी जो सब चीज़ें देखना चाहती थी, उन्हें देख कर मुझे इस समय भय-सा लग रहा है; परन्तु समुद्र तक पहुँचने में, मैं नितान्त असमर्थ हूँ। यदि तुम मुझे समुद्र-तट तक पहुँचा दोगे, तो मैं अपनी क्रूर बहिनों के पास पहुँच जाऊँगी।"

"क्रूर !" यूफ़ोरियन ने ज़ोर से कहा—"यह दूसरा शब्द है जिसको तुम्हारी ज़बान पर मैं पहले-पहल सुन रहा हूँ।"

"अफ़सोस !" उसने विलाप करते हुये कहा—"तुम्हारे [illegible] ही मैं इसका अर्थ समझ सकी हूँ।"

बिना एक शब्द बोले हुये यूफ़ोरियन ने उसे अपने हाथों पर उठा लिया। जिस समय वे लौटे, उस समय लाइरेन-निवासिनों के पैर [illegible] में लहरा रहे थे। वह [illegible] हुई मुस्कानें [illegible]। [illegible]

उसने अपने हाथ फैलाये। आज पहले-पहल ही उसके थके हुये कपोलों से आँसुओं की धारा बह निकली। धूल-धूसरित होने के कारण उसकी सुहावनी पूँछ के चित्ताकर्षक रंग भद्दे हो गये। उसकी पूँछ सड़क पर पड़ी अपनी कमज़ोरी और परवशता का निदर्शन कर रही थी।

"यूफोरियन," उसने फिर रोते हुये कहा—"यूफोरियन दया करो!"

"दया!" उसने ज़ोर से कहा—"तुमने आज तक यह शब्द कभी नहीं कहा?"

"इसका कारण यही है कि मुझे कभी दुःख नहीं मिला," उसने कहा—"दोस्त, मेरी बात सुनो। मैं इस बात को भलीभाँति समझती हूँ कि मैं तुम्हारे लिये सदा एक बला बनी रहूँगी। इधर मैं भी सदा दुःखी और चिन्तित रहूँगी। स्त्रियों के पैरों को देख कर मुझे उनके घात करने की कामना परेशान करेगी। इसके अलावा मैं अभी जो सब चीज़ें देखना चाहती थी, उन्हें देख कर मुझे इस समय भय-सा लग रहा है; परन्तु समुद्र तक पहुँचने में, मैं नितान्त असमर्थ हूँ। यदि तुम मुझे समुद्र-तट तक पहुँचा दोगे, तो मैं अपनी क्रूर बहिनों के पास पहुँच जाऊँगी।"

"क्रूर!" यूफोरियन ने ज़ोर से कहा—"यह दूसरा शब्द है जिसको तुम्हारी ज़बान पर मैं पहले-पहल सुन रहा हूँ।"

"अफ़सोस!" उसने विलाप करते हुये कहा—"तुम्हारे द्वारा ही मैं इसका अर्थ समझ सकी हूँ।"

बिना एक शब्द बोले हुये यूफोरियन ने उसे अपने कंधों पर उठा लिया। जिस समय वे लौटे, उस समय [illegible] के [illegible] ने लहरा रहे थे। वह आँसू बहाती हुई मुस्काने लगी। इसके [illegible]

इतनी बारीक आवाज़ में रोने लगी कि उसका सारा संकल्प नष्ट-सा होता हुआ दिखलाई पड़ने लगा। आखिर उसने उसे धीरे से समुद्र-तट पर उतार दिया। उसने उसे लहरों से काफ़ी दूरी पर उतारने में अपनी सावधानी बतलाई थी।

"बन्दे, मेरे दोस्त," उसने कहा।

उसने दीर्घ श्वास ली—"काश! तुम्हारे पैर होते!"

"हाँ," उसने कहा—"मेरे पैर नहीं हैं और मुझे इस जल-पूर्ण समुद्र में उनकी ज़रा भी आवश्यकता न पड़ेगी। मैं सब कुछ भूल जाने की कोशिश करूँगी और अपनी बहिनों के समान फिर जीवन व्यतीत करूँगी। यदि कभी मुझे ख्याल आया, तो मुझे तुम्हारी मुलाक़ात के ख्याल से बड़ा दुःख होगा और मुझे तुमसे इतनी बातों के सीख लेने का भी बड़ा दुःख होगा; परन्तु क्या मैं भूल जाने में असमर्थ हो सकूँगी? अफ़सोस! मुझे दुःख है कि इस समय मैं सब के द्वारा परित्यक्ता और जाति-भ्रष्टा एक नगण्य-सी साइरेन-निवासिनी के अतिरिक्त और कुछ नहीं हूँ।"

[illegible] ओर से रोने लगा—"तुम्हारी जो कुछ भी इच्छा हो, वह बन जाओ," उसने कहा, "परन्तु मैं अपने लिये भी इतना कह सकता हूँ कि मैं तुमको प्यार करता हूँ और तुमको यहाँ से अकेली न जाने दूँगा। तुमको मुझे भी अपने साथ ले चलना होगा। इधर जो जो कुछ भी इच्छा होगी, हम दोनों वही बन जायेंगे। आओ! हम [illegible] पानी में साथ-साथ चलें।"

× × ×

इसमें ज़रा भी शक नहीं कि वह मनुष्य इस [illegible] कर गुज़रता, यदि इसी समय दयालु [illegible] होता [illegible] आकर उपस्थित न हो जाती।

तुमको मैं बहुत चाहती हूँ," उसने कहा, "और अपने अन्तस्तल
[illegible]री भलाई की इच्छुक हूँ। ल्यूकोसिया, तुम उस मनुष्य पर
रही हो, जिन लोगों ने मेरे पुत्र एचिलीज़ के साथ युद्ध किया
और यूफोरियन तुमने मेरी एक समुद्र की पुत्री के साथ उस समय
दर्शित की है, जबकि तुम अपनी सबसे प्यारी इच्छा को पूर्ण
कते थे। तुम दोनों में से प्रत्येक ने एक दूसरे को ऊँचा उठाया है।
ज्ञान की वृद्धि की है और दूसरे ने दया के भाव परिपुष्ट किये
तुमको किसी न किसी प्रकार से पुरस्कृत करना चाहती हूँ।
सिया, तुमको अकेली घर भेजने के पहिले आज तक जो कुछ भी
सीखा है, उसकी स्मृति तुमसे मैं छीन लेती हूँ। ऐसा न करने से
वेदना सदा बढ़ती रहेगी। यूफोरियन, मैं तुमको डालफिन
फीट की मछली) के समान पंख और शरीर प्रदान करती हूँ।
मनुष्य सुलभ स्मृति और शक्ति तुम में वर्तमान रहेगी, जिससे
ल्यूकोसिया के साथ विशाल समुद्र में सुख-पूर्वक जीवन व्यतीत
कोगे; परन्तु मैं तुमको उस प्रकार का सुख प्रदान करना चाहती हूँ
कि तुम दोनों इस समय सोच रहे हो। मेरी दुलारी ल्यूकोसिया,
तुम अपने अमरत्व का परित्याग करने के लिये तैयार हो, जिससे
उसके साथ जीवन व्यतीत कर सको ?"

"अवश्य," साइरेन-निवासिनी ने कहा—"अमरत्व का सुख भोगने
मे ज़रा भी विचार करने की आवश्यकता नहीं।"

"आवश्यकता नहीं के लिये धन्यवाद" थेटिस ने कहा।

"ओफ़ !" ल्यूकोसिया ने चौंक कर कहा—"मेरा मतलब [illegible]
। मैं अपने समान एक छोटी-सी देवी के सम्बन्ध में विचार कर
[illegible]।"

"ऐसा न सोचो, पुत्री ! अब स्पष्ट रूप से समझ में आ गया कि
मरणशील बनना स्वीकार है।"

माता

लेखक—राबर्ट शेफ़र

जैक से कब और कैसे मेरी मित्रता हुई, यह सब यहाँ कहने की
कोई आवश्यकता नहीं है। मेरा संग उसे प्रिय था, कदाचित् इसलिये
कि मेरा व्यवहार सरल था, हृदय खोल कर बात करता था, मेरे हृदय
और वाणी में कोई अन्तर नहीं था। किन्तु उसकी बातें अपने ढंग से
अनुभव का वर्णन ही होतीं। उसने अनेक देशों का भ्रमण किया
था। उससे सुनता केवल उन देशों की बातें—उसके तीक्ष्ण निरीक्षण
का विचित्र वर्णन। पर उसके हृदय की बातें कभी नहीं जान पाया।
वह अपने विषय में बिल्कुल मौन रहता। वह मौनता कभी भी नहीं
टूटती। हम दोनो मानो एक दूसरे की सम्पूर्णता थे। हम दोनो में एक
अखंड व्यक्तित्व का पूर्ण आभास खिल उठता। महायुद्ध (१९१४)
के आरंभ के बाद से हम लोगों में और साक्षात् नहीं हो पाया। केवल
इतना सुना था कि वह जर्मन भाषा अच्छी तरह जानता है, इसलिये
दुभाषिये के पद पर नियुक्त हुआ है। इसके बाद पिछले साल के
अन्तिम दिनों में उससे भेंट हुई। तब से वह सरकारी काम से पेरिस में
रहने लगा, इसलिये फिर हम लोगों की मित्रता की प्रतिष्ठा हुई।
इस बीच हम लोगों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ था। उनके
नाना अनुभव के कौतूहलकारी किस्सों से मैं बहुत ही सुख उपभोग
करता था। मैं युद्ध में शामिल नहीं हो सका था, इस की तरह जर्मान
में जग आई कर युद्ध के विषय में केवल बेकाम की बातचीत में
पल्लवित हो उठा था। मित्र के चेहरे पर विषाद की गहरी रेखायें रहीं।
वह जिस पद पर नियुक्त हुआ था, उसने उसके मुख पर इस तरह की

करना हमारा कर्तव्य है। आंद्रे, अपना पता मुझे दो। आज रात को तुम जेल में सोओगे, मैं वचन देता हूँ।"

"आप प्रतिज्ञा करते हैं?" आंद्रे ने किञ्चित् कम्पित स्वर में कहा।

"हाँ।"

आंद्रे की आँखों में कृतज्ञता के आँसू थे। लार्डीलन ने हाथ बढ़ाते हुये कहा, "आंद्रे, जाओ अपनी प्रेमिका के पास। उससे कह देना, लार्डीलन और ऐना भी तुम्हारी तरह अब सुखी हैं।"

आंद्रे कुछ कह नहीं पाया। उसका गला भर आया था।

लार्डीलन फिर बोला, "मनुष्यता कोई पुरस्कार नहीं चाहती।" फिर उसने ऐना को हृदय से लगा कर कहा, "कौन जाने हम लोगों की बारी फाँसी के लिये कब आ खड़ी हो! आओ, इस सुखद अवसर पर हम लोग कुछ खायें। आंद्रे, तुम भी बैठो!"

आंद्रे अब ख़ूब प्रसन्न था। शाम को लूसी, और कल के प्रभात में साथ-साथ फाँसी...

वह तीन दिन और तीन रातों बीमार रहा। बगदाद के समस्त कवियों में से चौदह संलग्नता से उसकी निगरानी करते रहे; परन्तु उनको, अपने अन्तस्तल में वह अधिक लम्बा प्रतीत होता था। इसी समय, मकान के बाहर, वृद्ध कवि की मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुये, समाचार एकत्रित करने वाले मनुष्य उपस्थित थे। ऐसा प्रबन्ध किया गया था कि कवि की मृत्यु का समाचार सैकड़ो भाषाओं में लिखा जावे और इस प्रकार वह समस्त बग़दाद के कोने-कोने में पहुँचा दिया जाय। समय व्यतीत करने के लिये, वे सब अपनी सुन्दर तम्बाकू, सिगरेट में लपेट कर पिया करते थे। कई बार उन लोगों ने दरवाज़े खटखटा कर पूछा :

"इस समय क्या हालत है?" लोगों की इस हरकत से वृद्धा ज़ोरा आजिज़ आ गई थी। अब उसने दरवाज़ा खोलना बन्द कर दिया। इनमें से बहुत से आदमियों ने बे-सब्री अथवा रुपयों के लालच में, इस बात की सूचना दे दी थी कि फिरदौसी का स्वर्गवास हो गया। बच्चे हस्तलिखित समाचार-पत्रों के बड़े-बड़े पुलिन्दों को अपनी बग़ल में दबाये हुये, सड़कों पर चिल्लाने लगे, "फिरदौसी की मृत्यु।" और जिन भले फरासीसियों ने इन समाचार-पत्रों को खरीदा और पढ़ा, तो उन्हें पता चला कि उनके साथ विश्वासघात किया गया है। वे लोग मरण-शय्या पर पड़े हुये कवि की ओर खिन्नता के भाव प्रदर्शित करने लगे। चौथे दिन सूर्योदय के समय चौदह कवियों में से सब से वृद्ध कवि ने दरवाज़ा खोला और सब से ऊँची सीढ़ी पर खड़े होकर बड़े ज़ोर से चिल्लाया—"वह मर गया।"

"आखिरकार!" प्रतीक्षा करते हुये लोगों ने कहा।

(२)

इसके बाद [illegible]

[illegible]

झगड़ा उत्पन्न हो गया कि फ़िरदौसी की अन्त्येष्टि के उपलक्ष्य में कौन सब से सुन्दर माला समर्पित करेगी। उन लोगों ने उपवनों से गुलाब के फूलों का चयन कराया, जिनका रंग बड़ा मनोमोहक था और जिनकी सुगन्ध बग़दाद के आस-पास फैली हुई थी। ऐसा प्रतीत होता था कि समस्त भूमंडल के बसन्त-कालीन पुष्प, जिनकी प्रशंसा का वर्णन कवि ने बड़ी कुशलता से किया था, कवि के शरीर पर बरसा दिये जायँगे।

(३)

प्रत्येक व्यक्ति फ़िरदौसी से परिचित होने के गौरव का दावा करता था। साधारण व्यक्ति भी समाचार-पत्रों में उससे घनिष्ठता रखने का दम भरते थे। वे उसके गुप्त जीवन का विस्तृत वर्णन करते और उसके मज़ाकों का स्मरण दिलाते थे। इस बात को देख कर आश्चर्य होता था कि एकान्त-सेवी मनुष्य के इतने अधिक मित्र थे। अन्यान्य पुरुष, प्रतिष्ठित जान पड़ने के लिये, अन्त्येष्टि के प्रबन्ध में लगे हुये थे। वे गम्भीर मुद्रा से सर्वत्र घूम रहे थे। मृत पुरुष के मकान के दरवाज़े पर एक टेबिल पर एक बड़ा रजिस्टर रखा हुआ था और सब लोगों ने अपनी-अपनी इच्छानुसार उसके प्रति अपने हृदयोद्गार और प्रशंसात्मक शब्द लिख कर उसमें अपने हस्ताक्षर कर दिये थे।

कवियों तथा विद्वानों ने उसकी प्रशंसा की; परन्तु कुछ लोगों ने उसे इतना महान्, इतना निराला, इतना असाधारण, इतना भिन्न और अपनी शक्तियों से इतना अज्ञात बना दिया था कि किसी को बुरा नहीं जान पड़ता था। इस महान् पुरुष की प्रशंसा करते हुये उसके प्रशंसक स्वयं अपने को भी महान् समझ रहे थे। उन लोगों के कथन का यह आशय था, "फ़िरदौसी दिमाग़ [illegible] वाला पुरुष नहीं था; परन्तु हम लोग—"

बनवाई थीं और जिन फूल के व्यापारियों ने उन्हें बनाया था, उनके बीच में वाद-विवाद होने लगा।

"वे अन्त्येष्टि-संस्कार-दिवस के लिये बनवाई गई थीं। हम इनके दाम न देंगे।"

"संस्कार-दिवस के स्थगित किये जाने में हमारा क्या दोष है?" फूल के व्यापारियों ने दलील की। वे आपस में गाली-गलौज देने और लड़ने लगे। उन लोगों ने मालाओं के टुकड़े टुकड़े कर डाले और कई दिनों तक मुरझाये हुये फूलों के ढेर बग़दाद की नालियों में पड़े सड़ते रहे।

असन्तोष अधिकाधिक बढ़ने लगा। समाचार-पत्रों में फिरदौसी के अतिरिक्त अन्य कोई दूसरा समाचार प्रकाशित ही न होता था। जो लेखक अन्यान्य विषयों पर लेख लिखा करते थे। उनको फिरदौसी के चरित्रों का चित्रण करके, यश कमाने का सुलभ साधन मिल गया। इसी समय दो या तीन प्रतिष्ठित पुरुषों की मृत्यु हुई। पत्रों ने इन घटनाओं पर कोई ध्यान ही न दिया। उनके परिवार के लोग फिरदौसी से इसलिये रुष्ट हो गये कि उसने सर्वसाधारण का समस्त ध्यान अपनी ही ओर आकर्षित कर लिया था। सारांश में, ये तैयारियाँ, यह उत्पात, फिरदौसी के चित्र बेचनेवालों की चिल्लाहट और प्रान्त प्रान्त से आये हुये प्रतिनिधियों का शोरगुल शान्ति-प्रिय शहर-निवासियों को बहुत कष्ट देने लगा। वे लोग मन में इस आन्दोलनकारी शव के प्रति घृणा करने लगे, जिसके कारण उनको [illegible] रहा था।

(५)

इसी समय बग़दाद को [illegible] नामक [illegible] घटना [illegible]। एक [illegible] को एक परिवार [illegible] और [illegible], और [illegible]

वह मृत पुरुष के बिस्तर के बग़ल में कुरसी पर बैठी हुई ग़रीबों के लिये कपड़े सीती रही। उसको कहीं नींद न आ जावे, इसलिये वह फ़िरदौसी के छोटे-छोटे गाने भी गाती जाती थी। जब वह धीरे-धीरे गाती थी, ऐसा प्रतीत होता था, मानो गुँथी हुई डाढ़ी के अन्दर फ़िरदौसी मुस्करा रहा हो।

मेपल सड़क की आश्चर्यजनक घटना ने अभी भी लोगों का ध्यान उसी ओर आकृष्ट कर रखा था। लोग कहा करते थे कि खूनी का पता लग गया है। मूर्ख और चकित लोगों का समुदाय घर के आस-पास दिन रात खड़ा रहता था। जिन प्रान्तीय अधिकारियों की नियुक्ति, कवि की अन्त्येष्टि का प्रबन्ध करने के लिये की गई थी, वे अपना समय शराब-खानो और विलास ग्रहो में व्यतीत कर रहे थे। उनको सड़को पर असहाय दशा में देख कर सन्तरी लोग, उन्हें उठा कर ले जाते थे। उनको इस बात का ज़रा भी ध्यान नहीं था कि वे लोग शहर, किसकाम के लिये आये थे।

(६)

निदान्, दिन निश्चित किया गया। शव का जुलूस रवाना हुआ और बेहद गरमी मालूम पड़ने लगी। ज़ोरा और ज़ेलूलवे एक साथ गई। ताबूत पर केवल दो मालायें थीं—एक गुलाब की और दूसरी बनफ़शा की। दो औरतो के पीछे, बादशाह के द्वारा भेजा हुआ एक छोटा अफ़सर पैदल चल रहा था। उसके पीछे पचास फरासीसी एक साथ चल रहे थे। सूरज की तेज़ गरमी के कारण उनके मुंह लाल हो गये थे; बदन से पसीना निकल रहा था; उनकी जीभ बाहर निकल रही थी और उनके हाथ नीचे लटक रहे थे। उन में से प्रत्येक मनुष्य को क़ब्रस्तान पर मृतात्मा के सम्बन्ध में व्याख्यान देना था। वे लोग चलते-चलते अपने दस्तावेज़ों के काग़ज़ों से अपने को हवा कर रहे थे। बहुत से आदमी चुपचाप सड़क छोड़ कर शराबखाने में [illegible]

ज़ारा ने गरम-गरम आँसू बहाये। ज़ेलूलबे सिसक कर रोने लगी। बादशाह का अफ़सर ख़ूबसूरत लड़की के पास पहुँच कर कहने लगा—"इसमें कोई शक नहीं कि आप फिरदौसी की रिश्तेदार हैं।"

"नहीं महाशय, परन्तु मैं उनकी पड़ोसिन थी और मैंने तीन रातों बैठ कर उनके शव की निगरानी की है।"

"मुझे इस बात से ताज्जुब नहीं होता," उसने जवाब दिया—"जब तुम इतनी ख़ूबसूरत हो, तब तुम्हें दयालु भी होना चाहिये। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि अब तुम न रोओ। इन सुन्दर आँखों को अब सूखने भी दो।"

ख़ूबसूरत अफ़सर इस प्रकार कुछ समय तक बात करता रहा। इसके बाद ज़ेलूलबे की ओर झुक कर उसने उसके सुन्दर केशों का चुम्बन ले लिया। धीरे-धीरे लड़की का रोना बन्द हो गया और उसकी आँखें सूख गईं। उसने ख़ूबसूरत अफ़सर का हाथ पकड़ लिया और वे दोनों साथ-साथ शहर को वापस आये। जिस समय वे दरबार के बड़े फाटक के नीचे से निकले, उस समय ज़ेलूलबे की हँसी का शब्द एक पक्षी के शब्द के समान स्पष्ट सुनाई पड़ा। फिरदौसी अद्वितीय विद्वान् और असाधारण दयालु था। वह स्वर्ग से दयापूर्ण नेत्रों द्वारा मानो इसी प्रणय-शील दम्पति की ओर निहारने लगा। इस समय केवल बूढ़ा दाओ, घुटने टेक कर अपने मालिक की क़ब्र पर रो रहा था।

समाप्त